।।ओ३म्।। • प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं प्रेषित

वैदिक संसार

हिन्दी मासिक

• वर्ष : ८ • अंक : ८ • जून २०१९ • मूल्य : २५/-

स्वस्थ, सशक्त, परिपक्व और राष्ट्रवाद को समर्पित

जन-जन का आदेश : जनादेश

मोदीजी! आप

इस धरा की मूल गौरवमयी संस्कृति की,
जीवन्तता की आशा की किरण हो।
बहुत बँट लिए हम मत-मजहब के कैदखानों में,
धन लुटा, मान लुटा, लुटी मानवता बीच बाजारों में।
नहीं बँटेंगे अब हम, वसुधा भर को एक परिवार बना दो,
मानव मात्र का वैदिक सिद्धान्त सबको दिखला दो।
हमें पुनः हमारा विश्व गुरु का गौरव दिलवा दो,
चक्रवर्ती शासनाध्यक्ष का मान हमें दिलवा दो।
एक तुम्हीं हो, जो यह सब कर सकते हो,
यह हमारी नहीं, जन-जन की पुकार है...।

समस्त वेदनिष्ठजनों को
श्रावणी पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएँ
आओ! इस पर्व पर
कृण्वन्तो
विश्वमार्यम्
का व्रत लें

सृष्टि रचना–विज्ञान

सौजन्य : मोहन लाल, आर्य समाज रावतभाटा वाया कोटा, पिन-323307 (राज.) मो. 07688806844

कल्पना-चित्रण : ओम प्रकाश आर्य, आर्य समाज रावतभाटा वाया कोटा (राज.) मो. 09462313797

तत्वावधान : अर्जुन देव चड्ढा (प्रधान) मो. 09414187428, नरदेव आर्य (उपप्रधान क्षेत्र रावतभाटा) मो. 09460742642, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा (राज.)

वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित इस प्रकार के ५० चित्र प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें।

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई–एमपीएचआईएन
२०१२/४५०६९
डाक पंजीयन : एमपी/आईडीसी/ २०१८–२०
वर्ष : ८, अंक : ०८
अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ जून, २०१९
आर्ष तिथि : आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी
सृष्टि सम्वत् : १,९७,२९,४९,१२१
शक सम्वत् : १९४१
विक्रम सम्वत् : २०७६, दयानन्दाब्द : १९६

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर ०९४२५०६९४९१
(सायं ६ बजे से प्रातः ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इन्दौर (म.प्र.)

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इन्दौर–१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष)	२५,०००/–
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२,५००/–
पंचवार्षिक सहयोग :	१,१००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	७००/–
वार्षिक सहयोग	३००/–
एक प्रति	२५/–
अन्य सहयोग	स्वैच्छानुसार

बैंक खाता धारक– वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक
शाखा : ओल्ड पलासिया, इन्दौर
चालू खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएससी : एसबीआईएन०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : 'वैदिक संसार'

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
वेद मन्त्र : भावार्थ एवं वैदिक संसार के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व–दिवस, जयन्तियाँ–पुण्यतिथियाँ	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
स्वस्थ, सशक्त, परिपक्व व राष्ट्रवाद को...	सम्पादकीय	०५
हमारी महान् विभूतियाँ– भगवतीचरण बोहरा	डोंगरलाल पुरुषार्थी	११
उधमसिंह	पं. नन्दलाल निर्भय	१३
आ गया मोदी, आ गया मोदी	खुशहालचन्द्र आर्य	१३
वेदोत्पत्ति विषय	देशराज आर्य	१४
श्रावणी पर्व क्यों मनाएँ?	महात्मा चैतन्य स्वामी	१५
सैद्धान्तिक चर्चा–४, आर्ष बोध–१४	पं. कमलेशकुमार अग्निहोत्री	१७
वैदिक साहित्य की विशेषताएँ	मोहनलाल दशोरा	१९
राखी का त्यौहार	ज्योत्स्ना निधि	१९
वेदवाणी : मुझे बुराइयों से मुक्त तथा सद्गुणों से...	आ. रामगोपाल सैनी	२०
ब्रह्म का स्वरूप	मृदुला अग्रवाल	२१
प्राणों से प्रिय प्रभु	ओमप्रकाश आर्य	२२
वेद ज्ञान और वेद की सात मर्यादाएँ	डॉ. सत्यदेव सिंह	२३
ऋषि दयानन्द सरस्वती भाष्यानुसार : ऋग्वेद...	पं. सत्यपाल शर्मार्य	२४
वेद विषयक शोध परक चिन्तन व जिज्ञासा...	मोहनलाल आर्य	२५
ज्योतिष पाठ : ५, ऋतुओं का कारक सूर्य या...	आ. दार्शनेय लोकेश	२७
भारतीय लोकतन्त्र में राजनैतिक दलों की भूमिका	डॉ. लक्ष्मी निधि	२८
निर्वाचन वक्र और सुदर्शन चक्र	देवनारायण भारद्वाज	२९
अन्धकार युग– सुधार युग– जागरण युग....	पं.उम्मेदसिंह विशारद	३१
जागो! देश को समृद्ध बनाएँ, जनसंख्या त्रासदी...	मोहनलाल कोचर	३३
समस्त समस्याओं का प्रमुख कारण : जनसंख्या...	विनोद भाई वामजा	३३
दि. ११–७–२०१९ : विश्व जनसंख्या दिवस	इन्द्रदेव गुलाटी	३५
आप बीती : पाठ ईमानदारी का	ओमप्रकाश बजाज	३६
सुख आधार : गृहस्थ आश्रम	डॉ. अशोक आर्य	३७
यात्रा वृतान्त : परम पिता परमात्मा की असीम...	सुखदेव शर्मा	३८
शोक सूचना	संकलित	४२

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् असग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत। अजोषा वृषभं पतिम्।।ऋ.१.९.४

भावार्थ : जिस ईश्वर ने प्रकाश किए हुए वेदों से जैसे अपने-अपने स्वभाव, गुण और कर्म प्रकट किए हैं। वैसे ही वे सब लोगों को जानने योग्य हैं, क्योंकि ईश्वर के सत्य स्वभाव के साथ अनन्तगुण और कर्म हैं, उनको हम अल्पज्ञ लोग अपने सामर्थ्य से जानने को समर्थ नहीं हो सकते। तथा जैसे हम लोग अपने-अपने स्वभाव, गुण और कर्मों को जानते हैं, वैसे औरों को उनका यथावत् जानना कठिन होता है, इसी प्रकार सब विद्वान् मनुष्यों को वेदवाणी के बिना ईश्वर आदि पदार्थों का यथावत् जानना कठिन होता है। इसलिए प्रयत्न से वेदों को जानके उनके द्वारा सब पदार्थों से उपकार लेना तथा उसी ईश्वर को अपना इष्टदेव और पालन करने हारा मानना चाहिए।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के माह जुलाई २०१९ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

१० गते नभस् मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी २०७६	१ जुलाई	मृगशिरा' २९:१६
१३ गते नभस् मास	१९४१ शक सं.	श्रावण शुक्ल द्वितीया २०७६	४ जुलाई	स्वामी विवेकानन्द पुण्यतिथि
१५ गते नभस् मास	१९४१ शक सं.	श्रावण शुक्ल चतुर्थी २०७६	६ जुलाई	मघा-२९.०१, पं. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जयन्ति
१७ गते नभस् मास	१९४१ शक सं.	श्रावण शुक्ल षष्ठी २०७६	८ जुलाई	क्षयतिथि सप्तमी- २९:२७
१८ गते नभस् मास	१९४१ शक सं.	श्रावण शुक्ल अष्टमी २०७६	९ जुलाई	हस्त- २८.४६, चित्रा-२९:२६
२२ गते नभस् मास	१९४१ शक सं.	श्रावण शुक्ल द्वादशी २०७६	१३ जुलाई	बुद्ध द्वादशी
२४ गते नभस् मास	१९४१ शक सं.	श्रावण शुक्ल चतुर्दशी २०७६	१५ जुलाई	पूर्वाषाढ़-२८.५५
२५ गते नभस् मास	१९४१ शक सं.	श्रावण शुक्ल पूर्णिमा २०७६	१६ जुलाई	यज्ञोपवित परिवर्तन दिवस, वेद प्रचार सप्ताह प्रारम्भ, रक्षा बन्धन (अभिजीत ११:५९ से १२:५४ तक)
२७ गते नभस् मास	१९४१ शक सं.	श्रावण कृष्ण द्वितीया २०७६	१८ जुलाई	पञ्चक प्रारम्भ- २३:५४
२८ गते नभस् मास	१९४१ शक सं.	श्रावण कृष्ण तृतीया २०७६	१९ जुलाई	मङ्गल पाण्डे जयन्ति
०१ गते नभस्य मास	१९४१ शक सं.	श्रावण कृष्ण षष्ठी २०७६	२३ जुलाई	सिंह सक्रान्ति- ८:२१, गुरु हरकिशन एवं चन्द्रशेखर आजाद तथा बाल गंगाधर तिलक जयन्ति
०३ गते नभस्य मास	१९४१ शक सं.	श्रावण कृष्ण अष्टमी २०७६	२५ जुलाई	पञ्चक समाप्त- ११:२८
०५ गते नभस्य मास	१९४१ शक सं.	श्रावण कृष्ण दशमी२०७६	२७ जुलाई	डॉ. ए.पी.जे. कलाम पुण्यतिथि
०७ गते नभस्य मास	१९४१ शक सं.	श्रावण कृष्ण द्वादशी २०७६	२९ जुलाई	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर पुण्यतिथि, राष्ट्रीय खेल दिवस
०९ गते नभस्य मास	१९४१ शक सं.	श्रावण कृष्ण चतुर्दशी २०७६	३१ जुलाई	मुंशी प्रेमचन्द जयन्ति, सरदार उधमसिंह पुण्यतिथि

नवीन पंचांग छप चुका है, अतिशीघ्र मँगवाएँ, लाभ उठाएँ

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

किसी भी शंका-समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें

अन्य स्त्रोतों से प्राप्त जुलाई माह के कुछ विशेष दिवस

०१ डॉक्टर्स एवं सी.ए. दिवस
११ विश्व जनसंख्या दिवस
१६-१७ खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण
१९ डॉ. खूबचन्द बघेल जन्म दिवस
२५ स्वामी करपात्रीजी महाराज जयन्ति
आर्य मा. आत्माराम अमृतसरी पुण्यतिथि
२९ वैदिक भवन सम्राट, ऋषि भक्त मेहता अमीचन्द पुण्यतिथि
३१ आर्य आचार्य रामदेव जयन्ति
पार्श्व गायक मोहम्मद रफी पुण्यतिथि

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि-मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्-साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

सम्पादकीय

स्वस्थ, सशक्त, परिपक्व व राष्ट्रवाद को समर्पित
जन-जन का आदेश : जनादेश

तेईस मई २०१९ का दिवस वैश्विक लोकतान्त्रिक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जाने वाला दिवस है। इस दिवस पर भारतीय लोकतन्त्र के आधार स्तम्भ लोकसभा की १७वीं पारी के गठन के लिए सात चरणों में ५४२ संसदीय क्षेत्रों के सम्पन्न निर्वाचन परिणामों ने स्वस्थ, सशक्त, परिपक्व एवं एकमात्र राष्ट्रवाद को समर्पित जनादेश दिया है। लोकतान्त्रिक जगत् के सबसे बड़े लोकतन्त्र भारत देश में पूर्ण रूपेण निष्पक्ष, पारदर्शी उपरोक्त जनादेश से भारत की गौरवमयी महानता और मानवीय मूल्यों को समर्पित छवि की पुष्टि होकर उसमें और वृद्धि हुई है तथा सामान्य मानव का लोकतन्त्र में विश्वास दृढ़ होकर उसमें उत्साह का संचार हुआ है।

उपरोक्त निर्वाचन तथा जनादेश अनेक महत्वपूर्ण स्तर पर लोकतान्त्रिक व्यवस्था के महत्व को पीछे छोड़कर उपजी विसंगतियों पर विराम लगाकर भारत के सुनहरे भविष्य की दशा-दिशा के निर्णायक आधार सिद्ध हुए हैं।

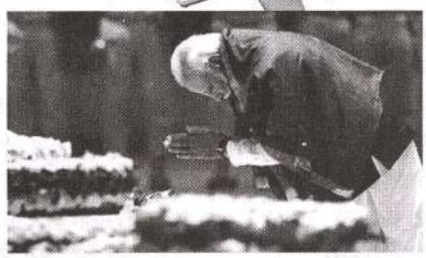

पूर्णरूपेण लोकतान्त्रिक व्यवस्था के स्थान पर व्यक्ति केन्द्रित राजनीति, व्यक्ति केन्द्रित राजनीति के पश्चात् परिवारवाद, परिवारवाद से आगे बढ़कर वंशवाद, वंशवाद से आगे बढ़कर जातिवाद, जातिवाद से आगे बढ़कर मत-पंथ-सम्प्रदायवाद के साथ क्षेत्रवाद तथा भाषावाद की भेंट चढ़ चुकी भारतीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था ने लोकतान्त्रिक व्यवस्था के पवित्र उद्देश्यों पर करारा प्रहार कर स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु किये गये अथक संघर्षों एवं उसके मूल्यों को धूमिल किया है। सामान्य जनमानस हतोत्साहित होकर उससे राष्ट्रवाद कहीं दूर छिटक गया है। वर्तमान में आम व्यक्ति की वेदना इस प्रकार व्यक्त होने लगी थी, यथा- **'गोरे अंग्रेज चले गये, उनके स्थान पर काले अंग्रेज आ गए।'** **'हमें क्या फर्क पड़ता है, कल गैरों के द्वारा छले जा रहे थे आज हमें अपने कहे जाने वाले छल रहे हैं।'**, **'हमें राजनीति से क्या लेना-देना, हमें कोई राजनीति थोड़े ही करनी है, हमें तो अपना कमाना-खाना है।'** आदि-आदि। इस प्रकार के नकारात्मक विचारों के उत्पन्न होने के पश्चात् लोकतन्त्र का सबसे सशक्त शस्त्र **'मत'** (वोट) चन्द रुपयों, शराब की बोतलों, साड़ी-कम्बलों, परिवारवाद, वंशवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद के शूद्र स्वार्थों के चलते तुष्टिकरण तथा अपने-पराये की भेंट चढ़ने लगा। परिणामतः राष्ट्रीय एकता बाधित होकर परस्पर अविश्वास, वैचारिक मतभेद के स्थान पर मनभेद, वैमनस्यता तथा वर्ग संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होने लगी।

१००० वर्षों की परतन्त्रता का दंश हमने मात्र ७२ वर्ष की स्वतन्त्रता में भुला दिया। ऐसा दृष्टिगोचर होने लगा जैसे कि प्रत्येक व्यक्ति ने स्वच्छन्दता को अंगीकार कर लिया हो, हो भी क्यों न **'जैसा राजा वैसी प्रजा'**।

एक समय में चम्बल के बीहड़ों में डकैतों का आतंक पसरा हुआ था। जिन पर अनेक चलचित्रों का निर्माण भी हुआ है। ये डाकू लोग सम्पन्न सेठ-साहूकारों-जमींदारों को लूटते, मार-काट मचाते और अपने क्षेत्र के तथा अपनी जाति के निर्धन लोगों की सहायता कर दो प्रयोजन सिद्ध कर लेते थे। एक तो निर्धनों की सहानुभूति बटोरकर दानवीर, धर्मात्मा, महान् बन जाते थे; दूसरी ओर इन्हें सुरक्षा-सहयोग देने वाले सहयोगी मिल जाते थे। चम्बल के बीहड़ के डकैत तो लगभग समाप्त हो गए, उनके स्थान पर सफेदपोश राजनेता उत्पन्न हो गए। इन्होंने भी सरलतम् मार्ग खोज लिया- चुनाव लड़ो, कुछ रुपया निवेश करो, अपने-पराये का भेद और भय उत्पन्न करो तथा पदासीन होते ही भ्रष्टाचार के द्वारा शासकीय कोष जिसका वास्तविक स्वामी सामान्य जन है, को जी भरकर लूटो और खुले हाथों से अपने परिवार वालों, वंश वालों, जाति वालों, मत-पन्थ-सम्प्रदाय वालों को रेवड़ियाँ बाँटो। इस प्रकार स्वयं तो मजे करो, बगैर किसी व्यय के नायक (मसीहा) बन पूजे भी जाओ तथा पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए अकूत धन-सम्पदा के साथ-साथ राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री, मन्त्री, सांसद, विधायक बनने की कुंजी (चाबी) भी सौंप जाओ। योग्यता हो या न हो, उससे कोई सरोकार नहीं। सामान्य जन के आदर्श राजनेता जब ऐसे होंगे तो सामान्य जन कैसा होगा, सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

स्वतन्त्रता के मात्र ७२ वर्षों में ऐसी स्थिति निर्मित हो गई कि राष्ट्र और राष्ट्रीय मूल्य जाए भाड़ में, सामान्य जन हो अथवा राज्याधिकारी या राजनेता, जिसे जहाँ अवसर प्राप्त हो जाता है, वह सेंध लगाने में पीछे नहीं रहता। वर्तमान समय में कहावत यह बन गई कि **'सद्चरित्र वह है जिसे भ्रष्टाचार का अवसर नहीं मिला'**। भूमि के किसी भाग का नाम राष्ट्र नहीं है, राष्ट्र बनता है राष्ट्रीय मूल्यों से और राष्ट्रीय मूल्यों की जड़ों में संस्कृति होती है, विचारधारा होती है। मूल्यविहीन राजनीति कैसी? मूल्यों की प्राप्ति होगी कहाँ से? उत्तर होगा- धर्म-संस्कृति से। धर्म विहीन राजनीति, मूल्य विहीन ही होगी और मूल्य विहीन राजनीति के तो वही परिणाम होंगे जो सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

एक समय था जब इस धरा को विश्व गुरु का स्थान प्राप्त था और यहाँ चक्रवर्ती शासक होते थे। विश्व गुरु अर्थात् विश्व का पथ प्रदर्शक, चक्रवर्ती शासक अर्थात् शासनाध्यक्षों की समूचे विश्व में स्वीकार्यता। ज्ञान के साथ जब अधिकार का समन्वय होता है तो सृजन होता है, ज्ञान विहीन अधिकार का उपयोग विध्वंस करता है।

महर्षि दयानन्दजी सरस्वती ने तीन सभाओं धर्मार्य सभा, राजार्य सभा तथा विद्यार्य सभा हेतु निर्देशित किया है। धर्मार्य सभा को प्रथम स्थान पर रखा है। अर्थात् जब तक धर्म-अधर्म का ठीक-ठीक ज्ञान नहीं होगा, व्यक्ति कुछ नहीं कर पाएगा और करेगा भी तो लाभ के स्थान पर हानि की सम्भावना अधिक होगी। धर्मार्य सभा के माध्यम से धर्मात्मा जन मानव समाज को मिले।

ऐसे धर्म-अधर्म के ज्ञानी जन जो राज-काज संचालन में रुचि रखते हों, वे राजार्य सभा के माध्यम से राज कार्य संचालन में अपना योगदान देवें।

शास्त्रोक्तानुसार राजा बनने की पात्रता वेद ज्ञानी को होती है। वैदिक युग में वेद ज्ञानी ही राजा तथा राज्याधिकारी बनते थे। जो वेद ज्ञानी होगा वह मानव जीवन के मर्म तथा लक्ष्य के साथ-साथ वैदिक धर्म के प्रमुख सिद्धान्त कर्मफल तथा पुनर्जन्म को जानने-समझने वाला होगा। वह अच्छी तरह जानता-समझता होगा कि परम पिता परमात्मा ने मुझे मेरे पूर्व जन्म के किन्हीं अच्छे कर्मों के कारण मुझे राजकाज संचालन ज्ञान से विहीन अनेक लोगों की सेवा (परोपकार) करने का सुअवसर प्रदान किया है। इस सुअवसर के माध्यम से मैं अनेक दीन-दुखियों के कष्टों को धर्मपूर्वक दूर करने का यत्न करूँ, अनेक निर्धन लोगों के उदर पोषण हेतु आजीविका के साधनों का सृजन करूँ, अनेक रोग ग्रस्त रोगियों के उपचार की व्यवस्था करूँ, अनेक लोगों के लिए ज्ञान प्राप्ति हेतु आवश्यक प्रबन्ध करूँ, कूप-बावड़ी-तालाब आदि का निर्माण कर प्राणी मात्र के लिए पीने के पानी का प्रबन्ध करूँ तथा कृषि के लिए आवश्यक संसाधनों का व्यवस्थापन कर प्राणी मात्र की क्षुधा शान्त करने का पुण्य अर्जित करूँ, सज्जन प्रवृत्ति के लोग निर्भयतापूर्वक, नि:शंक होकर जीवन व्यतीत कर सकें, इस हेतु दुष्ट प्रवृत्ति के दुर्जन-दुराचारियों को न्याय व्यवस्था के माध्यम से दण्डित कर नियन्त्रण में रक्खूँ। इस प्रकार अनेक सर्वजन हितकारी कार्यों को करते हुए मैं पुण्यों को संचित करता हुआ ईश्वर का कृपा पात्र बन मानव जीवन को सफल कर जाऊँ। और यह जो कार्य उसके द्वारा किये जाएँगे, उनमें व्यय होने वाला धन उसे कोई अपने पास से थोड़े ही लगाना है, वह तो जन सामान्य विभिन्न करों के माध्यम से राजकोष में देता ही है, वरन् शासनाध्यक्षों की पूर्ण सुख-सुविधाओं की पूर्ति भी जन सामान्य के धन से होती है। वह तो मात्र समुचित व्यवस्था देने मात्र का अधिकारी होता है। साधनों का वास्तविक स्वामी जन सामान्य ही होता है।

वेदादि शास्त्रों में इन्द्र परमात्मा के नाम के साथ-साथ राजा के लिए भी प्रयुक्त किया गया है। एक प्रकार से राजा परम पिता परमात्मा का प्रतिनिधि होता है। सामान्यजन से राजा का सम्बन्ध प्रजा का होता है। प्रजा अर्थात् सन्तान, राजा-प्रजा अर्थात् पिता-पुत्र। व्यक्ति-व्यक्ति एक समान होते हैं किन्तु गुण-योग्यता तथा कर्मों से व्यक्ति पृथक-पृथक हो जाते हैं। गुण-योग्यता किसने दी? उत्तर होगा- परमात्मा ने। प्रश्न उपस्थित हुआ- परमात्मा ने यह भेदभाव क्यों किया? किसी को कम और किसी को अधिक गुण-योग्यता दे दी? इस प्रश्न का उत्तर होगा- हम अपनी अज्ञानता के कारण परमात्मा की कर्मफल व्यवस्था को नहीं समझ पाए और परमात्मा पर भेदभाव का दोष मढ़ दिया। परमात्मा जीवात्मा के पूर्व जन्म कृत कृत्यों के फलस्वरूप गुण-योग्यता प्रदान करता है। परमात्मा प्रदत्त गुण-योग्यता का सदुपयोग करोगे तो आत्म संतुष्टि तो प्राप्त होगी ही, पुण्य भी अर्जित होगा। स्नेह करने वालों की संख्या में वृद्धि होगी, मान-सम्मान प्राप्त होगा और अच्छे कार्यों का फल इहलोक तथा परलोक दोनों को उत्कृष्टता प्रदान करेगा। उदाहरणार्थ पूर्व जन्म कृत कृत्यों के फलस्वरूप मुख्यमन्त्री बनने का सुअवसर प्राप्त हो गया। इस सुअवसर का सदुपयोग करोगे तो इसी जन्म में अथवा आगामी जीवन में प्रधानमन्त्री बन जाओगे। और सदुपयोग के स्थान पर दुरुपयोग किया तो जनता तो निरीह प्राणी है, किन्तु **परमात्मा न्यायकारी के साथ-साथ सर्वशक्तिमान है। उससे बचकर कहाँ जाओगे?** हो सकता है आगामी जन्म में पशुओं का बड़ा भाई (गधा) बना दे।

वेदानुकूल राजा बनने की व्यवस्था में दोष प्रविष्ट होकर वंशवाद आ गया। राजा का पुत्र राजा बनने लगा। जैसा हम वर्तमान राजनीति में भी देख रहे हैं। जवाहरलाल नेहरू की क्या उपलब्धि थी? यही न कि वे मोतीलाल नेहरू के पुत्र थे। राहुल गाँधी की क्या उपलब्धि है? यही न कि उनकी दादी के पिता प्रधानमन्त्री थे, उनकी दादी प्रधानमन्त्री थी, उनके पिता प्रधानमन्त्री थे।

हम सुनते हैं कि वंशवादी राजशाही के समय राज पुरोहित होते थे। यह राजा के वेद ज्ञान अभाव की पूर्ति की एक तात्कालिक व्यवस्था थी। राज पुरोहित अर्थात् धर्माचार्य, राजा को राज कार्य संचालन में वेदानुकूल परामर्श सुझाते थे। हम यह भी सुनते हैं कि ऋषि-मुनि जब किसी राज दरबार में पधारते थे, तो राजा भी अपने स्थान से उठकर उन्हें यथेष्ट सम्मान प्रदान करते थे। ऋषि-मुनियों की कही गई बातों को आज्ञा (आदेश) रूप में राजा लोग धारण करते थे। राजा का भी सामर्थ्य नहीं होता था कि वह ऋषि-मुनियों के निर्देशों की अवहेलना कर दे। यह धर्मार्य सभा का राजार्य सभा से ऊपर होने का प्रमाण था। ऋषि-मुनि कौन होते थे? ऋषि-मुनि आजकल के भगवा वस्त्रधारी मिर्ची से यज्ञ करने वाले पाखण्डी, मानवता को ताक पर रख जंगली बन नग्न भ्रमण करने वाले तथा भिक्षा माँगने वाले न होकर वेद और वेदादि शास्त्रों के परम ज्ञानी तथा अनुसन्धानकर्ता होते थे जिन्हें आज की भाषा में आविष्कारक वैज्ञानिक कहा जाता है।

राजा के राज कार्य का सबसे निकटस्थ सहयोगी मन्त्री कहलाता है। आपको नहीं लगता कि इस मन्त्री शब्द में वेद के मन्त्र शब्द का समावेश है। मन्त्र मात्र और मात्र वेद का होता है अन्य किसी धार्मिक पुस्तक का नहीं। मन्त्र का अर्थ है विचार, और जो विचारवान है वह मन्त्री है।

महर्षि दयानन्दजी सरस्वती आर्य समाज के नियमों के माध्यम से संसार को उत्कृष्ट व्यवस्था देते हैं। यथा- **'सब सत्य विद्याओं का पुस्तक वेद है।'** अर्थात् संसार के समस्त विचारों का संग्रहण वेद है और जिसे विचारवान् अर्थात् मन्त्री बनना है वह वेद ज्ञानी बने। इससे सिद्ध हुआ कि मन्त्री वेद ज्ञानी हों। वेद ज्ञानी राजा, मन्त्री, पुरोहितों के कारण यह भूमि विश्व गुरु थी तथा यहाँ के शासनाध्यक्ष चक्रवर्ती शासक होते थे।

राजा वेद ज्ञानी हो, राज पुरोहित वेद ज्ञानी हो, मन्त्री अथवा राज्याधिकारी वेद ज्ञानी हो किन्तु **'समरथ को दोष नहीं गुसाई'**। राजा अपने वेद ज्ञान विहीन पुत्र को राजा घोषित कर दे तो कौन रोकने वाला है? जब राजा के यहाँ वंशवाद प्रारम्भ हुआ तो राज पुरोहित और मन्त्री के पदों में भी वंशवाद क्यों कर न होता। राजा चले गये, राजपाट चले गये किन्तु मन्त्री आज भी विद्यमान हैं तथा राजा का स्थान लोकतान्त्रिक व्यवस्था में प्रधानमन्त्री ने ले लिया है। देश का दुर्भाग्य है कि वेद ज्ञान तो दूर, थम्स अप (अंगूठा छाप) या अधिक हुआ तो पाँचवीं-आठवीं पास मन्त्री बन रहे हैं। देश का विकास होकर वैश्विक स्तर पर देश की प्रतिष्ठा कैसे बढ़े और देश के सामान्य मानवी के जीवन में समस्याओं का निवारण कैसे हो, उसके जीवन में सुख-शान्ति-समृद्धि कैसे आवे, का विचार दूर-दूर तक न होकर वे तो ईश्वर को धन्यवाद देते हैं कि प्रभु! तूने अच्छा **'गोल्डन चान्स'** दिया है। अब पाँच वर्ष तक जी भरकर विदेशी महँगी भाँति-भाँति की शराब

पीऊँगा, मुर्गे-मछली-मांस खाने में कोई मेरा मुकाबला नहीं कर सकेगा, नित नई सुन्दरियों को अपनी सेवा में रख उनके गले में बाँहें डालूँगा, पाँच सितारा होटलों का आनन्द लूटूँगा, सर्वसुविधा युक्त महलनुमा बंगले बनवाऊँगा, महँगी विदेशी कारें दो-चार नहीं १०-२० जुटाऊँगा तथा दोनों हाथों एवं फावड़े से इकट्ठा करने की बातें तो बीते युग की हो गई, अब तो जेसीबी तथा पोकलेन का युग है। जेसीबी-पोकलेन से इतनी धन-सम्पदा इकट्ठी करूँगा कि पीढ़ी दर पीढ़ी राजनीति को अपनी रखैल बनाकर रखूँगा। किसकी मजाल है जो मेरे रास्ते में आ जाए, आ गया तो उसे निपटा दूँगा।

उस अज्ञानी को न तो मानव जीवन के मर्म का ज्ञान, ना उसे ईश्वर के न्यायकारी स्वरूप का ज्ञान, उसके अन्तरमन में तो एक ही बात बैठी होती है कि जो कुछ उसे प्राप्त हुआ है वह उसने अपने बूते पर हासिल किया है और किसी की मजाल नहीं कि कोई उसका कुछ बिगाड़ सके। ईश्वर का तो उसे कोई भय नहीं होता, वह तो पाप की कमाई को पाप की कमाई न समझते हुए अपनी चतुराई की कमाई समझता है और उस पाप की काली कमाई का कुछ भाग ईश्वर के नाम पर व्यय कर वह ऐसा समझता है जैसे उसने ईश्वर पर कोई उपकार कर दिया हो। ईश्वर की इच्छा-अनिच्छा से कोई सरोकार नहीं। ईश्वर को वह अपनी इच्छानुसार चलाने का प्रयत्न करने लगता है।

अत्यन्त विडम्बना का विषय है कि जिस राजनीति को धर्मयुक्त होना चाहिये, वेद ज्ञानविहीन नीति निर्धारकों ने उसे धर्म से विहीन कर दिया है। देश के वेद ज्ञान विहीन कर्णधारों को इस संसार के सर्वोच्च राजा (ईश्वर) के वास्तविक स्वरूप, उसकी न्यायकारी पुनर्जन्म और कर्मफल व्यवस्था, ईश्वर ने इस संसार को किसके लिए और क्यों बनाया तथा मानव जीवन हमें किस कारण किस प्रयोजन हेतु मिला, हम इस संसार में क्या लेकर आए और क्या साथ लेकर जाएँगे, का पता नहीं उनसे क्या आशा-अपेक्षा की जा सकती है? वे देश के जनसामान्य को क्या दशा-दिशा देंगे?

महर्षि दयानन्दजी सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं- 'महाभारत युद्ध के १००० वर्षों पूर्व से वैदिक संस्कृति का पतन होना प्रारम्भ हुआ जिसका परिणाम महाभारत का युद्ध हुआ और विश्व गुरु के पद पर विराजित मानव मात्र को दशा-दिशा देने वाली वैदिक संस्कृति पर ग्रहण के काले बादल महाभारत के युद्ध के कारण छाए। समूचे संसार में एकमात्र वैदिक धर्म के स्थान पर अनेक मत-पन्थ-सम्प्रदाय उत्पन्न हुए। चक्रवर्ती शासनाध्यक्षों की परम्परा पर विराम लग गया। **'जिसकी लाठी उसकी भैंस'** वाली कहावत चरितार्थ होने लगी। वाम मार्ग जैसी विचारधाराओं का जन्म हुआ, जिनका सिद्धान्त था कि जो है आज है, कल किसने देखा? जब तक जीयो, सुख पूर्वक जीयो, कर्ज लेकर भी घी पीना पड़े तो पीयो, शराब-मांसाहार-व्यभिचार जिनको अभिष्ट था। धर्म के नाम मर मद्य-मांस का सेवन यहीं से प्रारम्भ हुआ। इन्हीं कारणों से अनिश्वरवादी जैन-बौद्ध मतों का प्रारम्भ हुआ। संगठित आर्य जाति मत-पन्थ-सम्प्रदायों में बँटती चली गई। अज्ञानता के अन्धकार का साम्राज्य स्थापित हो गया। बाहुबल के आधार पर राज्य और राजा बनने लगे। फूट का साम्राज्य हो गया। सातवीं सदी में जब प्रथम मुस्लिम विदेशी आक्रान्ता ने इस्लाम का बीजारोपण इस पवित्र भूमि पर किया। तब मात्र सिन्ध क्षेत्र में ७० राजा राज्य करते थे। अगर ये सभी संगठित होकर लड़ते तो मुस्लिम आक्रान्ताओं को नाको चने चबवा देते, किन्तु आपसी फूट के चलते एक-दूसरे को नीचा दिखाने के कारण मुट्ठी भर आक्रान्ताओं का सहयोग कर उन्हें संरक्षण प्रदान किया गया। फलतः इस्लाम के नाम पर आयातित अमानवीय विचारधारा ने लगभग ८०० वर्षों तक इस धरा पर रक्त की होली खेली। यहाँ की मूल संस्कृति-शिक्षा को नष्ट-भ्रष्ट करने में कोई कमी नहीं रखी। जी भरकर पददलित किया, मारा-पीटा, लूटा-खसोटा किन्तु मानवीय मूल्यों की पोषक इस वैदिक संस्कृति में अद्भुत ओज-तेज था। ८०० वर्षों के दीर्घकाल तक यह तलवार की धार पर कटती चली गई किन्तु इसने जहाँ तक बना, क्रूरता के सामने घुटने नहीं टेके। इसे गर्दनें कटवाना स्वीकार था किन्तु चोटी कटवाना व जनेऊ उतारना स्वीकार्य नहीं था। अन्तिम साँस तक संघर्ष किया। अस्मिता की रक्षा के नाम पर १७०००, १४०००, १२००० स्त्रियों के एक साथ जीवित जल मरने (जौहर प्रथा) के उदाहरण इतिहास के पन्नों में हमें मिलते हैं। ८०० वर्षों के इतिहास में अपनी मूल संस्कृति को न त्यागने के कारण अपने आपको दुर्गति से बचाने हेतु सहर्ष मृत्यु का आलिंगन कर आक्रान्ताओं के कोप भाजन का शिकार होने वाले अल्प संख्या की अनेक घटनाओं से हमारा अतीत रक्तरंजित है। वहीं शिवा-प्रताप जैसे महापुरुषों की गौरव गाथाओं से हमारा गौरवशाली इतिहास हमें शिक्षा देता है कि हम किसी को छेड़ते नहीं और कोई हमें छेड़ता है तो हम उसे छोड़ते नहीं। कहने-लिखने को बहुत कुछ है किन्तु लेख के विस्तार भय से अन्धकार युग के इस एक भाग को यहाँ विराम देते हैं।

इसके पश्चात, इस धरा पर पदार्पण हुआ ईसाइयत की विचारधरा से सम्बन्ध रखने वाले धूर्त और चालाक अंग्रेजों का। इस्लाम मतानुयायी काले-कलूटे, विदेशी मुस्लिम आक्रान्ता अमानवीय क्रूर मार-काट की घटनाओं के द्वारा अपना आधिपत्य थोपते थे। ये अपनी अमानवीय नृशंस शैली तथा तलवार के बल पर बगैर किसी संकोच के गाजर-मूली की तरह पुरुष-स्त्रियों और बच्चों को काटकर अपने दीन (धर्म) के विस्तार में बहुत बड़ा शबाब (पुण्य) का कार्य कर अपने खुदा को प्रसन्न करने के अहंकार के मद में चूर थे। वहीं गोरी चमड़ी वाला अंग्रेज अपनी धूर्त छल-कपट की नीति के अहंकार के मद में चूर था। इसने अपना आधिपत्य अपनी कपट नीति से जमाया, मार-काट, लूट-पाट में ये भी पीछे नहीं रहे किन्तु इनकी मार-काट भयभीत करने तथा अपनी रक्षा तक सीमित थी।

जहाँ इस्लाम ने रणक्षेत्र में सामने आकर दो-दो हाथ कर हमारी शिक्षा-संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करने का कार्य किया वहीं अंग्रेजों ने दीमक की तरह घुसपैठ कर हमारी जड़ों को खोखला किया और आज भी उनका आधिपत्य समाप्त हो जाने के ७२ वर्षों पश्चात् भी उनका कार्य शिक्षा-चिकित्सा सेवा के माध्यम से चल रहा है जिसके संरक्षण प्रदाता काली चमड़ी के अंग्रेज धर्म निरपेक्ष का आवरण ओढ़े हमारे राजनीतिज्ञ बने हुए हैं।

कहने वाले तो यहाँ तक कहते हैं कि मुस्लिम आक्रान्ताओं ने ८०० वर्षों में हमें उतनी क्षति नहीं पहुँचाई जितनी अंग्रेजों ने मात्र दो सौ वर्ष में हमें पहुँचाई और आज भी पहुँचा रहे हैं। कैसे? उत्तर- अंग्रेज चले गए, अंग्रेजीयत छोड़ गए।

बात सही भी है। इस्लाम का हानिप्रद पक्ष समक्ष दृष्टिगोचर होता था और हो रहा है। किन्तु अंग्रेजों की **'फूट डालो और राज करो'** की नीति का दंश हम आज भी झेल रहे हैं। इतिहास हमारे लेख का विषय नहीं होकर

मात्र विषय वस्तु है। अत: ८००-१००० वर्षों के अन्धकार युग को विराम दे आगे बढ़ते हैं।

महर्षि दयानन्दजी सरस्वती की मान्यतानुसार महाभारत युद्ध के लगभग १००० वर्ष पूर्व वैदिक संस्कृति के सूर्य ने अस्ताचल की ओर चलना प्रारम्भ किया। जिसका परिणाम १००० वर्षों की अवैदिक मत-पन्थों की पराधीनता का अन्धकार युग रहा। १८५७ की सशस्त्र क्रान्ति की विफलता के पश्चात् भारत भू क्षितिज पर महर्षि दयानन्दजी सरस्वती नाम का नक्षत्र उभरा, जिसने अन्धकार युग में सोई हुई आर्य जाति को झंझोड़ कर जगाया और प्रकाश पुंज दिया **'वेदों की ओर लौटो'**। इस प्रकाश पुंज के प्रकाश में सोई हुई आर्य जाति अंगड़ाई ले उठ खड़ी हुई और उसने महर्षि के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' से **'माता-पिता के तुल्य हितकर भी विदेशी राज्य सुखकारी नहीं, स्वदेशीय राज्य सर्वोपरि और उत्तम होता है।'** के माध्यम से राष्ट्रभक्ति का पाठ पढ़ा। यह उस समय की बात है जब कांग्रेस का भी जन्म नहीं हुआ था।

महर्षि दयानन्दजी सरस्वती ३० अक्टूबर १८८३ को असमय काल के गाल में समा गए। महर्षि दयानन्दजी सरस्वती का असमय निधन नहीं होता तो सम्भव है कांग्रेस का जन्म भी नहीं होता और १८वीं सदी में ही हमें वास्तविक स्वतन्त्रता प्राप्त होकर हम पुन: विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठापित हो गए होते। सन्देह व्यक्त किया जाता रहा है कि महर्षि दयानन्दजी सरस्वती की मृत्यु अंग्रेजों के षड्यन्त्र का हिस्सा थी। वे अंग्रेजों के आँखों की किरकिरी बने हुए थे। महर्षि दयानन्दजी सरस्वती की मृत्यु के दो वर्ष पश्चात् आर्य समाज के बढ़ते प्रभाव पर कुठाराघात करने तथा फूट डालो की अपनी नीति के चलते अंग्रेज अधिकारी मिस्टर ए. ह्युम ने वर्ष १८८५ में कांग्रेस की स्थापना की।

महर्षि दयानन्दजी के देहावसान के पश्चात् आर्य समाज के क्षितिज पर स्वामी श्रद्धानन्द नामक नक्षत्र उभरा जिन्होंने महर्षि दयानन्द के कार्यों को पूर्ण वेग से आगे बढ़ाया। गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की पुनर्स्थापना के द्वारा वैदिक शिक्षा-संस्कृति को पुनर्जीवित करने का प्रमुख कार्य आपने किया। वहीं आयातित संकीर्ण दूषित विचारधाराओं की विघटन की खरपतवार को उखाड़ फेंक संगठित होने हेतु शुद्धि आन्दोलन का ब्रह्मास्त्र आर्य जाति को दिया। आप प्रखर चिन्तक, दूरगामी सोच के मात्र आध्यात्मिक क्षेत्र में सिमटे व्यक्तित्व न होकर प्रबुद्ध राजनीतिज्ञ भी थे। जवाहरलाल नेहरू के पिता मोतीलाल नेहरू के समय में आपका कांग्रेस में विशिष्ट स्थान था। जलियांवाला बाग काण्ड के पश्चात् किसी की हिम्मत नहीं होती थी कि जनसमूह को एक स्थान पर एकत्रित कर ले। आपने यह हिम्मत दिखाई और दिल्ली के चाँदनी चौक में रोलेट एक्ट के विरोध में रैली निकालकर अंग्रेजों की संगीनों के सामने अपनी छाती अड़ाकर कहा- **'पहले मेरे सीने पर गोली चलाओ'**। यहाँ तक तो तथाकथित महात्मा का कांग्रेस तो दूर भारत में भी पदार्पण नहीं हुआ था।

हाय रे दुर्भाग्य! अदूरदर्शी, हानिप्रद एक पक्षिय अति उदारवादी महात्मा का कांग्रेस में पदार्पण हुआ। जिन्होंने महात्मा नाम दिया उन्हें ही कांग्रेस से बाहर का रास्ता दिखा दिया। शुद्धि आन्दोलन का विरोध करने से विरोधियों को प्रश्रय प्राप्त हुआ। परिणामत: स्वामी श्रद्धानन्दजी की नृशंस हत्या हुई। एक बार पुन: आर्य जाति के हाथों से स्वतन्त्रता छिटककर दूर जा गिरी।

सुभाषचन्द्र बोस भी तो एक समय में कांग्रेस के जाने–माने नेता थे। सीता पट्टाभीरमैया के सामने कांग्रेस अध्यक्ष का चुनाव जीत चुके थे। उन्हें कांग्रेस क्यों छोड़ना पड़ी? विश्व युद्ध में अंग्रेजों की कमर टूट चुकी थी। सुभाषचन्द्र बोस द्वारा गठित आजाद हिन्द फौज अंग्रेजों को डटकर चुनौती दे रही थी। ऐसे समय इण्डियन आर्मी १८५७ जैसा विद्रोह कर आजाद हिन्द फौज के साथ आ खड़ी होती तो अंग्रेजों के पाँव उखड़ने में कितनी देर लगती? किन्तु किसने अंग्रेजों की विश्व युद्ध के पश्चात् भारत को स्वतन्त्र कर देने की कपट नीति पर विश्वास किया और इण्डियन आर्मी को अंग्रेजों के पक्ष में निष्ठा से लड़ने का आह्वान किया? जानना आवश्यक है।

यह भी जानना आवश्यक है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् गृहमन्त्री के रूप में ५६१ देशी रियासतों को एक सूत्र में पिरोने वाले सशक्त भारत के शिल्पी, लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल को भारत का प्रथम प्रधानमन्त्री समूचे कांग्रेस बनाने की पक्षधर थी किन्तु किनके हस्तक्षेप से उन्हें पीछे धकेला गया?

चलो, हम उदारवादी जो ठहरे, हमारे प्रतिकूल घटित घटनाओं को भी हम ईश्वर की इच्छा मानकर आत्म संतोष हेतु कह देते हैं **'कोई बात नहीं'**। यहाँ तक हम यह कह लेते हैं कि कोई बात नहीं किन्तु अंग्रेजों की **'फूट डालो और राज करो की नीति'** के अन्तर्गत अंग्रेजों के प्रश्रय से मुस्लिम और हिन्दूवादी संगठन तथा नेता उभरे। स्वतन्त्रता के पूर्व ही विचारधारा आधारित विभाजन के स्वर मुखर होने लगे।

महात्मा कहते थे- देश का विभाजन मेरी लाश पर होगा। उन्होंने जीते जी सहर्ष विभाजन स्वीकार कर लिया। स्वतन्त्रता के पूर्व दो भू-भाग विचारधारा पर आधारित इस्लामिक देश बन गए। तथाकथित महात्मा ने हिंसा के भय से हिंसा के समक्ष घुटने टेके, क्या हिंसा का ताण्डव रुक पाया? नहीं। विचारधारा आधारित जनसंख्या की स्थान परिवर्तन पर विभाजन का निर्धारण हुआ। लाखों परिवारों को उनका सब कुछ छीनकर खुले आकाश में भूखों मरने हेतु शरणार्थी का उपनाम दे दिया गया। असंख्य अबोध ललनाएँ, निर्दोष स्त्रियाँ सामूहिक व्यभिचार की ग्रास बनीं। लाखों बच्चों, वृद्धों, स्त्रियों-पुरुषों को मौत की नींद सुला दिया गया।

हम पग-पग पर दुर्भाग्य के शिकार बने, छले गए। आयातित विचारधारा ने पहले हमसे हमारे अपनों को दूर किया, फिर उन्हें ढाल बनाकर भू-भाग का विभाजन कर लिया किन्तु हमारा दुर्भाग्य यहीं समाप्त नहीं हुआ। इस अवशेष रूप में बची-खुची मानव मात्र की गौरवशाली संस्कृति और उस संस्कृति के पल्लवित बगिया इस खण्ड-खण्ड भू-भाग को और लुटना-पिटना शेष था। इसे **हमारे कर्णधारों ने मत-पंथ-सम्प्रदाय निरपेक्ष राष्ट्र के स्थान पर नाम दिया 'धर्म निरपेक्ष राष्ट्र'।**

इतना सब कुछ होने पर भी गीत गाए जाते हैं- 'साबरमती के सन्त तूने कर दिया कमाल, दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल।' प्रश्न उपस्थित होता है **क्या अंग्रेज हमें स्वतन्त्रता थाल में सजाकर उपहार स्वरूप भेंट कर गए?** क्या हमारे असंख्य योद्धाओं झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, मंगल पाण्डे, तात्या टोपे, महापुरुषों महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती, लाला लाजपतराय, क्रान्तिकारियों सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, अशफाक उल्ला खाँ, खुदीराम बोस, रामप्रसाद बिस्मिल, करतारसिंह सराबा, उधमसिंह, चापेकर बन्धुओं, भाई

परमानन्द, सावरकर बन्धुओं जैसे हजारों-लाखों महान् विभूतियों ने यूँ ही अपने जीवन व प्राणों को होम कर दिया?

चलो कोई बात नहीं, आधी-अधूरी लुटी-पीटी, बची-खुची रक्त रंजित स्वतन्त्रता हमें मिली। प्रश्न उठता है हम मुस्लिम आक्रान्तों से लड़े क्यों? हम अंग्रेजों से लड़े क्यों? हम तो **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** अर्थात् वसुधा भर के लोगों को एक परिवार मानने वाली संस्कृति के लोग हैं तथा **'अतिथि देवो भवः'** अर्थात् अतिथि देवतुल्य होता है, हम **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** अर्थात् सबको सुखी देखने वाली संस्कृति के लोग हैं। जब ऐसा है तो हमें मुस्लिम-अंग्रेजों से लड़ने के स्थान पर उनका आतिथ्य करना चाहिये था। हमें सहर्ष कहना चाहिये था कि भैया आपको जो चाहिये वह ले लो, हमारा जो भी है वह सब तुम्हारा भी है। तुम धन-सम्पत्ति, भूमि यहाँ तक कि हमारी पुत्री, बहन, पत्नी जो चाहो ले सकते हो। क्योंकि हम उदारवादी अहिंसावादी जो ठहरे, हम लड़ने-मारने में विश्वास नहीं रखते। हम भूखे रहकर भी दूसरों को भरपेट खिलाने में, छीन-झपट कर लेने के स्थान पर अपनी सर्वाधिक प्रिय वस्तु को भी सहर्ष अन्य को देने में आत्मिक सुख की अनुभूति करते हैं। उपरोक्त वर्णित तथ्यों के प्रकाश में प्रत्येक व्यक्ति के अन्तःस्थल में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि **हम लड़े क्यों?**

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि हम धन-सम्पदा, भूमि-शासन आदि के लिए नहीं लड़े। हमें क्रूर, अमानवीय, भोगवादी मतों की विचारधारा स्वीकार नहीं थी। हम हमारी उस गौरवशाली, प्राणीमात्र की हितैषी, लोकोपयोगी, त्यागवादी वैदिक धर्म-संस्कृति की रक्षार्थ लड़े। अपना सब कुछ स्वाहा कर हम मानवीय विरासत वैदिक संस्कृति को बचाने में सफल हो पाते हैं तो कोई हानिप्रद सौदा नहीं है। **प्रश्न उठता है क्या स्वतन्त्रता प्राप्ति से हम हमारे उद्देश्य में सफल हो पाए?** इस प्रश्न का उत्तर प्रत्येक व्यक्ति वो चाहे किसी भी विचारधारा का हो, मानवीय आधार को समक्ष रखकर निष्पक्ष रूप से अपना मत व्यक्त करे तो वह यही कहेगा कि वैदिक धर्म संस्कृति की गौरवमयी विरासत की सुरक्षा का प्रश्न तो थोड़ी देर के लिए एक तरफ रख दो, मात्र और मात्र **'मानवीय नैतिक मूल्यों'** पर ही चिन्तन करें तो १००० वर्ष के अन्धकार युग में इन मूल्यों की उतनी दुर्दशा नहीं हुई जितनी स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इन ७२ वर्षों में हुई है। **कारण स्पष्ट है- मूल्य विहीन शिक्षा और राजनीति के कारण हमारी स्वतन्त्रता प्राप्ति के मायने ही बदल गए। आरक्षण और तुष्टिकरण को सत्ता प्राप्ति का शस्त्र बना लिया गया। परिवारवाद, वंशवाद, जातिवाद किस प्रकार फल-फूलकर दलीय राजनीति में दल-दल बन गया।** व्यक्तिवादी, परिवारवादी, वंशवादी, जातिवादी राजनीति के दल कुकुरमुत्ते की तरह उग आये, राष्ट्रीय हित तथा मूल्य पीछे छूटकर निजी तथा दलीय हितों की स्वार्थ परक राजनीति होने लगी। ४०-५० संसदीय क्षेत्रों पर साम-दाम-दण्ड-भेद की नीति अपनाकर सीटें हथियाने वाले प्रधानमन्त्री पद के सपने देखने लगे। आम व्यक्ति का विश्वास टूट चुका जिसका चर्चा हम लेख के प्रारम्भ में कर आए हैं।

देश की सत्ता की बागडोर अपने हाथों में अधिकांश समय थामे कांग्रेस ने तुष्टीकरण और वोटों की राजनीति के चलते इस धरा की मूल संस्कृति और उससे जुड़े बहुसंख्यक वर्ग की पग-पग पर उपेक्षा की जब भारतीय संविधान सबको समान अधिकार देता है तो संख्या के आधार पर अल्प होने मात्र से विशेष रूप से उपकृत क्यों किया जाए और जिन क्षेत्रों में बहुसंख्यक वर्ग अल्पसंख्या में हों वहाँ पर उन्हें अल्प संख्यकों के दिये जाने वाले लाभ क्यों नहीं दिये जाएँ?

स्वतन्त्रता प्राप्ति के इन ७२ वर्षों के बाद भी आहत-पीड़ित इस धरा की मूल शिक्षा-संस्कृति को मरहम लगाने के स्थान पर उपेक्षित करने का पाप किसने किया?

'साम्प्रदायिक लक्षित हिंसा विधेयक' जैसे अमानवीय विधेयक की तलवार प्रत्येक समय बहुसंख्यक वर्ग के सर पर लटकाने का प्रयास किसने किया? स्वतन्त्रता के मात्र ७२ वर्षों में १०० करोड़ की जनसंख्या वृद्धि का दोष कौन अपने ऊपर लेगा जो देश में बेरोजगारी, महँगाई, संसाधनों की मारामारी तथा आवास समस्या का प्रमुख कारण है। **'हम दो हमारे दो'** के स्थान पर **'हम दो हमारे दो और सबके दो'** को सभी पर कठोरता से लागू क्यों नहीं किया गया। संविधान में सभी के लिए समानता के उपरान्त भी कुछ विचारधाराओं को पृथक से बहुविवाह आदि के लाभ क्यों दिये गये जिसके चलते कुछ लोगों ने सिद्धान्त बना लिया कि **'मैं एक, मेरी चार और हम सबके चौवालिस कुल मिलाकर हम उनपचास'** इस प्रकार लोग जनसंख्या वृद्धि कर राजनीति में अपना दबदबा कायम करने में लगे रहे और उन्हें वोट बैंक के रूप में उपयोग तथा लाभ लेने वाला राजनीतिक दल कौन सा है जो यह सब जानते हुए भी मूक दर्शक बना रहा। फलतः स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् बहुसंख्यक वर्ग की

श्रद्धेय श्री सुखदेवजी शर्मा, **दिनांक : २७.५.२०१९**
सादर नमस्ते।

यहाँ पर सब आर्यजन आनन्द मंगल से हैं। आशा है आप भी सपरिवार आनन्द मंगल से होंगे। आगे आपकी मंगलदायिनी आर्य पत्रिका वैदिक संसार नियमित रूप से मिल रही है। अब तक की आर्य संसार की जितनी पत्रिकाएँ मिली हैं उनमें रोचक लेख, कविताओं की दृष्टि से मुझे सबसे अच्छी यह पत्रिका मिली है। उनमें यह उत्कृष्ट पत्रिका है। उसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं। आप बहुत मेहनत व निष्ठा से इसमें उंच्च कोटि के लेख व पढ़ने योग्य सामग्री **'गागर में सागर'** समान प्रस्तुत करते हैं। इसे पढ़कर आपके अथक प्रयास को दाद दिये बगैर नहीं रह सकता। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ आपको तथा समस्त परिवार को सुन्दर स्वास्थ्य प्रदान हो जिससे अमूल्य पठन सामग्री प्राप्त होती रहे तथा समय-समय परा निर्देश मिलते रहें ताकि आर्यमार्ग से भटकूँ नहीं। आपका सम्पर्क ऐसा मिला हर अंक नवीनता प्रदान कर रहा है। आपका कोटि-कोटि धन्यवाद। मेरी इच्छा है कि मेरे बाद परिवार में यह पत्रिका निरन्तर आती रहे तथा मार्गदर्शक के रूप में प्रभावशाली विचार मिलते रहें। मार्ग से न भटकें, सद्विचार जीवनसाथी के समान समय-समय पर सचेत व सजग करते रहें। प्रभु आपको सुन्दर स्वास्थ्य व जीवन के हर प्रकार के सुख देता रहे। धन्यवाद।

राजेन्द्र आर्य हाँसीवाला, दिल्ली
चलभाष : ८३७६८१५२३७

जनसंख्या प्रतिशत में गिरावट हुई जबकि अल्पसंख्यकों की जनसंख्या १० प्रतिशत से बढ़कर १७ प्रतिशत हो गई। **यह विषमता क्यों?**

न्याय योजना : इस चुनाव में कांग्रेस द्वारा लोक लुभावन नारा दिया गया न्याय योजना। जिसके अन्तर्गत ६००० रुपये प्रतिमाह खाते में आएँगे, वर्ष के ७२००० रुपये। हम समझ नहीं पा रहे हैं कि ये न्याय योजना है या **'अन्याय योजना'** क्योंकि ये पैसे कांग्रेस अपने जेब से तो देती नहीं और न ही उस पार्टी के कर्णधार अपनी जेब से देते। देते भी तो उस राजकोष से ही जिसे अपनी कर्मठता, परिश्रम आदि से व्यवसाय आदि कर ईमानदारी से **'कर'** (टैक्स) देने वाला भरता है अर्थात् परिश्रमी ईमानदार लोगों के धन को अपनी सत्ता प्राप्ति के लिए मुफ्त बाँटो।

अच्छा बाँटेंगे किनको? जो निर्धन है, **निर्धन कौन है?** जिसके पास गरीबी रेखा के नीचे वाला राशन कार्ड बना हुआ है। यह बात और है कि ऐसे राशन कार्डधारी के घर में वाशिंग मशीन, एसी आदि लगे हों, दो पहिया नहीं, चार पहिया वाहन भी है। और ऐसा निर्धन जो अपने बच्चों को शिक्षित करने में सब कुछ व्यय कर चुका हो और उसके सुपुत्र शिक्षित बेरोजगार घूम रहे हों, परिवार के किसी सदस्य की जटिल रोग के उपचार में जिसका सब कुछ स्वाहा हो गया हो, जो जीवन के संघर्षो से जूझ रहा हो किन्तु उसका स्वाभिमान उसे ऐसा राशन कार्डधारी बनने की अनुमति नहीं देता उनका क्या होगा? **उनकी सुधी कौन लेगा?**

क्या निर्धनता वरदान है? कर्मठ, परिश्रमी, ईमानदार, मितव्ययी, दुर्व्यसनों से दूर रहने वाला, सामाजिक सरोकारों-प्रतिष्ठा को महत्व देने वाला, दुर्गुणों से दूर रहने वाला, दो सन्तान उत्पन्न कर अपने सामर्थ्य अनुसार उन्हें समुचित शिक्षा-दीक्षा देने वाला तो निर्धन हो नहीं सकता और अपवाद स्वरूप किसी कारणवश कोई निर्धन हो जाए तो उसकी सहायता हेतु मित्र-रिश्तेदार दौड़े-दौड़े चले आते हैं। इसके उलट निर्धन तो वह है जो निकम्मा, निठल्ला, बेईमान, दुष्ट, दुराचारी, दुर्व्यसनी, स्वयं ने शिक्षा अर्जित करने के समय स्कूल में आवारागर्दी की, शिक्षकों को धमकाया, साथियों के साथ मटरगश्ती की। उसके पश्चात् व्यवसाय किया तो व्यवहार कुशल नहीं। जिसका लिया उसका दिया नहीं। ग्राहकों का विश्वास अर्जित नहीं किया। मीठे फल के पेड़ के फल खाने के स्थान पर उसकी जड़ ही खोदकर खाने लगे। ऐसी प्रवृत्ति के लोग निर्धन नहीं होंगे तो क्या धनाढ्य होंगे?

अब गृहस्थ जीवन की बारी आई तो एक पत्नी से जी नहीं भरा, चार-चार की सुविधा जो राजनीति ने दे रखी है, शहर के चार कोनों में चार, इसके अतिरिक्त भी ऐक-दो स्टेपनी रखने वाला तथा इधर-उधर ताक-झाँक करने वाला, बच्चे उत्पन्न करने की बारी आई तो पूरी क्रिकेट टीम पैदा इस प्रकार कर ली जैसे इसके अलावा कोई और काम ही नहीं हो। कोई कहे तो शर्मिन्दा होने के स्थान पर गर्व से कहते अल्लाह की फजर है। इन्हें पालने, पढ़ाने की कोई चिन्ता की आवश्यकता नहीं है। नेताजी जो हैं गरीबी के नीचे के पृथक-पृथक राशन कार्ड भी बनवा देंगे और सरकार से कोई न कोई मुफ्त योजना लाते रहेंगे और हमारे घर तक पहुँचाते रहेंगे। बदले में इतना करना है कि सशक्त वोट बैंक बनाना है और वोटिंग के समय वोट डालना है।

ऐसे निर्धनों की फौज बढ़ाकर उनके वोट बैंक पर अपनी राजनीति चमकाने वालों ने देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् निर्धनों को इस प्रकार रेवड़ियाँ बाँटी कि स्थायी निर्धनों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है और तो और वह निर्धनता के इस वरदान से मुक्त नहीं होना चाहता है। २ रुपये किलो अनाज, आवास व्यवस्था मुफ्त, विद्युत मुफ्त, चिकित्सा मुफ्त, स्कूली शिक्षा-पुस्तकें आदि मुफ्त, छात्रवृत्ति, तीर्थ-हज भ्रमण सरकार की ओर से, न्यायालयीन शुल्क से राहत, हमें तो पता ही नहीं कि सरकारें मुफ्तखोरों को क्या-क्या दे रही है। सुनने में आता है कि अल्पसंख्यकों के हितार्थ ४० योजनाएँ चल रही है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पंश्चात एक गणित और है जो हमारी समझ में नहीं आता है कि राजनीति में प्रवेश करने वाले वे चाहे किसी भी दल के हों, दिन दूने, रात चौगुने फलते-फूलते सड़कपति से लखपति, लखपति से करोड़पति, करोड़पति से अरबपति, अरबपति से खरबपति और खरबपति से न जाने कौन-कौन से पति बन जाते हैं और जिस सरकार को वे चलाते हैं वह बेचारी निर्धन होती चली जाती है। उसके ऊपर ऋण का बोझ बढ़ता चला जाता है। मध्यप्रदेश के निर्वाचन के समय कांग्रेस पार्टी ने कर्जमाफी का लॉलीपॉप दिया था। इसी कारण सत्ता मिल गई जबकि मध्यप्रदेश सरकार पर दो लाख करोड़ रुपये का ऋण है। और मध्यप्रदेश सरकार अपनी अनेक देनदारियाँ नहीं चुका पा रही हैं।

बहुसंख्यक वर्ग की उपेक्षा और उसकी भावनाओं की उपेक्षा के साथ-साथ तुष्टीकरण की नीति में शनैः-शनैः वृद्धि होते-होते स्थिति यह उत्पन्न होने लगी कि बहुसंख्यक वर्ग को कुछ दल मूर्ख ही समझने लगे और उन दलों के नेता अनर्गल कुछ भी बयानबाजी जब-तब करने लगे। इस प्रकार की घटनाओं में २०१४ के पूर्व वृद्धि देखी गई। २०१४ के जनादेश से ऐसे दल और नेता धड़ाम से जमीन पर आ गिरे और गुजरात विधानसभा चुनाव के समय तो सेक्यूलर का मुखौटा उतारकर फेंक ही दिया तथा जनेऊ पहनकर मन्दिर-मन्दिर घूमने लगे। २०१९ के निर्वाचन में तो आर्यों को बाहर से आया हुआ बताने वाले निवृत्तमान लोकसभा के प्रतिपक्ष नेता मल्लिकार्जुन खड़गे को हार का सामना करना पड़ा। अनेक राजा-महाराजा धराशायी हो गए। इनके लिए लाल मिर्च से दिग्विजय यज्ञ करने वाले पाखण्डी बाबाओं की भी पोल खुल गई। कोई इन मूर्खों को तो समझाए कि यज्ञ में सुगन्धित, पुष्टिकारक, रोगनाशक पदार्थ डाले जाते हैं मिर्ची-नमक नहीं। ऐसे पाखण्डियों ने ही विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित रही वैदिक धर्म संस्कृति को हास्य विनोद का माध्यम बना शर्मसार कर दिया है।

उपरोक्त निर्वाचन में भारी मतदान ने भी देश की जन सामान्य की जागरूकता का परिचय दिया है तथा उपरोक्त निर्वाचन के प्राप्त परिणामों ने राजनीति के पण्डितों को विस्मय में डाल दिया। अभी तक राजनीति में प्रभाव रखने वाले पूँजीवाद, परिवारवाद, जातिवाद, सम्प्रदाय वाद को जन सामान्य ने नकारकर खुलकर राष्ट्रवाद को समर्पित, स्वस्थ, सशक्त जनादेश दिया है। मैं कोई राजनीतिज्ञ नहीं, ना ही किसी राजनीतिक दल से मेरी निकटता है, ना ही विद्वेष है। जो भी लिखा गया राष्ट्रीय मूल्यों को समर्पित होकर लिखा गया है। नरेन्द्र मोदी का भी मैं अन्ध भक्त नहीं हूँ। मात्र उनकी कार्यशैली में जो प्रत्यक्ष राष्ट्रवाद दृष्टिगोचर होता है उसे नमन करता हूँ। मेरा लेशमात्र भी किसी की भावनाओं को आहत करने का मानस नहीं है। जो जैसा यथार्थ है वह लिखा गया है। अगर किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचती है तो उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। ■

भगवतीचरण बोहरा का बलिदान

• **डोंगरलाल पुरुषार्थी**
प्रधान आर्य समाज, कसरावद, जनपद : खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५९०-५९०९९

है युवक, जिन्हें सागर उथले लगते हैं।
बौने लगते जिनको अजेय पर्वत हैं।।
ये चाँद-सितारे जिनके आगे नत हैं।
जो अन्तरिक्ष का मान रौंद देते हैं।।
भगवतीचरण थे ऐसे ही वो वीर एक,
त्यागी अनुरागी, वे थे धनी बुद्धि बल के।
थे भगतसिंह- आजाद सहोदर से उनको,
वे ज्योतिर्मय थे रत्न क्रान्तिकारी दल के।। (श्रीकृष्ण सरल)

राष्ट्र को समर्पित कर्तव्य-त्याग की मूरत पन्नाधाय इतिहास में अजर-अमर है। महाराष्ट्र की जननी ने अपने तीन सपूत- दामोदर, बालकृष्ण और वासुदेव को समर्पित कर भारत माता के भाल को गौरवान्वित किया। तो पंजाब की वीरता की मूरत ने दिनांक १७.११.१९२८ को लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला लेने के उद्देश्य से भगतसिंह, आजाद, राजगुरु आदि ने लालाजी की मौत के दोषी साण्डर्स आदि को लाहौर में गोलियों से मौत के घाट उतारने के बाद क्रान्तिकारी लाहौर से कैसे बाहर भाग निकले? रात के ११ बजे सुखदेव अपने साथियों के साथ दुर्गा भाभी के घर पहुँचे। सुखदेव ने कहा- भाभी! तुमने इन व्यक्तियों को पहचाना। भाभी ने कहा- भैया! इन्हें नहीं पहचाना। दुर्गा भाभी के इस कथन को सुन भगतसिंह जोर से हँस पड़े। भाभी भगतसिंह की हंसी पर बोली- भगतसिंह तुम हो। सूट-बूट की ड्रेस में तथा केश, दाढ़ी जो कटवा लिए थे। भगतसिंह ने कहा- भाभी! मैं पहली परीक्षा में पास हो गया। जब तुम नहीं मुझे पहचान पाई तो गोरी चमड़ी वाली पुलिस मुझे क्या पहचानेगी? सुबह होते ही दिनांक १८.१२.१९२८ को सर्वप्रथम आजाद एक पण्डे का रूप धारण कर हरे रामा, हरे कृष्णा कहते हुए निकल पड़े। भगतसिंह ने जेब में रिवाल्वर रखा। दुर्गा भाभी ने अपने तीन वर्षीय बेटे को इस प्रकार उठा रखा था, जिसके कारण चेहरा कुछ ढँक गया। भगतसिंह के पीछे ऊँची एड़ी के सैण्डिल पहन खट-खट की आवाज करती ऐसी चल रही थी। मानो कोई बड़े अफसर की मेम साहिबा की ठसक भरी चाल हो। कन्धे पर एक कीमती पर्स था जिसमें एक पिस्तौल रखा हुआ था। इन दोनों के पीछे नौकर के वेश में सामान उठाए राजगुरु चल रहा था। वे क्रान्तिकारी लाहौर से कलकत्ता सुरक्षित पहुँचने पर एक व्यक्ति ने दुर्गा भाभी से कहा- अरी दुर्गे! मैं तो अभी तक तुम्हें एक देहातिन नारी ही समझ रहा था। तुमने अपने आपको तथा नन्हें बेटे की जान जोखिम में डालकर एक क्रान्तिकारिणी के रूप में प्रस्तुत किया, मैं बहुत हर्षित हूँ। यह व्यक्ति और कोई नहीं, वीरता की मूरत दुर्गा भाभी के पति त्यागी, बलिदानी भाई भगवतीचरण बोहरा ही हैं। जिनको-

बहरे फिरंगी शासन के कान खोलने थे उनको,
जिन्होंने वीरों के लिए, निर्माण किए बम-गोलों का।
दहक रही थी भट्टी उर में, उनके अरमानों की
जो पथ चुना था जिन्होंने, था काँटों शोलों का।।

क्रान्तिकारी भगवतीचरण बोहरा का जन्म दि. ४.७.१९०३ को आगरा में हुआ। वे शरीर से डील-डौल, गेहूँआ रंग, ऊँचा कद और चेहरा कुछ गोलाई लिए हुए थे। सिर पर प्राय: एक गोल टोपी और आँखों पर ऐनक लगा होता था। भगवती भाई के पिता का नाम शिवचरण बोहरा, जो रेल विभाग में एक उच्च अधिकारी थे। आगरा से लाहौर आने पर भगवती भाई की शिक्षा-दीक्षा लाहौर में सम्पन्न हुई। इनका परिवार आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न था। इनका विवाह कम उम्र में हो गया था। पत्नी का नाम दुर्गा देवी था। क्रान्तिकारी प्राय: परिवार से पुरुष वर्ग ही सम्मिलित होते थे किन्तु भगवतीचरण बोहरा और दुर्गा देवी ने जोड़े से राष्ट्र की सेवा की है जिसे भुलाया नहीं जा सकता है। लाहौर नेशनल कॉलेज में शिक्षा के दौरान भगवती भाई रूसी क्रान्तिकारियों से प्रेरणा लेकर छात्रों की एक अध्ययन मण्डली का गठन किया। राष्ट्र की गुलामी और उससे मुक्ति के प्रश्न पर केन्द्रित इस अध्ययन मण्डली में नियमित रूप से शामिल होने वाले छात्रों में भगतसिंह, सुखदेव आदि प्रमुख थे। बाद में इन्हीं क्रान्तिकारियों ने **'नौजवान भारत सभा'** की स्थापना की। पढ़ाई के दौरान सन् १९२१ में भगवती भाई आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े। तत्पश्चात् कॉलेज से बी.ए. की परीक्षा पास की। भगवती भाई लखनऊ के काकोरी केस, लाहौर का षड्यंत्र केस और लाला लाजपत राय को मारने वाले अंग्रेज साण्डर्स की हत्या में भी आरोपित थे। किन्तु वे कभी न पकड़े गए और न ही क्रान्तिकारी कार्यों को करने से अपना हाथ खींचा। इस बात का यह सबूत है कि इतने आरोपों से घिरे होने के बाद भी भगवती भाई ने स्पेशल ट्रेन में बैठे वायसराय को चलती ट्रेन में ही उड़ा देने का भरपूर प्रयास किया। इस कार्य में यशपाल, इन्द्रपाल, भागाराम इनके सहयोगी थे। इसके बाद नियत तिथि पर स्पेशल ट्रेन के नीचे बम-विस्फोट में ये क्रान्तिकारी कामयाब भी हो गए। किन्तु वायसराय बच गया। ट्रेन में खाना बनाने वाले कुछ लोग आहत हो गए। क्रान्तिकारियों व इस कृत्य की भर्त्सना करने के लिए अहिंसा के पुजारी गाँधीजी ने **'कल्ट ऑफ द बॉम्ब'** शीर्षक से एक लेख अपने पत्र **'यंग इण्डिया'** में प्रकाशित कराया। इस लेख में क्रान्तिकारियों पर बहुत कीचड़ उछाला गया था। इस लेख को पढ़कर चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह आदि तिलमिला उठे। ये गाँधीजी के आरोपों का जवाब देना चाहते थे, भाषण देना चाहते थे। समाचार-पत्रों में छपाना चाहते थे। इस प्रकार गाँधीजी के आरोपों का उत्तर देने के लिए एक लेख लिखने के लिए भगवती भाई से कहा। भगवती भाई और यशपाल ने बहुत मेहनत करके **'फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब'** नामक शीर्षक द्वारा एक लेख लिख डाला। उन्होंने गाँधीजी के प्रत्येक आरोप का खण्डन बहुत ही तार्किक ढंग से किया था और बम के पीछे जो क्रान्तिकारियों का चिन्तन था, उसे बहुत प्रभावशाली ढंग से बताया था। इस लेख को एक पर्चे के रूप में छपाया गया और ठीक दि. २६.१.१९३० को यह पर्चा पूरे भारतवर्ष में एक साथ

बँटवाया गया। इस लेख की भारतीय जनता द्वारा बहुत सराहना की गई।

भगवती भाई ने जोखिम का एक और बड़ा काम अपने ऊपर ले लिया। हालाँकि उनके ऊपर गिरफ्तारी का वारण्ट था, फिर भी चन्द्रशेखर आजाद को आश्वस्त करके भगवती भाई जलगाँव जेल में जाकर वहाँ कैद क्रान्तिकारी साथी भगवानदास माहौर और सदाशिव राव मलकापुरकर से भेंट करने का निश्चय किया। ये दोनों विस्फोट सामग्री ले जाते हुए भुसावल स्टेशन पर गिरफ्तार करके जलगाँव जेल में रखे गए थे। गिरफ्तार साथी चाहते थे कि जिस दिन अदालत उनके गद्दार साथी फणीन्द्र घोष, जयगोपाल को सरकारी गवाह के रूप में प्रस्तुत करें। उन्हें गोली से उड़ा दिया जाए। इस कार्य के लिए चन्द्रशेखर आजाद के पास सन्देश भेजा था, कि उनके पास एक रिवाल्वर भेज दिया जाए। आजाद ने रिवाल्वर भेजने का दायित्व सदाशिवराव और शंकरराव को दिया तथा जेल में पहुँचकर कैद साथियों को जरूरी निर्देश का दायित्व अपने प्रिय भगवती भाई को सौंपा। भगवती भाई ने खामोश बैठकर जीवन व्यतीत करना सीखा ही नहीं था। वे हमेशा कुछ उठा–पटक या उखाड़–पछाड़ में लगे रहते थे। भगवती भाई ने आजाद को भगतसिंह, बटुकेश्वर दत्त आदि को लाहौर जेल से छुड़ाने का यत्न बतलाया। जेल से छुड़ाने के इस विचार से सभी साथियों में उत्साह जाग्रत हो गया। भगवती भाई, आजाद, यशपाल, धनवन्तरी, विश्वनाथ वैशंपायन और सुखदेवराज ने एक पुरानी कार खरीद ली। आजाद कानपुर केंद्र से बम के खोल ले आए थे। मसाला रोहतक के कारखाने से ले आए। बम के खोलों में मसाला भरकर बम भी तैयार कर लिए। दिनांक २८.५.१९३० के करीब ११ बजे भगवती भाई, सुखदेवराज, वैशंपायन रावी नदी की ओर चल दिए। इनके पास एक थैले में तरबूज संतरों के बीच में एक जीवित बम रखा हुआ था। नदी के प्रवाह में एक नाव से जा रहे थे कि जंगल में एक ऐसा स्थान था जहाँ बहुत बड़ा खड्डा था जो कि बम परीक्षण करने के लिए इन्होंने उचित समझा। भगवती भाई ने थैले में से बम निकाला और बम को देखकर बोले– इसका ट्रिगर ढीला है। सुखदेवराज और वैशंपायन ने बम को हाथ में लेकर देखा और कहा कि सचमुच इसका पिन ढीला है। वैशंपायन ने कहा– भगतती भाई! इस बम का परीक्षण खतरे से खाली नहीं है। दूसरा नया बम लाकर परीक्षण करेंगे।

भगवती भाई ने कहा आज २८ मई हो गई है और एक जून को एक्शन करना है। यदि बम का आज परीक्षण नहीं हुआ तो काम को कैसे गति मिलेगी, तुम हटो मैं इसे चलाकर देखता हूँ। यह कहकर उन्होंने अपने दोनों साथियों को दूर भेज दिया। भगवती भाई एक चट्टान की ओट लेकर अपने हाथ में बम को थामकर उसका पिन खींचने के लिए हाथ ऊँचा किया। कि हाथ में ही बम फट गया। दोनों साथियों ने बम का धमाका सुन यह समझे कि बम का परीक्षण सफल रहा। बधाई देने के लिए भगवती भाई के पास पहुँचे तो देखते हैं कि भगवती भाई लहूलुहान भूमि पर पड़े हैं। एक हाथ उखड़ चुका था, दूसरे हाथ की ऊँगलियाँ उड़ चुकी थी। पेट की आँतें बाहर आ चुकी थी। मृत्यु के इतने निकट होने पर भी भगवती भाई के चेहरे पर दिव्य मुस्कान थी। उनका रक्त बह–बहकर मातृभूमि का अभिसिंचन कर रहा था। वैशंपायन संतरे का रस मुँह में डाल रहा था। पानी माँगने पर टोप में पानी भरकर बूँद–बूँद मुँह में डाल रहे थे। असह्य पीड़ा से कराहते हुए भगवती भाई ने कहा कि अपने साथियों को जेल से मुक्त करवाने का जो मेरा सपना था, वह अधूरा ही रह गया।

भगवती भाई के बलिदान का समाचार जब बहावलपुर कोठी पर पहुँचा तो वहाँ उपस्थित क्रान्तिकारी हतप्रभ और किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए। एक कमरे में एकत्र इन क्रान्तिकारियों का मौन विलाप और अश्रु धाराएँ वातावरण को वेदनामय बना रहे थे। क्रान्तिकारियों ने चन्द्रशेखर आजाद को पहली बार रोते देखा। यदि कोई नहीं रो रहा था, तो वे थीं– दुर्गा भाभी। अपने पति के निधन के समाचार ने उन्हें संज्ञा शून्य कर दिया था। उनकी आँखें फटी की फटी रह गईं। क्रान्तिकारी चाहते थे कि वे रोएँ और अपने दुःख को हलका करें। पर शायद वेदना के आधिक्य और स्थिति की गंभीरता ने उन्हें रोने नहीं दिया। जोर–जोर से शोक–विलाप का तात्पर्य था– क्रान्तिकारियों की योजना का भण्डाफोड़ भी होना था। जब आजाद का चित्त ठिकाने पर आया, तो वे दुर्गा भाभी से बोले– अब आज से तुम हमारी माँ–बहिन सब कुछ हो। तुमने देश की आजादी और हमारी भलाई के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। तुम्हारे त्याग और हमारे प्रति अपने कर्तव्य को हम कभी नहीं भूलेंगे।

जब सुबह होने को हुई तो आजाद ने अपने साथी का अंतिम संस्कार करने का प्रस्ताव रखा। दुर्गा भाभी और सुशीला दीदी ने भी संस्कार में सम्मिलित होने का आग्रह किया, किन्तु आजाद ने आगे–पीछे की स्थिति का परिणाम बताते हुए समझा दिया। कुदालियाँ– फावड़े लेकर आजाद, धनवन्तरी, मदनगोपाल आदि क्रान्तिकारी घटना–स्थल पर पहुँचे। यदि दाह–संस्कार किया जाता है तो धुआँ उठता और मृत्यु का विज्ञापन होता। इसलिए धरती पुत्र को धरती माता की गोद में सुलाकर, सभी कोठी पर लौट आए।

इसलिए बहुत आवश्यक है यह हम सबको,
सोचें, खाना–पीना ही नहीं जिन्दगी है।
हम जिएँ अगर, अपने वालों को जीवन दें,
बन्दगी वतन की हों, वह सही बन्दगी है। सरलजी।।(जय भारती)

त्रिदिवसीय पूर्णिमा महोत्सव सम्पन्न

कोटा नगर में प्रत्येक पूर्णिमा को ३० वर्षों से वैदिक सत्संग कराने वाली पूर्णिमा सत्संग समिति द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय पूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। वैदिक प्रवक्ता श्री राजेन्द्र मुनिजी ने बताया कि उत्सव में आगरा से पधारे **आचार्य हरीशंकरजी अग्निहोत्री** ने ईश्वर, धर्म, पाखण्ड खण्डन व गृहस्थ आश्रम पर बहुत ही सारगर्भित प्रवचन किये।

भजनोपदेशक पं. दिनेश दत्त आर्य (दिल्ली) द्वारा मनोहारी भजन प्रस्तुत कर श्रोताओं को भाव–विभोर कर दिया गया। इसी मध्य **'आर्य समाज टेलीफोन डायरेक्ट्री'** का विमोचन १९ मई को सायं आर्य समाज, कोटा जं. के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री कोषाध्यक्ष रहे स्व. लक्ष्मीकान्त गुप्ता की पुत्रवधू श्रीमती रेखा गुप्ता पत्नी श्री अनिल गुप्ता ने वरिष्ठ वैदिक विद्वान बाबू शिवनारायण उपाध्याय व राजेन्द्र मुनि के साथ किया।

इस कार्यक्रम में कोटा नगर की सभी आर्य समाजों, बूँदी, रावतभाटा, बारां, छबड़ा व छीपाबड़ौद से आर्यजनों ने भाग लिया। संयोजक श्री राजेन्द्र सक्सेना व पी.सी. मित्तल ने सभी का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का सफल संयोजन श्री राजेन्द्र मुनिजी ने किया।

शहीद दिवस ३१ जुलाई पर विशेष प्रस्तुति

भारत वीर सपूत उधमसिंह

सच्ची गाथा सुनो ध्यान से, भारत के सब नर नारी।
भारतवीर सपूत बहादुर, उधमसिंह था बल धारी।।
फूट आपसी के कारण, यह भारत था परतंत्र सुनो।
राम कृष्ण के पुत्र-पुत्रियाँ भूल गए थे मंत्र सुनो।।
फूट डालकर भारत में, अंग्रेज जुल्म नित करते थे।
आतंक बहुत था दुष्टों का, भारतवासी तब डरते थे।।
इस भारत में लाखों गउएं, रोजाना जाती थीं मारी।
भारतवीर सपूत बहादुर, उधमसिंह था बल धारी।।
जलियांवाला बाग एक था, सुनो शहर अमृतसर में।
जिसका सोने का मंदिर, अब नामी है दुनिया भर में।।
जलियां वाले बाग में इक, भारतियों ने सभा बुलाई थी।
बालक, तरुण, वृद्धजन जिसमें, बहुत देवियाँ आई थीं।।
डायर था अंग्रेज कमाण्डर, था जालिम अत्याचारी।
भारतवीर सपूत बहादुर, उधमसिंह था बल धारी।।
भारतियों को मार गिराओ, डायर ने था हुक्म दिया।
मानवता के दुश्मन ने, न जगदीश्वर का खौफ किया।।
मरे हजारों भारतवासी, हाय-हाय चिल्लाते थे।
लाशों का अम्बार लगा था, सुजन देख घबराते थे।।
सुनकर के यह समाचार, विस्मित थी तब दुनिया सारी।
भारतवीर सपूत बहादुर, उधमसिंह था बल धारी।।
दिलेर सिंह के सुत नरबंका, उधमसिंह ने जान लिया।
डायर दुश्मन है भारत का, ठीक तरह पहचान लिया।।
चाणक्य-चन्द्रगुप्त को था, आदर्श वीर ने मान लिया।
मारूँगा डायर पापी को, उसने दिल में ठान लिया।।
पहुँच गया लंदन में योद्धा, भारत माता थी प्यारी।
भारतवीर सपूत बहादुर, उधमसिंह था बल धारी।।
भरी सभा में डायर ने, भारत वीरों की निंदा की।
गरजा महावीर उधमसिंह, फौरन गोली मारी थी।।
बदला लिया दुष्ट पापी से, खुश हो फांसी खाई थी।
'नन्द लाल' उधमसिंह ने, भारत की शान बढ़ाई थी।।
बनो जवानो उधमसिंह से, देश भक्त योद्धा भारी।
भारतवीर सपूत बहादुर, उधमसिंह था बल धारी।।

• पं. नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

आ गया मोदी, आ गया मोदी

आ गया मोदी, आ गया मोदी, पूर्ण बहुमत पाकर आ गया मोदी।
मारे खुशी से उछल पड़ी है, देश की अधिकतर आबादी।
प्रसन्नता इतनी अधिक है, बान्धने से भी नहीं जा रही बान्धी।।
आ गया मोदी, आ गया मोदी, पूर्ण बहुमत पाकर आ गया मोदी।
अब देश इससे बच जाएगा, जो पहले हो रहा था विनाश और बर्बादी।
और अब देश उन्नत और समृद्धिशाली बनेगा, बात यही है सीधी-सादी।।
आ गया मोदी, आ गया मोदी, पूर्ण बहुमत पाकर आ गया मोदी।
अभी तक हमें मिली थी अधूरी आजादी, अब उसे बना देगा पूर्ण आजादी।
उखाड़ फेंकेगा, उन सभी गलत नीतियों को, जो थी हानिकारक और निहायत थोथी।।
आ गया मोदी, आ गया मोदी, पूर्ण बहुमत पाकर आ गया मोदी।
ये है एक त्यागी, तपस्वी, दृढ़ विश्वासी, साहसी और राष्ट्रवादी।
इनका जीवन रहा है पवित्र और संघर्षमय, नहीं है किसी व्यसन के आदी।।
आ गया मोदी, आ गया मोदी, पूर्ण बहुमत पाकर आ गया मोदी।
कालाधन वापस लाएगा, सम्पन्नता बढ़ेगी, पुनः पीएम बन गया मोदी।
सभी लोगों के पास रोजगार बढ़ेगा, नहीं कोई सोवेगा खाकर रोटी आधी।।
आ गया मोदी, आ गया मोदी, पूर्ण बहुमत पाकर आ गया मोदी।
प्रत्येक भारतीय अब देश हित की सोचेगा, नही सहन करेगा देश की होते हुए बर्बादी।
सभी सामान देश में बनेगा, चाहे हो मशीनरी, अन्न, चाहे हो कपड़ों में शुद्ध खादी।।
आ गया मोदी, आ गया मोदी, पूर्ण बहुमत पाकर आ गया मोदी।
पूरा देश मुस्करा उठा है, और देश का बच्चा, जवान, वृद्ध हो गया निहाल।
मेरा देश पुनः **'विश्व गुरु'** बनेगा, यह जान खुशी महसूस करता है 'खुशहाल'।।
आ गया मोदी, आ गया मोदी, पूर्ण बहुमत पाकर आ गया मोदी।

• खुशहालचन्द्र आर्य
१८०, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता, प. बंगाल
चलभाष : ८२३२०२५५९०, ९८३०१३५७९४

सम्माननीय शर्माजी, सादर नमस्ते दिनांक : १३.४.२०१९

अत्र कुशलम् तत्रास्तु

माह मार्च २०१९ में प्रकाशित हमारी मासिक पत्रिका वैदिक संसार में आपके द्वारा लिखित संपादकीय लेख **'कार्य दोजख के और सपने जन्नत के'** प्रकाशित हुआ, पढ़कर मन प्रफुल्लित हो गया। इस्लाम के मानने वालों का कच्चा चिट्ठा खोल कर समाज के सामने रख कर इस सम्प्रदाय का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करके, समाज की आँखें खोलने का जो भरपूर प्रयास आपने किया है, इसके लिए आपको साधुवाद। इस लेख को मेरे द्वारा तीन-चार बार पढ़ने के पश्चात् भी मन नहीं भरा है। इस लेख की जितनी भी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। इस लेख को यदि भारत के सभी सम्प्रदाय वाले पढ़े तो इस इस्लाम के आतताई इतिहास को पढ़-सुन समझकर, अपने विचारों में परिवर्तन अवश्य करेंगे, ऐसा मेरा मानना है। मेरा तो यहाँ तक मानना है कि इस्लाम को मानने वाले पढ़े लिखे लोग भी आपके इस संपादकीय को पढ़कर यदि मनन-चिंतन करेंगे तो उनके विचारों में आज नहीं तो कल निश्चित ही परिवर्तन अवश्य ही होगा क्योंकि आसुरी शक्तियाँ अधिक समय तक स्थायी नहीं रहती हैं।

● स्वामी हरीश्वराचनन्द सरस्वती, अहमदाबाद (गुजरात)

श्रावणी पर्व बेला पर विशेष प्रस्तुति

वेदोत्पत्ति विषय

• **देशराज आर्य**
पूर्व प्राचार्य, रेवाड़ी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१६३३७६०९

ओं तत् सत् वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ में मुंबई में आर्य समाज का गठन किया तो उन्होंने आर्य समाज के दस नियम भी बनाए। बुद्धिजीवी यह जानते हैं कि भारत–वर्ष का पूर्व नाम आर्यवर्त्त था, तथा यहाँ के सब निवासी आर्य थे। उक्त नियम आर्य समाज के दस नियमों में तीसरा नियम है जिसमें महर्षि दयानन्द ने वेदों को सत्य विद्याओं का पुस्तक माना है। वेद अपौरुषेय है किसी मनुष्य ने इन्हें नहीं रचा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी पुस्तक **'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका'** में वेदों की उत्पत्ति के विषय में वेदों में वर्णित मन्त्रों को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत कर पुन: जनसाधारण को अवगत कराया कि वेद ईश्वर कृत्य है।

याज्ञवलक्य महाविद्वान व महर्षि हुए हैं वे अपनी पण्डिता स्त्री मैत्रेयी को उपदेश करते हैं, आकाशादि से भी बड़ा सर्वव्यापक परमेश्वर है उससे ही ऋक , यजु: साम और अथर्व चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। उन्होंने आगे समझाया कि जैसे मनुष्य के शरीर से श्वास बाहर को आकर भीतर को जाती है उसी प्रकार सृष्टि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता है। और प्रलय में संसार में वेद नहीं रहते परन्तु उसके ज्ञान के भीतर वे सदा बने रहते हैं **'बीजांकुरवत्'**। जैसे बीज में अंकुर भीतर ही रहता है, वही वृक्ष रूप होकर फिर बीज के भीतर रहता है। इसी प्रकार वेद भी ईश्वर के ज्ञान में सब दिन बने रहते हैं, उसका नाश कभी नहीं होता, क्योंकि वह ईश्वर की विद्या है, इससे इनको नित्य ही सब मनुष्यों को जानना चाहिए।

चारों वेद नित्य एवं ईश्वर कृत्य हैं इस तथ्य की पुष्टि जैमिनि मुनि **'पूर्व मीमांसा'** में, गौतम मुनि **'न्यायशास्त्र' में**, पतंजलि **'योगशास्त्र'** में, कपिलाचार्य **'सांख्य शास्त्र'** में वेदों को ईश्वर कृत्य व नित्य मानते हैं। कणाद मुनि व वात्स्यायन मुनि ने इस कथन का प्रतिपादन किया है इन सबका मत है कि प्राचीन अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा और उनके बाद ब्रह्मादि पुरुष सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुए थे, उनसे लेकर हम लोग पर्यन्त वेदों का नित्य होना व ईश्वर द्वारा कृत्य होना ही जाना जाता रहा है। ईश्वर निराकार है, सर्वशक्तिमान है, उसमें ऐसा सामर्थ्य है कि मुख और प्राणादि साधनों के बिना भी मुख और प्राणादि के काम करने का अनन्त सामर्थ्य है। मुख के बिना मुख का काम और प्राणादि के बिना प्राणादि का काम वह अपने सामर्थ्य से यथावत कर सकता है।

ईश्वर ने सृष्टि की रचना की। सृष्टि के आरम्भ में पढ़ने और पढ़ाने की कुछ भी व्यवस्था नहीं थी तथा विद्या का कोई ग्रन्थ भी नहीं था। उस समय ईश्वर के किए वेदोपदेश के बिना विद्या के नहीं होने से कोई मनुष्य ग्रन्थ की रचना कर ही नहीं सकता था, क्योंकि सब मनुष्यों को सहायकारी ज्ञान में स्वतन्त्रता नहीं है और स्वाभाविक ज्ञान मात्र से विद्या की प्राप्ति किसी को नहीं हो सकती। ईश्वर हम लोगों का माता–पिता के समान है। हम सब उसकी प्रजा हैं। माता–पिता के समान सदैव हम पर कृपा करता है। माता–पिता जिस प्रकार हमारी रक्षा करते हैं वैसे ही ईश्वर भी सब मनुष्यादि सृष्टि पर कृपा दृष्टि सदैव रखता है तथा इसी उद्देश्य से हम लोगों को वेदों का उपदेश किया है। यह परमात्मा की हम पर बड़ी कृपा है। वेद विद्या से जो सुख हमें प्राप्त होता है वह ब्रह्माण्ड में उत्तम पदार्थों की प्राप्ति के हजारवें अंश के बराबर भी नहीं है।

वेदों के लिखे जाने के प्रश्न का उत्तर है कि हाथ पग आदि अंगों के बिना तथा काष्ठ, लोहा आदि सामग्री साधनों के बिना ईश्वर ने जगत् को रचा है, तो वैसे ही वेदों को भी सब साधनों के बिना रचा है क्योंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान है। उसमें ऐसी शंका उचित नहीं। आगे फिर स्पष्ट किया कि वेदों को पुस्तकों में लिखके सृष्टि के आदि में ईश्वर ने प्रकाशित नहीं किया था बल्कि मनुष्य देहधारी अग्नि, आदित्य और अंगिरा सत्यवादी विद्वान पुरुषों को वेदों का प्रकाश (प्रेरणा) दिया। उन चार मनुष्यों के ज्ञान के बीच में वेदों का प्रकाश करके उनसे ब्रह्मादि के बीच में वेदों का प्रकाश कराया गया। ईश्वर पक्षपात कदापि नहीं करता। न्यायकारी परमात्मा का साक्षात न्याय ही प्रकाशित होता है। अब जानना चाहिए कि उन्हीं चार पुरुषों का ऐसा पूर्व पुण्य था कि उनके हृदय में वेदों का प्रकाश किया गया।

वेदों में कोई इतिहास नहीं है। अन्य बाद में ऋषियों ने भी उन्हें नहीं रचा। ब्रह्मादि ने भी वेदों को पढ़ा है। सो श्वेताश्वतर आदि उपनिषदों में यह वचन है कि जिसने ब्रह्मा को उत्पन्न किया और ब्रह्मादि को सृष्टि के आदि में अग्नि के द्वारा वेदों का भी उपदेश किया है, उसी परमेश्वर के शरण में हम लोग प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार अन्य ऋषियों ने भी वेदों को पढ़ा क्योंकि जब मरीच्यादि ऋषि और व्यासादि मुनियों का जन्म भी नहीं हुआ था। उस समय भी ब्रह्मादि के समीप वेदों का ज्ञान वर्तमान था। इसमें मनु महाराज के श्लोकों की भी साक्षी है कि पूर्वोक्त अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ब्रह्माजी ने वेदों को पढ़ा था। सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त और ब्रह्मादि से ले के हम लोग पर्यन्त जिससे सब सत्य विद्याओं को सुनते आते हैं। इससे वेदों का **'श्रुति'** नाम पड़ा है। क्योंकि किसी देहधारी ने वेदों के बनाने वाले को साक्षात कभी नहीं देखा, इस कारण से जाना गया कि वेद निराकार ईश्वर से ही उत्पन्न हुए हैं। और उनको सुनते–सुनाते ही आज पर्यन्त सब लोग चले आते हैं। तथा अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चारों मनुष्यों को जैसे वाद्य यन्त्र को कोई बजाने वा काठ की पुतली को चेष्टा करावे, उसी प्रकार ईश्वर ने उनको निमित्त मात्र किया था क्योंकि उनके ज्ञान से वेदों में जितने शब्द, अर्थ और सम्बन्ध हैं वे सब ईश्वर ने अपने ही ज्ञान से उनके द्वारा प्रकट किए हैं। **वेद मन्त्रों में ऋषि:, देवता, छन्द व स्वर: होते हैं** अपने आप में सभी मन्त्र पूर्ण हैं। वेद मन्त्रों को ईश्वर के सिवाय और कोई बना नहीं सकता यही इन मन्त्रों की विशेषता है।

(शेष पृष्ठ २० पर)

श्रावणी पर्व क्यों मनाएँ?

● महात्मा चैतन्य स्वामी
महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर,
जनपद : मण्डी (हिमाचल प्रदेश)
चलभाष : ९४१८०५३०९२

यह एक ध्रुव सत्य है कि आज व्यक्ति भौतिकतावाद में इतना अधिक संलिप्त हो चुका है कि इसे प्राप्त करने के लिए वह विवेक व अविवेक की पहचान भी पूरी तरह से खो चुका है। अनैतिकता का सहारा लेकर व्यक्ति उन सुख-सुविधाओं को जुटाने में लगा हुआ है जिनसे तृप्ति मिलने वाली नहीं है। जो व्यक्ति को तृप्ति तक पहुँचा सकती है उस आध्यात्मिकता को सब भूलते चले जा रहे हैं। शारीरिक आवश्यकताओं की भूख इतनी अधिक बढ़ गई है कि व्यक्ति इससे आगे कुछ भी सोचने के लिए तैयार नहीं है। ये भौतिक प्रसाधन उसे अन्ततः तृप्ति देने वाले नहीं हैं इस सत्य का भी उसे पग-पग पर आभास होता रहता है मगर मृगतृष्णा रूपी भटकाव में वह निरन्तर भटकता चला जा रहा है। ये सांसारिक भोग उसे हर बार चेतावनी देते हैं कि हममें तुम्हें तृप्त करने की सामर्थ्य नहीं है मगर व्यक्ति बार-बार भोगों में डूबकर और अतृप्त होकर भी वहीं तृप्ति खोज रहा है जहाँ वह है ही नहीं। वह इस जीवन रूपी चौराहे पर खाली का खाली खड़ा है... अतृप्त है... रो भी रहा है... तड़प भी रहा है मगर पुनः पुनः भौतिक भोगों की आग में स्वयं को झोंकता भी चला जा रहा है। इसकी स्थिति ठीक इस प्रकार की हो गई है मानो कोई अपनी हथेली पर आग का अंगारा लेकर खड़ा हुआ हो, उसे छोड़ने के लिए भी तैयार नहीं है और उसकी जलन के कारण तड़प भी रहा हो। वह इतना भी ज्ञान नहीं रखता कि जलन देने वाली अग्नि को तो उसने स्वयं ही पकड़ रखा है। इस त्रासदी से आज अधिकतर लोग रूबरू हो रहे हैं। ऐसे ही लोगों को सम्बोधित करते हुए मानो वेद कहता है-

अन्ति सन्तं न जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।। (अथर्व. १०.८.३२)

अर्थात्- पास बैठे हुए को छोड़ता नहीं, पास बैठे हुए को देखता नहीं। अरे उस परम पिता परमात्मा के काव्य वेद को देख जो न कभी मरता है और न कभी पुराना होना है।

इस मन्त्र के भावों का यदि हम गहराई से मनन करें तो हमारे जीवन का कांटा ही बदल सकता है। संक्षिप्तता से इसका भाव हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि परमात्मा के काव्य अर्थात् प्रकृति और वेद ज्ञान के सम्यक अध्ययन से हम इस तथ्य को जान लें कि इस प्रकृति में सुख तो है मगर आनन्द नहीं है। यदि वास्तविक आनन्द का पान करना है तो शारीरिक एवं भौतिक सृष्टि में उसकी तलाश छोड़कर उसे आध्यात्मिकता में खोजना होगा। आत्मा को उसकी वास्तविक खुराक मिलने पर ही तृप्ति मिल सकती है। इसलिए वेद मन्त्र हमें चेतावनी देते हुए कह रहा है कि यदि तुम सुख और आनन्द चाहते हो तो परमात्मा के शाश्वत नियमों का अवलोकन करके आत्मा रूपी रथी के इस रथ को परमात्मा की ओर मोड़ना होगा। परमात्मा के सान्निध्य में जाकर ही तुझे परम शान्ति और तृप्ति मिल सकती है।

हमारा वेद सप्ताह मनाने का उद्देश्य भी यही होना चाहिए कि हम जीवन की पगडण्डी पर चलते-चलते अचानक जिन झाड़-झंखाड़ों में उलझ गए हैं उससे निकलने के लिए वेद ज्ञान को व्यवहारिकता में लाएँ। आज समाज, राष्ट्र और समूचा विश्व आतंक और भय के वातावरण से गुजर रहा है। कुछ वर्ष पूर्व जो सौहार्द और प्रेम का वातावरण था वह लुप्तप्राय ही हो गया है। मानव इतना हृदयहीन हो गया है कि जहाँ उसे दूसरों का उपकार करने में प्रसन्नता होती थी आज वह अपकार करके प्रसन्न होने लगा है। अलगाववाद, मजहबवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद और सम्प्रदायवाद के काले बादल हमारे चारों ओर मण्डरा रहे हैं। कब किसके घर पर बिजली गिर जाए कुछ पता नहीं। इन समस्याओं का समाधान खोजा तो जा रहा है मगर स्थिति यह है कि मरज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। हम अपने ही देश को लें। यहाँ पर प्रत्येक नेता या दल अपनी-अपनी वोट की राजनीति खेल रहा है, राष्ट्र के सामूहिक विकास की किसी को चिन्ता नहीं है। तुष्टिकरण और वोट की राजनीति ने ऐसी दीवारें खड़ी कर दी हैं जो दिन-प्रतिदिन और भी अधिक ऊँची होती चली जा रही हैं। चाहे व्यक्तिगत हो, परिवार और समाज तथा देश की हो, सभी समस्याओं का समाधान हमें वेद में मिल सकता है क्योंकि **वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।** सत्य एक ऐसी रामबाण औषधि है जिससे सभी रोग समाप्त हो सकते हैं। वेद हमें सत्य की कसौटी पर रहकर जीना सिखाता है। हमारे साथ समस्या यही है कि हमने झूठ का सहारा ले रखा है तथा एक झूठ को सही ठहराने के लिए हम एक और झूठ का सहारा ले रहे हैं। इस प्रकार इन झूठों के अम्बार तले हम दब गए हैं। हमें इस बात की गाँठ बान्ध लेना चाहिए कि झूठ के सहारे हमारा किसी भी क्षेत्र में उत्थान नहीं हो सकता है। यह ठीक है कि जैसे रोगी को कड़वी दवाई खाने में तो अच्छी नही लगती है मगर उसका परिणाम सुखद होता है, ठीक इसी प्रकार वेद के सत्य पर चलना हमें पहले तो बहुत अटपटा और अव्यवहारिक लग सकता है क्योंकि हमें अपने-अपने स्वार्थ के दायरों में सिमट कर जीने की आदत पड़ गई है मगर वास्तविकता यह है कि हमें अपने-अपने संकुचित दायरों से बाहर निकलकर सत्यता को स्वीकार करना होगा क्योंकि सत्य की खोज ही अन्ततः ठीक होती है। वेद हमें सत्य के साथ जुड़ने की ही प्रेरणा देता है।

सर्वप्रथम हम इसी बात पर चिन्तन करते हैं कि मानव-मानव के भीतर ये दूरियाँ क्यों बढ़ती चली जा रही है। **होता यह है कि अपने तप, त्याग और साधना से कोई भी व्यक्ति जब उच्चतम स्तरों को छू लेता है तो उसके बहुत से अनुयायी भी बन जाते हैं, मगर ये अनुयायी उन आदर्शों पर तो चल नहीं पाते हैं मात्र लकीर के फकीर बन जाते हैं।** उस महापुरुष ने जिस तप और त्याग से जीवन की ऊँचाइयों को छूआ था उस प्रक्रिया को नजर अन्दाज करके उस महापुरुष की ही पूजा-अर्चना शुरू कर दी जाती है। आज हमारे समाज में ऐसे पैगम्बरों, अवतारों और गुरुओं की मानों बाढ़ सी आ गई है। **गुरु होना तो बुरी बात नहीं मगर गुरुडम प्रथा ने इस समाज का बहुत अहित किया है। इससे मानवीय एकता को बहुत बड़ा धक्का लगा है तथा परमात्मा के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा होने लगी है।** इस व्यक्ति पूजा ने अन्य अनेक प्रकार की कुरीतियों को भी जन्म दिया है। इसी के आधार पर व्यक्तियों द्वारा बनाए गए अलग-अलग ग्रन्थों और उपदेशों को

प्रमाण मानने की अज्ञानता का भी जन्म हुआ है। अलग-अलग नामों और पूजा पद्धतियों ने एक मानव धर्म को अनेक सम्प्रदायों में बांट दिया है। यह एक अटल सत्य है कि कोई भी महापुरुष परमात्मा नहीं बन सकता है और अल्प ज्ञानी होने के कारण न ही उसके द्वारा दिया गया ज्ञान निभ्रान्त और पूर्ण सत्य हो सकता है। मगर आज जैसे मानो अन्धे ही अन्धों को रास्ता दिखा रहे हैं। इसीलिए अज्ञानता के गड्ढे में गिरकर चतुर्दिक विनाश हो रहा है। **तथाकथित इन भगवानों की भीड़ में परमात्मा कही खो गया लगता है और मत-मजहब एवं सम्प्रदायों की अज्ञानता में मानवीय गुणों का ह्रास हुआ है। एक सामूहिक सोच जिससे हमारी चतुर्दिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होना था, विलुप्त हो गई है।**

आज इस बात की परम आवश्यकता है कि मानव मूल्यों की पुनः स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच का विकास किया जाए जो वेद के आधार पर ही हो सकती है क्योंकि वेद पूर्णतः सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्य वाणी है। जिस परमात्मा को लोगों के व्यक्तिवाद-देवतावाद तथा स्थान विशेष की काराओं में कैद कर दिया है उसके बारे में वेद कहता है-

इशा वास्यमिदं सर्व यत्किं च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।। (यजु. ४०-१)

मन्त्र में आदेश दिया गया है कि हमें उस एक परम पिता की उपासना करनी चाहिए जो सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है। वही इस संसार का सृजनकर्ता और संचालक है। वही समस्त सम्पदाओं का स्वामी भी है इसलिए उसकी दी हुई वस्तुओं का अनासक्ति अर्थात् त्याग भाव से भोग करना अपेक्षित है क्योंकि अन्ततः यह सब कुछ उसी पिता का है।

मन्त्र में बहुत ही व्यवहारिक बात कह दी गई है। परमात्मा किसी स्थान विशेष में नहीं हैं बल्कि वह सर्वव्यापक है और समस्त सम्पदा का मालिक भी वही है। यह सब कुछ तो हमें मात्र प्रयोग करने के लिए दिया गया है ताकि हम अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकें। मन्त्र के भावों को आत्मसात् करने में जहाँ एक परमात्मा की आराधना का प्रचलन होकर मानवीय एकता को आधार मिलेगा। वही दूसरी ओर आज मेरा-मेरी का जो वातावरण बना है उससे भी समाज को मुक्ति मिल सकती है। लोभ के कारण ही व्यक्ति दूसरे की वस्तु को चुराने का प्रयास करता है। इसी लोभ के कारण वह सांसारिक वस्तुओं के साथ अपनी असक्ति भी जोड़ देता है जो व्यक्ति के दुःख का मुख्य कारण है। जब व्यक्ति मन्त्र के तथ्य को आधार मानकर अनासक्त भाव से समस्त वस्तुओं का प्रयोग करेगा तो यह अनासित्त ही उसे आनन्द और वास्तविक सुख तक पहुँचा सकेगी। त्याग तथा अलोभ की वृत्ति पैदा होने पर ही व्यक्ति परोपकारी बन सकता है। जो परोपकारी होगा उसका चिन्तन वयष्टि से समष्टि की ओर उन्मुख हो जाएगा तथा उसके हृदय में ही समूची मानवता के हित की बात आ सकेगी। फिर उसके हाथ किसी की सम्पत्ति चुराने या उसे मारने के लिए नहीं उठेंगे बल्कि सहयोग के लिए ही उसके हाथ आगे बढ़ेंगे। इस प्रकार की समस्त एषणाओं से ऊपर उठकर जब वह एक परमपिता की उपासना करेगा तो उसके भीतर इस सत्य का उदय भी होगा कि परमात्मा के नाम पर मैंने जो दीवारें खड़ी कर दी थी वे वास्तव में कितनी बचकानी और अहितकारी थी। वह इस संकीर्णता से ऊपर उठेगा कि मेरा मजहब, मेरी जाति, मेरा सम्प्रदाय या मेरा गुरु ही सबसे बड़ा है... इसके स्थान पर वह वास्तविक आध्यात्म की ऊँचाइयों को छूकर श्रेष्ठ मानव बनकर अपना और समूची मानवता का हित करने की दिशा में स्वाभाविक रूप से अग्रसर हो सकेगा। वह परमात्मा ही वास्तव में सृष्टि का सृजन वाला और मालिक है वेद में अन्य अनेक ऐसे बहुत से मन्त्र हैं यथा- **भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।** (यजु. १३-४) अर्थात् समस्त प्राणीमात्र का पति (स्वामी) वह परमपिता परमात्मा ही है और वह अनेक नहीं बल्कि एक है और एक ही रहेगा... वेद की यह शिक्षा हमें एकता के सूत्र में बान्ध सकती है और भगवानों के नाम पर बंटने की कुप्रवृत्ति से मुक्ति दिला सकती है। भगवानों का भगवान और गुरुओं का गुरु वह परमात्मा ही है। एक वही उपास्य है और उसी की उपासना करनी चाहिए। लोक-परलोक की उन्नति का आधार वही है... व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की सुख-शान्ति एवं समृद्धि का यही मूल मन्त्र है। हम सभी एक ही जाति अर्थात् मनुष्य जाति के हैं और वही परमात्मा हमारा पिता है।

हम कैसे पुत्र हैं जो पिता को भी भूलते जा रहे हैं। वेद में बहुत ही सुन्दर शब्दों में कहा गया है-

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतकतो बभूविथ।
अथा ते सुम्नमीमहे।। साम. ४-२-१३-२
स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।।
ऋ. १-१-९

अर्थात् वह परमात्मा माता-पिता ही हमारा और सुख शान्ति तथा प्रसन्नता देने वाला है। वह हमारा ऐसा पिता है जिसकी पावन गोद हमें सहजता से उपलब्ध है। वह निरन्तर अपने स्नेह की हम पर वर्षा कर रहा है... मात्र उसे पहचानकर उसकी गोद में बैठ जाने की जरूरत है मगर पता नहीं हमारे भीतर कब विवेक पैदा होगा तथा हम भौतिकवाद की इस अन्धी दौड़ से मुक्त होकर उस आनन्दमयी गोद में बैठकर चिर तृप्ति को प्राप्त करेंगे। ऐसा होने से ही व्यक्ति के भीतर **वसुधैव कुटुम्बकम्** की भावना पैदा हो सकेगी तथा मानववाद की स्थापना होकर प्रेम और सौहार्द की पवित्र गंगा बहेगी। **जिस दिन संसार के सभी व्यक्ति अपने उस एक असली पिता को पहचान जाएँगे उसी दिन व्यक्ति मजहब वाद से मुक्त होकर एक वैदिक धर्म की शरण में आकर आनन्दित हो सकेगा।**

हमारा प्रत्येक पर्व एक सन्देश देने वाला होता है तथा हमें वह सन्देश आत्मसात् करने की जरूरत है। अतः श्रावणी पर्व की सार्थकता इसी में है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को सत्य के पक्ष में करके आध्यात्मिकता की ऊँचाइयों को छूकर अपना और समूचे विश्व के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करें। हम वेद के आधार पर ही आज की दिशाहीन मानवता को कुछ स्वर्णिम आयामों तक पहुँचाने की दिशा में कुछ सार्थक कार्य करके पुण्य के भागी बन सकते हैं। ■

आर्य समाज का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.) का वार्षिक चुनाव २०१९-२० सौहार्दपूर्ण वातावरण में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक श्री रमेशचन्द्रजी गोयल की अध्यक्षता में दिनांक १२.५.२०१९ को रविवारीय सत्संग के पश्चात् सर्वसम्मति से निर्विरोध सम्पन्न हुआ। **डॉ. दक्षदेव गौड़ प्रधान, डॉ. विनोद अहलुवालिया मंत्री तथा ठाकुर हरिसिंह आर्य को कोषाध्यक्ष** पद हेतु चुना गया। तत्पश्चात् चुनाव अधिकारी ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को आर्य समाज की पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। अन्त में नवनिर्वाचित प्रधान डॉ. दक्षदेव गौड़ ने उपस्थित सभी सभासद एवं सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

गतांक पृष्ठ २३ से आगे

सैद्धान्तिक-चर्चा, भाग-४

● पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री
सत्य सनातन धर्म प्रबोधक मण्डल
पुष्कर बंगलोज, कर्णावती (गुजरात)
चलभाष : ९७२४७०७१२६

सद्ज्ञान पाप्ति की दृष्टि से **'सैद्धान्तिक- चर्चा'** को विशेष उपयोगी मानकर श्री **'जिज्ञासु'** जी निश्चित समय पर श्री महाशय **'मनीषी'** जी के यहाँ पहुँच गए और बोले- कृपया- आज आप पहले मुझे यह बताइये कि **'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों है?'**

मनीषी : आपके इस महत्वपूर्ण प्रश्न का मैं संक्षिप्त उत्तर दे रहा हूँ, आप ध्यान से सुनिए-

ईश्वरीय ज्ञान की पहिचान

जो सार्वजनिक सार्वभौम, निर्भ्रान्त, स्वत: प्रमाण, तर्क-युक्ति-न्याय-बुद्धि-विज्ञानसंगत, सृष्टिक्रम एवं प्रत्यक्षादि प्रमाणों के अनुकूल हो, जिसे आदि मानव पा लेते हैं, जिसका सम्बन्ध किन्हीं मनुष्यों की बनाई भाषा तथा किसी वर्ग- समुदाय विशेष से नहीं हुआ करता, जिसके द्वारा तृण से लेकर परमेश्वर तक का यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो सके, अर्थात् हमारे लोक-परलोक की सिद्धि में सहायक आवश्यक सम्पूर्ण जानकारी जिसमें विद्यमान हो, वही ईश्वरीय ज्ञान कहलाता है और यह विशेषता केवल वेद में ही है। अत: **वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है।**

सम्भवतया आपको ज्ञात होगा- भाषा और इतिहास के सभी विद्वानों ने यह एकमत से स्वीकार कर लिया है कि संसार की सर्व प्राचीन पुस्तक **वेद** ही है। **वेद** के अतिरिक्त अन्य समस्त पुस्तकों के साथ उनकी जन्मतिथि लिखी है, जबकि वेद **ईश्वरीय ज्ञान** होने के कारण अनादि है।

जिज्ञासु : मैंने सुना है- वेद ऋषियों के लिखे हुए हैं, अत: ये अनादि कैसे हो सकते हैं? अर्थात् वेदों के रचयिता विभिन्न ऋषि हैं।

मनीषी : यह मान्यता सत्य आधारित नहीं है, ऋषि वेद के लेखक नहीं, प्रचारक हैं। जिन-जिन मन्त्रों के अर्थों को जिन-जिन ऋषियों ने समझा वे मन्त्र उन्हीं के नाम से जाने जाते हैं। **वेद अपौरुषेय** हैं, वेद मन्त्रों की रचना मनुष्यों द्वारा नहीं की जा सकती। यही कारण है कि मानवकृत अन्य ग्रन्थों की भाँति वेद में प्रक्षिप्त नहीं हो पाया।

जिज्ञासु : आप ईश्वर को निराकार मानते हैं, तो यह बताएँ उसने बिना हाथों के वेद कैसे लिख दिए?

मनीषी : पवित्र अन्त:करण वाले विशिष्ट आदि मानव सर्वव्यापक ईश्वर से वाक्-शक्ति के साथ वेदज्ञान प्राप्त कर अन्य मनुष्यों को सुनाते और फिर वह ज्ञान कालान्तर में ऋषियों द्वारा लेखबद्ध होता है, ईश्वर स्वयं अपना ज्ञान सुनाता-लिखता नहीं।

जिज्ञासु : आपके कथनानुसार ईश्वरीय ज्ञान वेद को प्रचारित-प्रसारित और लेखबद्ध मनुष्य करते हैं, किन्तु हमारे मान्य अठारह पुराण स्वयं ईश्वर ने महर्षि वेदव्यास का शरीर धारण करके अपने हाथों से लिखे। और ईश्वर के अवतार श्री कृष्ण ने अपने प्रिय सखा अर्जुन को श्रीमद् भगवद्गीता का ज्ञान सुनाया, तो क्या इन्हें ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ नहीं माना जाए?

आर्षबोध, भाग-१४

१. मानव तनधारी जीव माँ के गर्भ से जब बाहर आते हैं तब रोने की सी आवाज करते हैं। इनकें अनेक जीव ऐसे होते हैं जो अपने जीवनकाल में अनेक बार स्वयं रोते और दूसरों को दु:खी करते और उन्हें रुलाते रहते हैं।

२. मानव तन प्राप्त करना मात्र जीव के लिए कोई बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं है। सावधान रहो कि अपने जीव के अमूल्य क्षणों का सदुपयोग करना जन्म की सार्थकता है।

३. मानव तन प्राप्त क्यों हुआ यह जानकारी आपको होनी ही चाहिए और जिस उद्देश्य को पाने के लिए मनुष्य जन्म लिया उसे भूल जाना महान् मूर्खता है। क्योंकि ऐसा अवतार बहुत आसानी से नहीं मिल सकता।

मनीषी : लगता है आपको पुराणों के सम्बन्ध में यथार्थ जानकारी नहीं है। अन्यथा आप इस मान्यता का समर्थन नहीं करते कि अठारह पुराण महर्षि वेदव्यास ने लिखे हैं। क्योंकि इन पुराणों की अनेक मान्यताओं में परस्पर मेल नहीं है, आप पढ़कर देख लीजिए। और फिर महर्षि वेदव्यास तो वर्तमान सृष्टि के २८वें द्वापरयुग में हुए थे। इससे पूर्व २८ संतयुग, २८ त्रेतायुग, २७ द्वापरयुग और २७ कलियुग बीत गए। इसका अर्थ है इतने लम्बे समय तक मानव समुदाय ईश्वर के ज्ञान से वञ्चित रहा, अर्थात् अज्ञान अन्धकार में भटका, यह मानना पड़ेगा।

आपको यह भी ज्ञात होना चाहिए कि श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के 'भीष्मपर्व' का एक भाग है, कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं। आप कल संस्कृत भाषा समझने वाले किन्हीं विद्वानों को अपने साथ लाएँ तो मैं सप्रमाण यह सिद्ध कर दूँगा कि पुराण और श्रीमद्भगवद्गीता ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ नहीं हैं।

मैंने अभी कुछ देर पहले आपको बताया था कि ईश्वर का ज्ञान सार्वकालिक होता है। जबकि पुराणादि के साथ समय की सीमा निश्चित है। इनकी सभी मान्यताएँ सार्वभौम, निर्भ्रान्त और स्वत: प्रमाण नहीं है। इनमें तर्क-युक्ति-न्याय-बुद्धि-विज्ञान, सृष्टिक्रम एवं प्रत्यक्षादि प्रमाणों के विरुद्ध मान्यताओं की भरमार है। अत: इन्हें ईश्वरीय ज्ञान मानना और बताना अज्ञानता का सूचक है।

जिज्ञासु : हमारी गत तीन दिनों की **'सैद्धान्तिक चर्चा'**से सम्बन्धित जानकारी मैने अपने यहाँ के विद्वानों को दी, और उन्हें आपसे मिलने को कहा तो वे आपके पास आने के लिए तैयार नहीं हुए। अत: आप हिन्दी भाषा में लिखे कुछ ऐसे उदाहरण दीजिए जिससे कि पुराण और श्रीमद्भगवद्गीता को ईश्वरीय ज्ञान मानने वाले मुझ जैसे प्रत्येक व्यक्ति को अपने विश्वास पर पुन:

विचार करने के लिए विवश होना पड़े।

मनीषी : मैं चाहता हूँ इस विषय में आपके विद्वान् मुझसे चर्चा करें, और आप सुनें। जिससे कि आपको पौराणिक मान्यताओं की वास्तवकिता का ज्ञान हो सके। आप यत्न कीजिए कि आपके विद्वान इस **'सैद्धान्तिक चर्चा'** में भाग लें। यदि वे स्वीकृति दें तो मैं स्वयं उनकी सेवा में उपस्थित हो सकता हूँ। इसलिए कि आत्मीयता के साथ समझने–समझाने की दृष्टि से किया गया वार्तालाप हिताकारी होता है।

आपको यह विदित ही होगा कि श्रीमद्भगवद्गीता एक काव्य है। जब कुरुक्षेत्र में कौरव–पाण्डव सेना युद्ध के लिए आतुर हो रही थी उस समय श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को यह सात सौ श्लोकों की कविता सुनाना क्या आपको बुद्धिसंगत प्रतीत होता है? आप थोड़ा विचार कीजिए– श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय ३ श्लोक १३ और १४ में लिखे अनुसार विषादग्रस्त अर्जुन के लिए श्रीकृष्ण को यह कहने की क्या आवश्यकता थी कि–

'यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से मुक्त हो जाते हैं और जो पापी लोग अपना शरीर–पोषण करने के लिए ही अन्न पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं।

सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है।''

इसी प्रकार से अध्याय ६ के १०वें, ११वें और १२वें श्लोकों में यह कहने का क्या औचित्य था कि–

''मन और इन्द्रियों सहित शरीर को वश में रखने वाला, आशारहित और संग्रह रहित योगी अकेला ही एकान्त स्थान में स्थित होकर आत्मा को निरन्तर परमात्मा में लगाए।

शुद्ध भूमि में जिसके ऊपर क्रमश: कुशा, मृगछाला और वस्त्र बिछे हैं, जो न बहुत ऊँचा है, और न बहुत नीचा, ऐसे अपने आसान को स्थिर स्थापन करके उस आसन पर बैठकर चित्त और इन्द्रियों की क्रियाओं को वश में रखते हुए मन को एकाग्र करके अन्त:करण की शुद्धि के लिए योग का अभ्यास करें।''

आप श्रीमद्भगवद्गीता पढ़ते रहते हैं, तो आपको ज्ञात होगा, इसके १७वें अध्याय के ८वें, ९वें और १०वें श्लोक में सात्विक, राजस तथा तामस पुरुषों के प्रिय आहार का वर्णन है, आप ध्यान दीजिए। उस समय भोजन नहीं, युद्ध करना था। श्रीमद्भगवद्गीता में ऐसे अप्रासंगिक उल्लेख अनेक स्थानों पर विद्यमान है। इतना ही नहीं, इसमें पूर्वापर विरोध भी है। उदाहरणार्थ अध्याय ४ के ५वें श्लोक में श्रीकृष्ण कहते हैं कि–

''हे, परंतप अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं। उन सब को तू नहीं जानता, किन्तु मैं जानता हूँ।'' इसके आगे अध्याय ७ श्लोक २५ में बताते हैं कि–

''अपनी योगमाया से छिपा हुआ मैं सबके प्रत्यक्ष नहीं होता, इसलिए यह अज्ञानी जनसुमदाय मुझ जन्म रहित अविनाशी परमेश्वर को नहीं जानता अर्थात् मुझको जन्मने–मरने वाला समझता है।''

अध्याय १८ के ६२वें श्लोक में श्रीकृष्ण अपने प्रिय सखा अर्जुन से कहते हैं कि ''हे भारत! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।''

फिर ६६वें श्लोक में कहते हैं कि ''सम्पूर्ण धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्य–कर्मों को मुझ में त्याग कर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान, सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर।'' अब आप स्वयं अपनी बुद्धि से निर्णय कीजिए, क्या इसे ईश्वरीय ज्ञान माना जाए?

आप यह और जान लीजिए कि महर्षि वेदव्यास, श्रीकृष्ण आदि ईश्वर के अवतार नहीं थे, क्योंकि ईश्वर का अवतार नहीं हुआ करता।

जिज्ञासु : हमारे सनातन धर्म के मान्य ग्रन्थों में जिन २४ अवतारों का उल्लेख है उसे क्या आप वेदानुकूल नहीं मानते?

मनीषी : प्रथम दिवस की चर्चा में मैं आपको बता चुका हूँ कि आप सनातनधर्मी नहीं, पौराणिक मतानुयायी हैं। अभी आपने अपने आपको पौराणिक विश्वासी बताया भी है। सनातन तो वैदिक धर्म है और वेद प्रतिपादित मान्यताओं से सम्बन्धित किसी भी ग्रन्थ में कहीं ईश्वर के अवतार का वर्णन नहीं है। अत: अवतारवाद का सिद्धान्त वेदानुकूल नहीं माना जा सकता।

ईश्वर अचल–अटल, सर्वव्यापक, निर्विकारी हैं, जबकि कोई भी देहधारी प्राणी चलता–टलता, एकदेशी और विकारी होता है। प्रथम दिवस की **'सैद्धान्तिक चर्चा'** में मैंने आपको ईश्वर का जो वैदिक स्वरूप बताया उसके अनुसार अवतारवाद की मान्यता पुष्ट नहीं होती। आप विश्वास कीजिए ईश्वर के अवतारों का उल्लेख वेद विरुद्ध पुस्तकों में ही पाया जाता है, आर्षग्रन्थों में नहीं।

जिज्ञासु : हमने तो अब तक यही सुना–पढ़ा है कि भक्तों का दु:ख दूर करने के लिए ईश्वर विभिन्न रूपों में आता है।

मनीषी : आप केवल सुनने–पढ़ने तक ही सीमित रहते हैं, विचार नहीं करते। जब ईश्वर सर्वव्यापक है तो बताइए वह आता कहाँ से है? देखिए! मेरे पास गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित मझले आकार की ३२वें संस्करण वाली श्री रामचरितमानस है। असके बालकाण्ड में पृष्ठ १४९ पर लिखा है– **'हरि व्यापक सर्वत्र समाना।...** मैं तो यह जानता हूँ कि भगवान सब जगह समान रूप से व्यापक है'' और फिर इसी काण्ड में आगे १५३वें पृष्ठ पर लिखा है– **''जा दिन तें हरि गर्भहिं आए।** जिस दिन से श्री हरि (लीला से ही) गर्भ में आए।''

गोस्वामी तुलसीदास जी एक स्थान पर ईश्वर को सर्वव्यापक बताते हैं, और दूसरे स्थान पर गर्भ में प्रविष्ट कराते हैं। आप लोग इस प्रकार के पूर्वापर विरोधी विचार– सुनते–पढ़ते रहते हैं, इसलिए सत्यासत्य का निर्णय नहीं कर पाते।

जिज्ञासु : यदि ईश्वर अवतार न ले तो धर्मात्माओं की रक्षा और दुष्टों का नाश कैसे हो?

मनीषी : सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान ईश्वर अवतार लिए बिना सत्पुरुषों का संरक्षण और दुर्जनों का विनाश नहीं कर सकता, यह मान्यता कहां तक उचित है? आप थोड़ा विचार तो कीजिए। जो शरीर धारण किए बिना सृष्टि की रचना और प्रलय कर सकता है, उसे किसी व्यक्ति को मारने के लिए शरीर का सहारा लेना पड़े, यह उसकी महानता नहीं मानी जा सकती। इस अवतारवाद के काल्पनिक विश्वास ने मानव समुदाय को ईश्वर का वास्तविक स्वरूप समझने के योग्य ही नहीं रखा।

(शेष भाग आगामी अंक में...)

वैदिक साहित्य की विशेषताएँ

● **मोहनलाल दशौरा आर्य**
नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

वैदिक साहित्य हमारी सनातन संस्कृति और भारतीय दर्शन के अनुरूप हैं।

आज शिक्षित पढ़े–लिखे लोगों से भी अगर पूछा जाए कि आपके धर्म ग्रन्थ कौन से हैं? तो रामायण, गीता या पुराणों का नाम बताएँगे। चार वेद का नाम भी नहीं जानते। ठीक है, वेद संस्कृत भाषा में हैं और संस्कृत न जानने वाले मेरे जैसे हजारों हैं। परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदभाष्य और सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रन्थ लिखकर हमारा काम आसान कर दिया। अब तो वेदों की व्याख्या कई विद्वानों ने सरल हिन्दी में कर दी है। स्वयं स्वामीजी गुजराती भाषी होते हुए भी प्रवचन, उपदेश, लेखन हिन्दी में ही करते थे। अब तो हिन्दी में ढेर सारा साहित्य मिल जाएगा। आनन्द स्वामी के प्रवचनों का संकलन भी कम ज्ञानवर्धक नहीं है। वैदिक सत्यनारायण कथा, घोर घने जंगल में, यह धन किसका है, मन की बात, एक ही रास्ता, मानव और मानवता, भक्त और भगवान, सुखी गृहस्थ, शंकर और दयानन्द, वैदिक तत्वज्ञान, प्रभु दर्शन, दो रास्ते आदि पुस्तकें वेद मन्त्रों की व्याख्या सरल भाषा में दृष्टान्त से भरी पड़ी है। हमारी पढ़ने में रुचि होना चाहिए। वैदिक साहित्य अथाह ज्ञान भण्डार है। वैदिक साहित्य व दर्शन की मुख्य विशेताएँ इस प्रकार हैं–

१. वेद और वैदिक दर्शन, पूर्णतया वैज्ञानिक और सृष्टिक्रम अनुसार हैं। आदिकाल से आज तक सत्य पर टिका है। कोई संशोधन कभी भी सम्भव नहीं है।

२. वैदिक दर्शन और साहित्य देश काल, जाति, सम्प्रदाय विशेष के बन्धन में नहीं है। सृष्टी के सभी प्राणियों को समान रूप से लाभकारी है। **सर्वे भवन्तु सुखीनः** का दर्शन है।

३. वैदिक दर्शन व साहित्य धर्म, मानवता, भाईचारे का सन्देश देता है। **वसुधैव कुटुम्बकम्** अर्थात् सारा विश्व हमारा परिवार है।

४. वैदिक दर्शन जीवन मूलक है चरित्र के साथ जीना सिखाता है।

५. वैदिक दर्शन सम्पूर्ण सत्य का भण्डार है। अन्धविश्वास त्याग के साथ भोग, आडम्बर और पाखण्ड के लिए कोई स्थान नहीं।

६. वैदिक दर्शन पूर्णतया पारदर्शी है। जैसा करो वैसा भरो। (पुनर्जन्म और कर्म फल पर आधारित है। जो ईश्वर आधीन है।

७. वैदिक दर्शन और साहित्य के स्वाध्याय से तार्किक बुद्धि का विकास होता है। जिज्ञासु (पाठक) सत्य और असत्य का निर्णय करने की योग्यता प्राप्त कर लेता है।

८. **वेद का दर्शन–** सर्वोच्च सत्ता एक ही सर्वव्यापक, निराकार, ईश्वर को सृष्टी का निर्माता, पालनकर्ता, संचालक व संहारकर्ता सर्वशक्तिमान और पूर्ण न्यायकारी मानता है। वैदिक ज्ञान दर्शन और साहित्य सर्वोपरि है। चिन्तन, अध्ययन से देख लो, परख लो। यह बात दुराग्रह से नहीं अनुभव और स्वाध्याय से बता रहा हूँ। और भी कई विशेषताएँ हैं परन्तु मैं अल्पज्ञ हूँ। यह कह सकता हूँ कि जैसे **'कारी कामरी चढ़े न दूजो रंग'।** जो एक बार वैदिक साहित्य (ज्ञान, विज्ञान, धर्म, दर्शन) का रसपान कर लेता है। उसे दूसरा कुछ भी अच्छा नहीं लगता। वैदिक संसार पत्रिका एक मिसाल है।

अन्य सम्प्रदाय, सन्त, विद्वान जो वेद या वेद आधारित ज्ञान, धर्म, दर्शन, उपदेश करते हैं, वह प्रशंसनीय हैं परन्तु जो पेट या पेटियाँ भरने के लिए अवतारवाद में डालकर महापुरुषों के मनमााने ढँग से चरित्र चित्रण कर जनभावनाओं का शोषण करते हैं। त्याग की शिक्षा देकर परिग्रह करते हैं, साधना की बजाए साधनों में लिप्त हैं उनका काम भ्रमित करना बन गया है। गंगा स्नान कर लो, कथा सुन लो, सब पाप कट जाएँगे। गुरु को साध लो मोक्ष करा देंगे, एक सत्संग हजार यज्ञ बराबर, गुरु नहीं करने वाला पापी, नरक गामी, मोक्ष नहीं हो सकता। ऐसे गुरुओं का हश्र भी हम देख ही रहे हैं। अफसोस आज मंदिर बनाना, मूर्ति स्थापना, प्राण प्रतिष्ठा करना, पूजा–अभिषेक, पाठ पारायण और भोग (५६) ही धर्म बन गया। महापुरुषों के आदर्श चरित्र से हमारे अन्दर व समाज में क्या बदलाव आया? इस पर कोई नहीं सोचता। आँखों पर पट्टी बान्धकर यात्राएँ की जा रही हैं। फलत: ज्यों–ज्यों दवा की रोग बढ़ता ही गया। समाज में जितने अधिक धार्मिक आयोजन हो रहे, नैतिक स्तर उतना ही गिरता जा रहा है कारण कि हम प्रेक्टिकल नहीं हैं। यह कटु सत्य है कोई माने या ना माने। साबुन, सोड़ा, मिट्टी, राख, डिटर्जेंट मैल धोने के लिए होते हैं। कपड़े, बर्तन, शरीर साफ न हो तो किस काम के। इसी तरह शास्त्र, सन्त, उपदेश, दर्शन या साहित्य यदि मन का मैल न धो सके, दुर्गुण दूर न कर सके तो केवल पाठ पारायण, नकल या औपचारिकता मात्र का क्या औचित्य। गहन चिन्तन करना चाहिए।■

राखी का त्योहार

● **ज्योत्स्ना निधि**
न्यू बाराद्वारी, साकची जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष : ९९३४५२१९५४

आया राखी का त्योहार,
लाया खुशियों का उपहार।
रंग–बिरंगी राखी आई,
मेरे मन में खुशियाँ छाई।
राखी देखी प्यारी– प्यारी,
लाल–गुलाबी सबसे न्यारी।
थाम कलेजा बैठ गई मैं,
दूर हुई, मजबूर हुई मैं।
भैया मेरे दूर देश में,
मैं बैठी रोती परदेश में।
कैसे राखी बाँधू, भैया,
कैसे मैं आ जाऊँ भैया।
कौन सुनेगा किसे सुनाऊँ,
कैसे मैं सन्देश पढ़ाऊँ।

पंख लगा दो मुझ में भगवान,
मैं चिड़िया बन जाऊँ भगवन।
उड़ते–उड़ते, मैं नील गगन में,
भैया के घर जाऊँ गगन में।
आँसू की लड़ियों में
गूंथे हैं राखी का प्यार,
दूर देश से भेज रही हूँ
भैया, अपना प्यार।
राखी के धागों से
गूंथा है मेरा स्नेहाशीष,
सावन–भादो बनकर बरसे,
ईश्वर का आशीष।

वेद वाणी

मुझे बुराइयों से मुक्त तथा सद्गुणों से युक्त कर दो

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव।

(ऋग्वेद मण्डल ८, सूक्त ८२, मन्त्र ५)

पदच्छेद– *विश्वानि देव सवितः दुरितानि परा सुव।*
यद् भद्रं तत् नः आसुव।

हे सवितः देव! न : विश्वानि दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तत् नः आसुव।

अर्थ– हे **सवितः** = सबको उत्पन्न करने वाले, **देव** = परमात्मा, **नः** = हमारी, **विश्वानि** = सम्पूर्ण, **दुरितानि** = बुराइयों, दुर्गुणों को, **परासुव** = दूर कर दीजिए तथा **यद्** = जो, **भद्रं** = कल्याणकारी गुण हैं, **तत्** = वे, **नः** = हमें, **आसुव** = दीजिए।

परमेश्वर से उपासक प्रार्थना करते हुए निवेदन करता है कि हे सकल प्राणियों के उत्पत्तिकर्ता परमेश्वर! मेरे समस्त दुर्गुणों को दूर हटा दीजिए तथा जो कल्याणकारी गुण हैं वे मुझे दीजिए। आप मुझे सब प्रकार की बुराइयों से दूरकर अच्छाइयों से युक्त कर दीजिए।

विशेष– ८–८ वर्णों के ३ चरण (पाद) होने के कारण तथा कुल वर्ण २४ होने के कारण यह मन्त्र भी गायत्री मन्त्र है।

● आचार्य राम गोपाल सैनी
फतेहपुर शेखावाटी, जनपद : सीकर, (राजस्थान)
चलभाष : ८८८७३९३७१३

प्रवेश सूचना

वैदिक उपदेशक विद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.) का प्रथम सत्र १४ जून २०१८ को प्रारम्भ हुआ था। इसमें १९ विद्यार्थियों ने वर्णोच्चारण शिक्षा, प्रारम्भिक व्याकरण, गीता, सांख्यदर्शन, सत्यार्थ प्रकाश एवं दैनिक मन्त्रों का अध्ययन और सन्ध्या–हवन–प्राणायाम–ध्यान का क्रियात्मक अभ्यास किया। अब द्वितीय सत्र के लिए विद्यार्थी आवेदन कर सकते हैं।

आवेदक की न्यूनतम अर्हताएँ : १. न्यूनतम आयु १५ वर्ष है, अधिकतम आयु सीमा नहीं है, २. हाईस्कूल उत्तीर्ण होना चाहिये, ३. शरीर स्वस्थ और निरोग हो, ४. संयमी, चरित्रवान् और सदाचारी हो, ५. वेद का विद्वान् एवं प्रचारक बनना चाहे; अथवा पौरोहित्य, योग–प्रशिक्षण एवम् आर्य–संगठन में जीवन लगाना चाहे।

अध्यापन के विषय : १. संस्कृत व्याकरण, २. भारतीय दर्शन, ३. वेद (उपनिषद् सहित), ४. ऋषि दयानन्द, ५. योग

सम्पर्क : **वैदिक उपदेशक विद्यालय**
१३९३, एल्डिको उद्यान–२, रायबरेली रोड, लखनऊ–२२६०२५
चलभाष : ७३७६९८७९३१

गुरुकुल के विद्यार्थी का भविष्य सँवारने हेतु दत्तक पुत्र के रूप में किया स्वीकार

वेद योग महाविद्यालय (गुरुकुल) केहलारी, जनपद : खण्डवा (म.प्र.) में विगत पाँच वर्षों से अध्ययनरत १८ वर्षीय विद्यार्थी सन्तोष ब्यावरे सुपुत्र श्री भीमाशंकर ब्यावरे, निवासी : लातूर (महाराष्ट्र) को जलगाँव निवासी निःसन्तान दम्पत्ति चैतन्य किशनजी रड़े धर्मपत्नी श्रीमती लता रड़े ने दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार किया।

वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित रड़े दम्पत्ति का जीवन्त सम्पर्क गुरुकुल केहलारी से है। आप गुरुकुल एवं गायों की सेवार्थ उदार भाव से सहयोग हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। आपकी मनोभावना थी कि आर्थिक रूप से कमजोर किसी परिवार के बालक को दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार कर उसकी उच्च शिक्षा का भार व्रहन किया जाए। इस हेतु आपने गुरुकुल केहलारी के सन्तोष ब्यावरे का चयन कर सन्तोष के जन्मदाता माता–पिता की स्वीकृति–सहमति प्राप्त की। पश्चात् गुरुकुल में ही गुरुकुल के संस्थापक एवं संचालक आचार्य सर्वेशजी के ब्रह्मत्व में वैदिक मन्त्रोच्चार द्वारा अग्निहोत्र कर गोद लेने की प्रक्रिया को पूर्ण किया। वर्तमान में सन्तोष कक्षा १२वीं में अध्ययनरत है। रड़े दम्पत्ति सन्तोष को आयुर्वेदिक नेचुरोपैथी पद्धति से पशु चिकित्सक बनाना चाहते हैं। इस प्रकार रड़े दम्पत्ति ने अपनी सन्तान की कमी को तो पूर्ण किया ही, अपितु गुरुकुल के विद्यार्थी को गोद लेकर अपनी वैदिक विचारधारा के अनुकूल बालक की उच्च शिक्षा का प्रबन्ध कर अपने धन के सदुपयोग के साथ गुरुकुल के विद्यार्थी का भविष्य सँवारकर उसे पशु चिकित्सक, वह भी प्राचीन और वैदिक पद्धति से पशुओं विशेषकर गायों की सेवा का त्रिस्तरीय अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। **श्रीमान रड़ेजी वैदिक संसार के संरक्षक महानुभाव हैं। वैदिक संसार परिवार आपके द्वारा इस उत्कृष्ट सेवा व ध्येय के लिए साधुवाद देता है। आपके प्रेरणा स्रोत आचार्य सर्वेशजी भी एक त्यागी–तपस्वी व्यक्ति हैं जो अहर्निश सेवा कार्यों में लगे हुए हैं। तदर्थ हार्दिक आभार।**

पृष्ठ १४ का शेष भाग...

वेद मन्त्रों का अर्थ भी ऋषि–मुनि ही योग विद्या के आधार पर समझ सकते हैं। अन्य मनुष्यों का यह सामर्थ्य नहीं। अनार्ष ग्रन्थों में महीधर व सायणाचार्य जैसे अविद्वान मनुष्यों ने वेद मन्त्रों का मनमाना अश्लील अर्थ किया है, जिससे सहज बुद्धि जनसाधारण में वेदों के प्रति अश्रद्धा बनी।

इस प्रकार चारों वेदों में मानव मात्र के हितार्थ, कल्याणार्थ, पुण्यार्थ व परोपकारार्थ ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान है। ऋग्वेद को ज्ञानकाण्ड (मस्तिष्क का वेद), यजुर्वेद को कर्मकाण्ड (हाथों का वेद), साम वेद को उपासना काण्ड (हृदय का वेद) तथा अथर्ववेद को विज्ञान काण्ड (व्यक्ति के लिए हितकारी तत्त्व) जाना जाता है। आज भी भारत वर्ष के धर्म नगरों में ऐसे वेदपाठी परिवार हैं जिन्हें एक, दो, तीन व चारों वेद सहित मन्त्र कण्ठस्थ हैं। विशेष आयोजन उत्सवों पर उनसे अध्याय, काण्ड, सूक्त व मन्त्र संख्या बताई जाती है और वे उस ग्रन्थ को सस्वर उच्चारण करके सुनाते हैं।

इस लेख के शब्द मेरे हैं, परन्तु विषय वस्तु वेद ज्ञान है जिसका वेदों में वर्णन है। भ्रम निवारण हेतु महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित **'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'** से इन तथ्यों की पुष्टि की जा सकती है। मैं तो एक सामान्य मानव हूँ वेद का क, का भी जानना मेरे लिए सम्भव नहीं। इति।■

गतांक पृष्ठ १४ से आगे

ब्रह्म का स्वरूप

संकलनकर्ता

● **मृदुला अग्रवाल**

१९-सी, सरत बोस रोड, कोलकाता

चलभाष : ९८३६८४१०५१

राजा जनक को यज्ञवल्क्य जितना ही उपदेश देते चलते थे, उतनी ही उनकी सुनने की इच्छा और भी बलवती होती चलती थी। इस उपदेश का उपसंहार करते हुए महर्षि ने जीवन की अन्तिम यात्रा के विषय में कहना प्रारम्भ किया- **''राजन्! जिस प्रकार स्थल की लम्बी यात्रा पूर्ण करने के लिए रथ आदि वाहन की एवं जल-मार्ग की यात्रा करने के लिए नौका आदि की आवश्यकता होती है उसी प्रकार परलोक की लम्बी यात्रा पूर्ण करने के लिए उपनिषदोक्त वाग् आदि ब्रह्म के ज्ञान की भी आवश्यकता होती है। आप वेद के ज्ञान से अवगत हैं। अतः, राजन्! आप एक बात बतलाइए कि देह का त्याग करने के अनन्तर आप अपने इस ज्ञान के बल पर कहाँ जाएँगे?''**

मूल लेखक

स्मृति शेष :
शान्तिस्वरूप जी गुप्त

राजा कहने लगे- ''भगवन्! इस विषय में तो मेरा ज्ञान नगण्य है। अतः, आप ही इस विषय में मुझे सविस्तार समझाने का कष्ट करें क्योंकि आप इस विषय के पूर्ण ज्ञाता है।''

राजा के अनुरोध किए जाने पर ऋषि कहने लगे- ''राजन्! जाग्रत अवस्था में दाहिनी आँख में जो पुरुष है उसका नाम 'इन्ध' अथवा इन्द्र है, एवं बाईं आँख में जो पुरुष है उसका नाम 'इन्द्राणी' (इन्द्र की पत्नी) है। हृदय के भीतर जो आकाश है वही इस दम्पति का शयन कक्ष है एवं हृदय के भीतर जो भुक्त अन्न का सारभूत रस है वही इस दम्पति का भोज्य है। हृदय में जो जाल की भाँति परिवेष्टित जो मांस-पिण्ड है, वही इनका प्रावरण अथवा ओढ़ने का वस्त्र है और हृदय से ऊपर की ओर सहस्रार में जाने वाली नाड़ी ही इस दम्पति की जाग्रत अवस्था में संचरणी अथवा चलने वाली सड़क है। हृदय के अन्तर्गत रोम के सस्रांश के समान अत्यन्त सूक्ष्म 'हित' नामक नाड़ी-समूह के द्वारा जो रस-विशेष सारे शरीर में व्याप्त होता रहता है, वही इनका भोग है। स्वप्नावस्था का साक्षी जीव इस जाग्रत अवस्था के भोक्ता की अपेक्षा अत्यन्त सूक्ष्माहारी होने के कारण **'प्रविक्ताहाररत'** कहलाता है।

इस लाक्षणिक वर्णन के द्वारा ही वे बताते हैं कि नासाग्रवर्त्ती प्राण ही प्राची दिशा, दक्षिण वर्त्ती प्राण ही दक्षिण दिशा, पृष्ठ भाग-वर्त्ती प्राण ही पश्चिम दिशा, वाम भाग-वर्त्ती प्राण ही उत्तर दिशा, मूर्धागत प्राण ही ऊर्ध्व दिशा, अधोगत प्राण ही अवाची दिशा एवं समस्त शरीर-गत प्राण ही समस्त दिशाएँ हैं। जिसकी सत्ता से जीव अहर्निश जाग्रत आदि अवस्थाओं का भोक्ता होता है वही नेति-नेति शब्दों द्वारा प्रतिपादित आत्म ही ब्रह्म है। वह अतीन्द्रिय होने से अगृह्य, क्षीण न होने से अशीर्य, लिप्यमान न होने से असंग, बन्धन-रहित होने से असित, दुःख आदि द्वन्द्वों से परे होने के कारण आनन्द स्वरूप एवं सदा एक-रस रहने से सन्मात्र कहलाता है। यही वह आत्मा है जिसे जानने से मनुष्य अभय हो जाता है।''

ऋषि कहते चलते हैं- ''राजन्! यह जीव पुण्य कर्मों के कारण सुषुप्ति के आनन्द का उपभोग करके शेष कर्म-फल भोगने के लिए पुनः जाग्रत अवस्था को प्राप्त हो जाता है। जिस प्रकार सामान से लदा हुआ शकट चीं-चीं शब्द करता हुआ चलता है उसी प्रकार आसन्न मृत्यु होने पर परमात्मा द्वारा अधिष्ठित जीवात्मा आर्त्त शब्द उच्चारण करता हुआ एवं ऊर्ध्व निःश्वास छोड़ता हुआ शरीर त्याग करता है। जिस प्रकार पकने के पश्चात् फल स्वयं वृक्ष की डाली से टूट गिरते हैं, उसी प्रकार रोगों से जर्जर शरीर, मृत्यु हो जाने पर स्वकर्मानुसार अनेक योनियों में जन्म जा लेता है। जिस प्रकार राजा के आगमन पर उसके अमात्यगण भोजन आदि से उसका सत्कार करते हैं, उसी प्रकार जीव जब एक शरीर से अन्य शरीर में प्रवेश करने लगता है तब सब भूत उपस्थित होकर कर्म के अनुसार उसके भोग के लिए नवीन शरीर की रचना कर डालते हैं। जिस प्रकार राजा के राज दरबार से उठ चलने के समय अन्य अमात्य आदि भी उसके पीछे-पीछे उठ चलते हैं उसी प्रकार जीव जब वर्तमान शरीर का त्याग करता है तब प्राण एवं सब इन्द्रियाँ आदि भी जीव के साथ उसका अनुसरण करके विषयों की उपलब्धि के लिए नवीन शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। **जब यह जीवात्मा रोगों से जर्जर होकर मृत्यु के सन्निकट जा पहुँचता है तब वह बहुत मोह में पड़कर शरीर का परित्याग करता है। उस समय जीव पूर्णतः बुद्धि के अधीन होता है। भोगप्रद कर्मों की समाप्ति हो जाने पर जीव को रूप आदि विषयों का ज्ञान नहीं रहता। उस समय सारी इन्द्रियाँ लिंगात्मा के साथ एक हो जाती हैं। अतः उस समय न तो वह बोलता है, न सुनता है, न स्पर्श का अनुभव करता है, न मनन करता है और न वह अपने किसी आत्मीय जन को ही पहचान पाता है।** उस समय वह मुमुक्षु जीव, स्वप्न की भाँति अपनी चैतन्य ज्योति से भावी देह से सम्बन्ध रखने वाली वासना का चिन्तन करता हुआ कुछ काल तक प्रकाशित रहकर उसी वासना में तन्मय होकर अपने कर्म के अनुसार मूर्धा, चक्षु, कान आदि शरीर के किसी भी छिद्र के मार्ग से शरीर का त्याग कर देता है। तत्पश्चात् जैसे राजा के पीछे उसके अनुचर चलते हैं वैसे ही मुख्य प्राण निकल जाने पर अन्य प्राण एवं सूक्ष्म इन्द्रियाँ भी उसी के पीछे-पीछे निकल चलती हैं। **'तं विद्याकर्मणी समन्वा रमेते पूर्वप्रज्ञाश्च'**। (जीव अपने भावी शरीर विषयक वासना का चिन्तन करता हुआ अपने साथ विहित एवं निषिद्ध कर्मों के संस्कार एवं पूर्व

जन्म की प्रज्ञा लेकर अन्य शरीर में प्रवेश कर जाता है।)

जिस प्रकार **'तृणजलायुका'** (तिली का प्रारम्भिक कीट रूप) जब अपने अगले पाँवों से वृक्ष पर के आगे के तृण को पकड़ लेने पर ही अपने पिछले पाँवों की पकड़ छोड़ता है, उसी प्रकार यह जीवात्मा भी मृत्यु काल में अपने भावी शरीर की तैयारी होने पर ही इस शरीर का परित्याग करता है।

पहले वाले शरीर के संस्कार शेष होने पर यह जीव कर्म के अनुसार पितर, गन्धर्व, देवता, प्रजापति आदि शरीर भी धारण करता हुआ उनके भोग समाप्त हो जाने पर ही पुन: मनुष्य शरीर में जन्म लेता है। चेतन होने के कारण जीव निश्चय ही प्रकृति से महान् है। बुद्धि का प्रेरक होने के कारण यह विज्ञानमय, मन का प्रेरक होने के कारण मनोमय, इच्छा कर सकने के योग्य होने के कारण काममय, त्याग कर सकने के सामर्थ्य के कारण अकाममय, क्रोधमय, अक्रोधमय, धर्ममय, अधर्ममय इत्यादि जिस प्रकार के कर्म करता चलता है उसी के अनुसार वह पुण्यात्मा या पापात्मा बन जाता है। जीव जैसा संकल्प करता है वैसा ही कर्म भी करता है और जैसा कर्म करता है वैसा ही फल भी भोगता है। अपने शुभ और अशुभ कर्मों का फल भोगने के लिए ही यह जीव, लोक-परलोक को प्राप्त होता है। किन्तु जो व्यक्ति सकाम कर्मों का त्याग करके निष्काम कर्म में प्रवृत्त हो जाता है, वह जीव मुक्त हो जाता है। जब मनुष्य का हृदय कामना-वासनाओं से रिक्त हो जाता है तब यह पुरुष अमृत होकर ब्रह्मानन्द में लीन हो जाता है। जिस प्रकार केंचुली का परित्याग करके सर्प का शरीर विमल हो जाता है, उसी प्रकार ऐसा ब्रह्मवित् पुरुष भी शरीर त्याग करके आवागमन के बन्धन से मुक्त हो जाता है। परमात्म-प्राप्ति का मार्ग कष्ट-साध्य होने के कारण अत्यन्त सूक्ष्म है और चिरकालीन ब्रह्मानन्द की प्राप्ति के कारण विस्तृत है। इस प्रकार ब्रह्मवित् पुरुष अपने जीवन-काल में ही मुक्ति के आनन्द का उपभोग करके मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

जो अज्ञानी पुरुष अनित्य को नित्य समझते और अनात्म में आत्म बुद्धि रखते हैं वे मूढ़ अवस्था को प्राप्त होते हैं। पर जो ज्ञान का अभिमान रखकर कर्मानुष्ठान से वर्जित रहते हैं, वे उनसे भी अधिक मूढ़ हैं। ऐसे अज्ञानी मनुष्य आवागमन के चक्र में फँसकर बार-बार जन्म धारण करते रहते हैं। ऐसे ही मनुष्य तम से आवृत्त अंधकार पूर्ण लोकों को प्राप्त होते हैं। परमात्मा को भले प्रकार से जान लेने के पश्चात् यह जीव सांसारिक कामनाओं के लिए व्याकुल नहीं होता। अत:, जो इस देह में ब्रह्म को प्राप्त नहीं कर लेता वह आवागमन के चक्कर में रहता ही है। इसके विपरीत जो ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है वह जीव अमृत पद प्राप्त करके मुक्त हो जाता है। त्रिकाल के साक्षी परमात्मा का साक्षात्कार कर लेने पर मनुष्य का हृदय निर्मल हो जाता है। ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति भी शुद्ध मन से ही सम्भव है। हृदयाकाश में विराजमान परमात्मा ही इस संसार का नियन्ता है, अजन्मा है, सबका अधिपति है। पुण्य-पाप से अलिप्त, पुत्रैषणा, लोकैषणा, वित्तैषणा से परे केवल परमात्मा के आनन्द में निमग्न रहने वाला पुरुष ही यति है एवं उसी के लिए ब्रह्म का साक्षात्कार सम्भव भी है।

राजन्! यह परमात्मा कर्मेन्द्रिय का विषय नहीं क्योंकि यह सर्व-बन्धन-मुक्त और आनन्द-स्वरूप है। इसी का साक्षात्कार करने से मनुष्य को त्रय तापों से मुक्ति मिल सकती है। ब्रह्मवित्त पुरुष किसी भी पाप में लिप्त ही नहीं होता। ऐसा पुरुष शम, दम, उपरति, तितिक्षा आदि साधनों से युक्त होकर अपने आप में परमात्मा को और परमात्मा में सबको देखता है। अत: उसको कोई पाप स्पर्श नहीं करता। पाप से रहित होकर वह निष्काम हो जाता है। जब चित्त संशय रहित हो जाता है तब जीव ब्रह्मलोक प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्य समझता है कि परमात्मा ही सब कर्मों के फल-प्रदाता हैं उसकी कोई कामना अपूर्ण नहीं रह जाती, वह त्रिकाल-दर्शी परमात्मा का ज्ञाता हो जाता है।''

यह ब्रह्मज्ञान सुनकर राजा जनक कहने लगे- ''आपने मुझे जो ज्ञान प्रदान करने की कृपा की है, इसके लिए मैं आपका अभिवादन करता हूँ। अपना यह विदेह देश मैं आपको अर्पित करता हूँ और आज से मैं आपका सेवक हो गया हूँ।'' ■

प्राणों से प्रिय प्रभु

प्राणों से प्रिय प्रभु हर हृदय में छिपा,
उसे बाहर जगत् में तू क्यों खोजता?
मन्दिरों, मस्जिदों, दूर स्थानों में,
नाना कष्टों को जाकर तू क्यों भोगता?

सर्वव्यापक है प्रत्येक कण में रमा,
सारा ब्रह्माण्ड उसकी शक्ति से है थमा;
रात में देखो निस्सीम जगमग गगन
किसी स्थल विशेष में ही क्यों सोचता?

करना चाहो अगर उसकी अनुभूति को
साधना-योग करो, तज प्रतिमूर्ति को;
मूर्ति में वह मिलेगा कभी भी नहीं
व्यर्थ उसके समक्ष तू क्यों लोटता?

कोई भी वस्तु उसको नहीं चाहिए
भले बहुमूल्य धातु अर्पित कर आइये;
वेद अनुसार स्वरूप जाने बिना
उसके दर्शन की लिप्सा में क्यों दौड़ता?

बाह्य आडम्बरों से बहुत दूर वह,
उर में खोजो प्रकाश से भरपूर वह
मिलेगा वह सदा अपने अन्दर ही में
फिर तू बाहर निराशा-आँसू क्यों पोंछता?

उसको जाने बिना मानता ही रहा,
जिन्दगी भर अकर्म साधता ही रहा;
वेदपथ पर कदम को बढ़ाए बिना
उस प्यारे प्रभु को तू क्यों कोसता?

● **ओमप्रकाश आर्य**
आर्य समाज, रावतभाटा,
वाया कोटा (राज.)
चलभाष : ९४६२३१३७९७

वेदज्ञान और वेद की सात मर्यादाएँ

• डॉ. सत्यदेव सिंह
५०७, गोदावरी ब्लाक, अशोक सिटी,
गोवर्धन चौक, मथुरा (उ.प्र.)
चलभाष : ९९९७९८९९६३, ८६३०५०६१०५

समस्त संसार के सभी पुस्तकालयों में **'वेद'** ही एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है, जो अत्यन्त प्राचीन और सार्वभौम स्वीकार्य है। इसी ग्रन्थ में संसार की प्राय: सभी समस्याओं का समाधान भी प्राप्त हो जाता है। यही कारण है कि मनु महाराज जैसे धर्मशील से लेकर महर्षि जैमिनि जैसे मीमांसक तक तथा आधुनिक पौर्वात्य व पाश्चात्य विद्वानों तक सभी विद्वान्, विचारक वेद के प्रति अपनी अपार श्रद्धा प्रकट करते हैं। वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने का प्रबल प्रमाण है कि सृष्टि के आदिकाल में ईश्वर ने मानवमात्र के कल्याण के लिए चार ऋषियों के अन्त:करण में वेद का ज्ञान प्रकट किया तथा उन चार ऋषियों में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ने वेदज्ञान को सुना, इसीलिए वेद के मन्त्रों को श्रुति भी कहा जाता है। वेद का ज्ञान कभी नष्ट नहीं होता, ना ही इसे कोई नष्ट कर सकता है क्योंकि जब सृष्टि की प्रलयावस्था होती है तो वेद का ज्ञान बीजरूप में परमेश्वर के गर्भ में विद्यमान रहता है और जब सृष्टि का पुन: प्रादुर्भाव होता है तब पुन: ऋषियों के अन्त:करण में वेद–ज्ञान प्रकट होता है।

सायणाचार्य और स्वामी दयानन्द सरस्वती दोनों यह मानते हैं कि वेदों का आविर्भाव चार ऋषियों पर हुआ। सायणाचार्य ने ऐतरेय ब्राह्मण का उदाहरण देकर लिखा है–

'जीव विशेषैरग्निवाय्वादित्यैर्वेदानामुत्पादितत्वात् ऋग्वेद एवाग्नेरजायत यतुर्वेदो वायोः सामवेद आदित्यात् इति।

ऐतरेय–५/३२

इसी प्रकार स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थ **'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'** में वेद की उत्पत्ति के विषय में लिखा है– चारों वेद चार ऋषियों द्वारा प्रादुर्भूत हुए। **प्रश्न– केषां?**

उत्तर– अग्नि वाय्यादिव्यांगिरसाम्। सृष्ट्यादौ मनुष्यदेहधारिणस्ते ह्यासन्।' अर्थात् परमपिता परमात्मा ने जब कृपा की तो सृष्टि के आदि में अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, आदित्य नामक ऋषि से सामवेद और अंगिरा ऋषि से अथर्ववेद प्रादुर्भूत हुए। सृष्टि के आदि में अग्नि ये सब देहधारी मनुष्य थे।

वैदिक विद्वानों का मानना है कि वेदों कें सर्वत्र आध्यात्मिक ज्ञान के साथ–साथ यत्र–तत्र सामाजिक, भौतिक, नैतिक, व्यावहारिक, राष्ट्रीय एवं चिकित्सादि विषयक ज्ञान का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वेद के मनीषियों का तो यहाँ तक कथन है कि वेद के प्रत्येक मन्त्र में किसी न किसी प्रकार से ब्रह्मज्ञान तथा अध्यात्मविद्या का ही वर्णन है। विवेकशील विद्वानों का तो यहाँ तक कहना है कि इस जग् में संजीवनी शक्ति सूर्य से आई है तो संसार में मानवीय सभ्यता वेद से आई है।

विस्तारभय के कारण आगे कुछ न कहते हुए अब वेद की सात मर्यादाओं का उल्लेख करते हैं। वेद के अन्तर्गत सात मर्यादाएँ निर्दिष्ट हैं, वे इस प्रकार हैं–

सप्त मर्यादा: कवयस्ततक्षुः।
तासां एकमिदभ्यं हुरोगात्।।(ऋग्वेद १०.७.६)

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मानव जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि, प्रगति और मोक्ष के लिए सात प्रकार की मर्यादा अर्थात् सीमा–रेखा निर्धारित की है। कहने का तात्पर्य है कि ज्ञानी लोगों ने सभ्यता की सात मर्यादाएँ बताई हैं, इनमें से एक का भी उल्लंघन करने से मनुष्य पतित हो जाता है, वे सात मर्यादाएँ निम्नलिखित हैं–

१. **स्तेयं :** चोरी–१ कर चोरी (Tax avoidance), (२) कर्त्तव्य विमुखता (Failure to perform duty), (३) तस्करी करना (Indulgiong in smuggling), (४) अपने कथन से मुकर जाना (Reneging on oath), (५) सदाचरण नियमों का उल्लंघन (Violating Code of conduct), (६) अन्य की प्रतिष्ठा को नीचा दिखाना (Stealing from other reputation), (७) आत्म सम्मान का ह्रास (Los of self respect)
२. **तल्पारोहन :** परस्त्री गमन (Adultery) या व्यभिचार
३. **ब्रह्म हत्या :** ज्ञानी का वध (Killing of wise men) अर्थात् ज्ञान के विस्तार में बाधा डालना, विद्वान का अपमान करना। (Creating obstructions in spreading education) (५)
४. **भ्रूण हत्या :** गर्भपात (शिशु का वध) (Femal foeticide), विश्वासघात, धोखा, बेईमानी (Betrayal of trust), आदि–आदि।
५. **सुरापान :** शराब या नशीले पदार्थों का सेवन (Taking drugs and drinking alcohol)
६. **दुष्कृत्य कर्मणा पुनः–पुनः–** दुराचार, बुराई को समझने पर भी बार–बार करना। (Commiting crime even after knowing the consequences)
७. **पातके अनृतोद्यः–** असत्य बोलना या पाप करना और उसे छुपाने का यत्न करना। (Tyring to hide one self after committing crime)

अत: प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह वेद–वचनों का पालन करता हुआ अपना कर्म करे और मनुष्य को पतित करने वाले उपर्युक्त सात पातकों से बचें, तभी वह अपने जीवन में सुख–समृद्धि को प्राप्त कर सकता है। ■

ज्ञान का सागर चार वेद, यह वाणी है भगवान की। इससे मिलती सब सामग्री, जीवन के कल्याण की।।

महर्षि दयानन्द के भाष्यानुसार– ऋग्वेद ज्ञानागार के कुछ मोती

गतांक से आगे...

अथ ऋग्वेद षष्ठम् मण्डलम्

सूक्त	मन्त्र क्र.	विषय
४७	१०, ११, २५ व ३०	फिर वह राजा क्या करे
	१२	फिर राजा कैसा हो और उसकी रक्षा कौन करे
	१३, २१, २२ व ३१	फिर राजा और प्रजाजन कैसा वर्ताव करे
	१४	फिर उस राजा को सेवन कौन गुण करते हैं
	१५	फिर कौन किससे पूछे और समाधान करे
	१७	फिर वह राजा क्या नहीं करके क्या करे
	१८	फिर यह जीवात्मा कैसा होता है
	१९	फिर यह जीव इस देह में कैसा वर्ताव करता है
	२०	मनुष्य कैसे आरोग्य को प्राप्त होवे
	२३	फिर मन्त्रीजन राजा से क्या प्राप्त करे
	२४	फिर वह राजा अधिकार किसके लिए देवे
	२६	फिर वह राजा कैसे मित्रों की इच्छा करे
	२७	फिर मनुष्यों को किससे उपकार ग्रहण करना चाहिए
	२८	फिर राजा को बिजुली से क्या सिद्ध करना चाहिए
	२९	फिर विद्वानों को क्या करना चाहिए
४८	१ व १५	विद्वानों को क्या करना चाहिए
	२ व १६	राजा और प्रजाजन परस्पर कैसे वर्तें
	३, ४ व ८	फिर वह राजा क्या करे
	५, ६ व ७	फिर मनुष्य क्या करे
	९	विद्वान जन सन्तानों को कैसी शिक्षा दे
	१०	फिर मनुष्यों को कौन सत्कार करने योग्य है
	११	कौन इस संसार में मित्र है
	१२ व १३	अब माताजन सन्तानों को सदा शिक्षा देवे
	१४	फिर मनुष्य किसकी प्रशंसा करे
	१७	मनुष्यों को क्या करना चाहिये
	१८	किनकी मित्रता नहीं नष्ट होती है
	१९	मनुष्यों को कैसा होना चाहिये
	२०	मनुष्यों को कैसी नीति धारण करना चाहिये
	२१	किस राजा की पुण्य रूप कीर्ति होती है
	२२	प्रजा के क्या कृत्य हैं
४९	१, ४ व ६	मनुष्य क्या करे
	२	फिर मनुष्य किसकी स्तुति करे
	३	स्त्री–पुरुष कैसे होकर कैसे बर्ताव करें
	५	फिर मनुष्य किससे किसको प्राप्त होवे
	७	फिर कैसी स्त्री सुख देवे
	८,९,११व१४	फिर मनुष्यों को किसका सेवन करना चाहिए
	१०	फिर मनुष्यों को कौन प्रशंसा करने योग्य है
	१२	फिर मनुष्य किसके तुल्य किसको प्राप्त होवे
	१३	फिर मनुष्यों को क्या जानने योग्य है
	१५	फिर दाताओं को क्या करना चाहिये
५०	१,३,७ व ८	विद्वान जन किसके लिए क्या करे
	२	अब मनुष्य निरन्तर क्या काम करे
	४	फिर विद्वान कैसे हो
	५,१२ व १३	फिर विद्वानजनों को क्या करना चाहिये
	६	फिर विद्वानों को क्या उपदेश कर क्या करना चाहिये
	९	फिर मनुष्यों को किससे क्या प्रार्थना करना चाहिये
	१०	फिर मनुष्यों को किसके संग से कैसा होना योग्य है
	११	फिर मनुष्य कैसे हों
	१४	फिर मनुष्यों को क्या आकांक्षा करने योग्य है
	१५	फिर जिज्ञासुजन कैसे हों
५१	१	फिर मनुष्यों को क्या चाहने योग्य है
	२	फिर मेधावीजन क्या जानें
	३	फिर मनुष्य किसकी प्रशंसा करें
	४	फिर मनुष्य कैसे राजजनों को माने
	५	मित्र आदि की सन्तानों के लिए क्या करना योग्य है
	६	फिर मनुष्यों को किसकी इच्छा नहीं करनी चाहिये
	७	फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये
	८	मनुष्य सदैव नम्र हों
	९	फिर सबको कौन नमस्कार करने योग्य है
	१०	कौन सत्कार करने योग्य है
	११	किसके तुल्य कौन मानने योग्य है
	१२	कौन धन्यवाद के योग्य है
	१३	कौन दूर करने योग्य है
	१४	कौन इस संसार में आनन्द का देने वाला है
	१५	कैसे मार्ग सिद्ध करना चाहिये

(शेष आगामी अंक में)

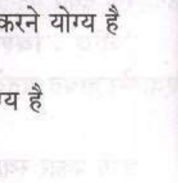

• पं. सत्यपाल शर्मार्य
आर्य समाज देहरी, जिला मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ८४३४७४६४७४

वेद विषयक शोधपरक चिन्तन व जिज्ञासाःऐसा क्यों?

वैदिक विद्वान समाधान करें...

आइये, जानने का प्रयास करते हैं कि ऋग्वेद के कौन-कौन से मन्त्र किन–किन वेद में यथावत् अथवा कितनी-कितनी आंशिक भिन्नता के साथ कहाँ-कहाँ पर प्रस्तुत हुए हैं...

• **मोहनलाल आर्य (भाट)**
लस्सानी दोयम, जनपद : अजमेर (राज.)
चलभाष : ७६८८८०६८४४

क्र.सं.	वेद मन्त्र	ऋषि	देवता	छन्द	स्वर	विषय
१.	ऋ (१/१/१)	मधुच्छन्दा	अग्नि	गायत्री	षडजः	स्वस्तिवाचनम मन्त्र-१
	साम-६०५	मधुच्छन्दा	अग्नि	गायत्री		
२.	ऋ (१/१/७)	मधुच्छन्दा	अग्नि	गायत्री	षडजः	परमेश्वर
	साम-१४	मधुच्छन्दा	अग्नि	गायत्री	—	
३.	ऋ (१/१/९)	मधुच्छन्दा	अग्नि	गायत्री	षडजः	स्वस्तिवाचनम मन्त्र-२
	यजु (३/२४)	वैश्वामित्रो/मधुच्छन्दा	अग्नि	विराड गायत्री	षडजः	स्वस्तिवाचनम मन्त्र-२
४.	ऋग (१/२/७)	मधुच्छन्दा	मित्रा वरूणो	गायत्री	षडजः	प्राण, अपान
	यजु (३३/५७)	मधुच्छन्दा	मित्रा वरूणो	गायत्री	षडजः	प्राण, अपान
	साम-८४७	मधुच्छन्दा वैश्वामित्रो	मित्रा वरूणो	गायत्री	—	
५.	ऋग (१/२/८)	मधुच्छन्दा	मित्रा वरूणो	गायत्री	षडजः	मित्र, वरुण
	साम-८४८	मधुच्छन्दा वैश्वामित्रो	मित्रा वरूणो	गायत्री	—	
६.	ऋग (१/२/९)	मधुच्छन्दा	मित्रा वरूणो	गायत्री	षडजः	मित्र, वरुण
	साम-८४९	मधुच्छन्दा वैश्वामित्रो	मित्रा वरूणो	गायत्री	—	
७.	ऋग (१/३/४)	मधुच्छन्दा	इन्द्र	पिपीलिका मध्यानिचृद गायत्री	षडजः	परमेश्वर/सूर्य
	यजु (२०/८७)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	निचृद गायत्री	षडजः	मनुष्य
	साम-११४६	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	—	
	अथर्व (२०/८४/१)	—	इन्द्रो	निचृद गायत्री	—	मनुष्य
८.	ऋग (१/३/५)	मधुच्छन्दा	इन्द्र	गायत्री	षडजः	परमेश्वर
	यजु (२०/८८)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	निचृद गायत्री	षडजः	विद्वान
	साम-११४७	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	—	
	अथर्व (२०/८४/२)	—	इन्द्रो	गायत्री	—	मनुष्य
९.	ऋग (१/३/६)	मधुच्छन्दा	इन्द्र	गायत्री	षडजः	शरीरस्थ प्राण
	यजु (२०/८९)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	षडजः	विद्वान
	साम-११४८	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	—	
	अथर्व (२०/८४/३)	—	इन्द्रो	गायत्री	—	विद्वान
१०.	ऋग (१/४/१)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	षडजः	विद्वान
	साम-१६०	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	—	
	साम-१०८७	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	—	
	अथर्व (२०/५७/१)	—	इन्द्रो	गायत्री	—	प्रजा
	अथर्व (२०/६८/१)	—	इन्द्रो	गायत्री	—	प्रजा

११.	ऋग (१/४/२)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	षडजः	सूर्य का प्रकाश
	साम-१०८८	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	—	
	अथर्व (२०/५७/२)	—	इन्द्रो	गायत्री	—	राजा-प्रजा
	अथर्व (२०/६८/२)	—	इन्द्रो	गायत्री	—	राजा-प्रजा
१२.	ऋग (१/४/३)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	विराड गायत्री	षडजः	परमेश्वर
	साम-१०८९	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	—	
	अथर्व (२०/५७/३)	—	इन्द्रो	विराडार्षी गायत्री	—	राजा-प्रजा
	अथर्व (२०/६८/३)	—	इन्द्रो	विराडार्षी गायत्री	—	राजा-प्रजा
१३.	ऋग (१/४/४)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	षडजः	मनुष्य, कर्तव्य
	अथर्व (२०/६८/४)	—	इन्द्रो	गायत्री	—	राजा-प्रजा
१४.	ऋग (१/४/५)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	षडजः	मनुष्य
	अथर्व (२०/६८/५)	—	इन्द्रो	गायत्री	—	परमात्मा
१५.	ऋग (१/४/६)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	षडजः	मनुष्य
	अथर्व (२०/६८/६)	—	इन्द्रो	गायत्री	—	परमेश्वर
१६.	ऋग (१/४/७)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	षडजः	ईश्वर
	अथर्व (२०/६८/७)	—	इन्द्रो	गायत्री	—	मनुष्य
१७.	ऋग (१/४/८)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	षडजः	परमेश्वर
	अथर्व (२०/६८/८)	—	इन्द्रो	गायत्री	—	वेद-विद्या
१८.	ऋग (१/४/९)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	षडजः	मनुष्य
	अथर्व (२०/६८/९)	—	इन्द्रो	गायत्री	—	मनुष्य
१९.	ऋग (१/४/१०)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	निचृद गायत्री	षडजः	मनुष्य
	अथर्व (२०/६८/१०)	—	इन्द्रो	निचृद गायत्री	—	उपासना
२०.	ऋग (१/५/१)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	विराड गायत्री	षडजः	मनुष्य
	साम-१६४	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	—	
	साम-७४०	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	—	
	अथर्व (२०/६८/११)	—	इन्द्रो	विराडार्षी गायत्री	—	विद्वान
२१.	ऋग (१/५/२)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	आर्च्युष्णिक	ऋषभः	वायु
	साम-७४१	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	—	
	अथर्व (२०/६८/१२)	—	इन्द्रो	आर्च्युष्रिक	—	
२२.	ऋग (१/५/३)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	पिपीलिका मध्यानिचृद गायत्री	षडजः	ईश्वर
	साम-७४२	मधुच्छदा	इन्द्रो	गायत्री	—	
	अथर्व (२०/६९/१)	—	इन्द्र	निचृद गायत्री	—	
२३.	ऋग (१/५/४)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	गायत्री	षडजः	ईश्वर
	अथर्व (२०/६९/२)	—	इन्द्र	निचृद गायत्री	—	
२४.	ऋग (१/५/५)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	निचृद गायत्री	षडजः	कार्यजगत की रचना
	अथर्व (२०/६९/३)	—	इन्द्र	निचृद गायत्री	—	
२५.	ऋग (१/५/६)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	निचृद गायत्री	षडजः	विद्वान
	अथर्व (२०/६९/४)	—	इन्द्र	निचृद गायत्री	—	
२६.	ऋग (१/५/७)	मधुच्छन्दा	इन्द्रो	निचृद गायत्री	षडजः	ईश्वर
	अथर्व (२०/६९/५)	–	इन्द्र	निचृद गायत्री	–	(क्रमशः)

ज्योतिष पाठ-५

ऋतुओं का कारक सूर्य या चन्द्रमा

● **आचार्य दार्शनेय लोकेश**
सम्पादक : श्री मोहन कृति आर्य पत्रकम्
(एकमात्र वैदिक पञ्चाङ्ग)
सी–२७६, गामा–१, ग्रेटर नोएडा
दूरभाष : ०१२०–४२७१४१०

अथर्ववेद ६/३७/२ **स विश्वा प्रतिचाक्लृपे ऋतूनुत्सृजतेवशी।** अर्थात् वह अग्नि स्वरूप वैश्वानर प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न करता है, वश में करता है। वह ऋतुओं का उत्सर्जन अर्थात् निर्माण करता है। शतपथ ब्राह्मण २/२/३/९ में भी कहा गया है कि **'आदित्यस्त्वेवसर्वऋतवः'** अर्थात् आदित्य ही सब ऋतु का कारक है। इसी प्रकार काठक संहिता में **'असौ वा आदित्यः ऋतुः'** कहकर ऋतुओं का कारक सूर्य को ही इंगित किया गया है।

चंद्रमासों के समान हम सौर मासों को स्थूलता से नहीं जान सकते। अमावस्या और पूर्णिमा से चांद्रमासों की दृश्यता कुछ सहज है जबकि सौरमासों का यथार्थ ज्ञान क्रान्तिजन्य होने से **(स+क्रान्ति=क्रान्ति के साथ)** वेध और छायार्क साधन का विषय है। सत्य यह है कि **'चान्द्र मासाः अनुवर्ती मासाः'**। चान्द्र मास गौण मास है। प्रधान मास सौर आर्तव मास ही है। इसी प्रकार चान्द्र मासों से कही गई ऋतुएँ भी गौण ही हैं।

सूर्य हमारे निवास रूपी भूगोल से लाखों गुना बड़ा है। उसके चारों ओर ग्रह-उपग्रह, धूमकेतु आदि निरन्तर घूम रहे हैं। वहीं इन सबको बस में रखता है। **सूर्य ही दिन और रात का, मासों का, ऋतुओं का, उत्तरायण, दक्षिणायन और सर्वान्ततः संवत्सर का निर्माता है।**

मासास्तेकाल्पतामृतवस्ते कल्पतां संवत्सरस्ते कल्पताम्। यजुर्वेद २७/४५ में यही कुछ अभिव्यक्त है। विचार करने पर यह भी स्पष्ट होता है कि चन्द्रमा के संचरण से बनाने वाली प्रतिपदादि तिथियाँ भी मौलिक रूप से सूर्य के कारण ही सम्भव हैं। प्रत्येक तिथि के १२ अंश की गणना भी सूर्य की सापेक्षता से ही गणित हैं। सूर्य के पास अगर चन्द्रमा की तरह अपना प्रकाश नहीं होता तो कदाचित् वह भी दिन और रात्रि नहीं दे सकता था। यह स्थिति जबकि चन्द्रमा के साथ सर्वदा ही उपलब्ध है। अर्थात् उसके पास अपना प्रकाश भी नहीं है। अस्तु, पृथ्वी का यह उपग्रह ऋतुओं को कैसे बना सकता है? नहीं बनाता है।

श्री विष्णु पुराण २/८/७० **'मासः पक्षद्वयेनोक्तो द्वौ मासौ चार्कजावृतुः, ऋतू त्रयं चाप्ययनं द्वे अयने वर्ष संज्ञिते।'** यहाँ 'च अर्क+ज=ऋतुः' पर खास ध्यान देने की आवश्यकता है। दो सौर मास की एक ऋतु और तीन ऋतु का एक यन तथा दो अयन ही (मिलाकर) १ वर्ष कहे जाते हैं। अथर्ववेद के सप्तम काण्ड सूक्त ८१ और मन्त्र संख्या १ में

पूर्वापरं चरतौ माययैतौ शिशू क्रीडन्तौ परियातोऽर्णवम्।
विश्वान्यो भुवना विचष्ट ऋतूंरन्यो विदधज्जायसे नवः।।

यहाँ ऋतुओं को धारण करते हुए चन्द्रमा को नया-नया होना कहा गया है।

निष्कर्ष पर आने के लिए यह समझना जरूरी है कि चन्द्रमा अगर बिल्कुल भी नहीं होगा तो भी दिन और रात होंगे, मास (महीने) और ऋतुएँ होंगी, **नहीं होंगे तो केवल शुक्ल और कृष्ण पक्ष नहीं होंगे अर्थात् तिथियाँ नहीं होंगी। इसी प्रकार से राहु और केतु नहीं होंगे** क्योंकि जब चन्द्रमा नहीं होगा तो उसके विमंडल के होने का सवाल ही नहीं होता। पुनः जब राहु और केतु ही नहीं होंगे तो फिर चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण भी नहीं हो सकते। स्पष्ट है कि चन्द्रमा के न होने का ऋतु पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि **ऋतुएँ केवल और केवल सूर्य से प्रभावित हैं। पृथ्वी ऋतुओं की भोक्ता है और सूर्य ऋतुओं का कर्ता है।** अब आइये सूर्य की तरफ। अगर सूर्य नहीं होगा तो क्या होगा? अगर सूर्य नहीं होगा तो ब्रह्माण्ड में कुछ भी नहीं होगा। जब समस्त ऊर्जाओं का मूल स्रोत ही खत्म हो जाएगा तो तब ऊर्जा के बिना सृजन सम्भरण और संहार यह तीनों ही अर्थहीन हो जाएँगे। गोपथ ब्राह्मण में इस बात का उल्लेख हुआ है कि **'आत्मा वै संवत्सरस्य विषुवान् अंगानि मासाः'** अर्थात् 'विषुव दिन' संवत्सर का आत्मा है, मास (महीने) उसके अंग हैं। उसके दो पक्ष हैं एक दक्षिण पथ (दक्षिण गोल) और दूसरा उत्तर पक्ष (उत्तर गोल)। ज्ञातव्य है कि **संवत्सर को 'संवसन्ति ऋतवः इत्यर्थः'** अर्थात् संवत्सर जिसमें कि ऋतुओं का वास हो, ऐसा कहा गया है। विषुव ही उसका उद्घाटक है और विषुव सूर्य की देन है।

वैदिक विद्वानों के लिए खासतौर पर जानने योग्य है कि धर्म सिन्धु और निर्णय सिन्धु जैसे ग्रन्थों ने चान्द्र ऋतुओं का विचार दिया है। स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय सम्मुलास में धर्म सिन्धु जैसे ग्रन्थों को कपोल कल्पित ग्रन्थ कहा है।

● **आचार्य दार्शनेय लोकेश**

काशी शास्त्रार्थ वृहत् सम्मेलन

दिनांक : ११ से १३ अक्टूबर २०१९ तक

आर्य जनों को जानकर अपार हर्ष होगा कि अन्धविश्वास–पाखण्ड पर महर्षि दयान्दजी सरस्वती का करारा प्रहार काशी शास्त्रार्थ के रूप में जगत् विख्यात है। इस वर्ष इस शास्त्रार्थ को १५० वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। काशी शास्त्रार्थ की १५० वर्ष पूर्णता पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के तत्वावधान में अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन के रूप में भव्य समारोह का आयोजन वर्णित तिथियों में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निकट किया जाना प्रस्तावित है।

आर्य जनों से आह्वान है कि उपरोक्त तिथियों में अपनी समाजों के आयोजन तथा व्यक्तिगत कार्यों को स्थगित रखें तथा अधिक से अधिक संख्या में पधारकर आयोजन को सफल बनावें।

भारतीय लोकतन्त्र में राजनीतिक दलों की भूमिका

• **डॉ. लक्ष्मी निधि**
१७२, न्यू बारादारी, ह्यूम पाइप रोड
पो. साकची, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष : ९९३४५२१९५४

राजनीति शास्त्र के विशेषज्ञ बर्क ने राजनीतिक दल की परिभाषा एक दी है- **''लोगों की एक ऐसी संस्था जो किसी सिद्धान्त विशेष को, जिसे संस्था के सभी सदस्य स्वीकार करते हैं, आधार बनाकर अपने सम्मिलित प्रयास से राष्ट्रीय हितों की उन्नति के लिए संगठित होती है।''** इसका अर्थ यह है कि निश्चित राजनीतिक सिद्धान्तों और स्पष्ट योजनाओं के अभाव में कोई भी संगठन, राजनीतिक दल नहीं कहला सकता।

आधुनिक लोकतन्त्र के सफल संचालन के लिए ही राजनीतिक दलों की आवश्यकता है जिसके अभाव में सरकार, राजतन्त्र, कुलीन तन्त्र या तानाशाही तन्त्र के हाथों में चली जाएगी। इसीलिए लोकतन्त्र की लाख शिकायतों के बावजूद, हम लोकतन्त्र के पक्षधर हैं। हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि सैद्धान्तिक तौर पर लोकतन्त्र में भले ही अनेक गुण हैं, मगर व्यवहार में इसमें अनेक बुराइयाँ हैं। यह आलोचना भी मानने योग्य है कि लोकतन्त्र में गुणों के बदले संख्या को महत्व दिया जाता है। लोकतन्त्र में खोपड़ियाँ गिनी जाती हैं। उनके अन्दर कितनी बुद्धि है, उसकी परख नहीं की जाती। लोकतन्त्र भीड़ का शासन है। उसमें बहुमत सर्वोपरि होता है। लोकतन्त्र में प्रभावपूर्ण उत्तरदायित्व का निर्धारण नहीं हो पाता।

लोकतन्त्र में एक बात और देखने में आती है कि कई बार अल्पमत के हाथ में सरकार चली जाती है। कोई भी दल जब बहुमत प्राप्त नहीं कर पाता तो विभिन्न राजनीतिक दल अपनी नीति, सिद्धान्त एवं कार्यक्रमों का परित्याग कर सत्ता के लिए गठबन्धन कर सरकार का गठन करते हैं जिनका उद्देश्य राष्ट्रीय नहीं होता। ऐसी सरकार राष्ट्रीय सरकार नहीं कहलाती।

देश पर जब कोई संकट आ जाता है तब सभी राजनीतिक दल अपने दलों से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में एक संविद सरकार बनाते हैं, वह सरकार राष्ट्रीय कहलाती है। अभी जो सरकार बनती है वह विभिन्न पार्टियों की मिलीजुली सरकार होती है जिसमें क्षेत्रीयता, संकीर्णता व स्वार्थ का वर्चस्व रहता है, राष्ट्रहित गौण हो जाता है। इस प्रकार की सरकार में राष्ट्र से ऊपर कुर्सी होती है, इसीलिए 'मन्त्रिमण्डल' भानुमती का पिटारा बन जाता है। मतदाता राष्ट्रीय मुद्दों और सामाजिक समस्याओं को छोड़कर जाति, धर्म व सम्प्रदाय के आधार पर वोट देते हैं जो लोकतन्त्र के विरुद्ध की बात है। उसके कारण वैसे लोग जनप्रतिनिधि बन जाते हैं जो चरित्रहीन, अपराधी एवं अयोग्य होते हैं।

आज जो लोकतन्त्र की तस्वीर हमारे सामने है, उसमें लूट-खसोट, भ्रष्टाचार, अपराध, भाई-भतीजावाद, सिद्धान्तहीनता, नैतिकता विहीनता आदि अभिशापों का उदय हुआ है। आज जनप्रतिनिधि जनता की इच्छाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करता। आजकल हम देखते हैं कि सरकार के संचालन और व्यवस्था में राजस्व का बहुत बड़ा हिस्सा खर्च हो जाता है। झूठे वादे और असत्य भाषण, जनप्रतिनिधि का आचरण बन गया है। जनप्रतिनिधि कोष का वे खुल्लम खुल्ला दुरुपयोग करते हैं। हमारे जनप्रतिनिधि तानाशाही तथा सामन्तशाही का जीवन जीते हैं। वे कल तक कौड़ी-कौड़ी के मोहताज थे, आज नेता और मन्त्री बनते ही अरबों रुपयों के मालिक बन जाते हैं। लोकतन्त्र की आलोचनाओं का कोई अन्त नहीं है। ऐसी स्थिति में, जिन दलों के हाथों में सरकार चलाने का दायित्व दिया जाता है, उन्हें चाहिए कि वे सरकार का संचालन और व्यवस्था इस प्रकार करें कि लोकतन्त्र के सिद्धान्तों एवं नीतियों की मर्यादा की रक्षा हो सके। हमारे देश में संसदीय लोकतन्त्र है, उसके लिए राजनीतिक दलों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। दलगत शासन व्यवस्था की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि कार्यपालिका और व्यवस्थापिका के बीच सौहार्दपूर्ण तालमेल हो।

व्यवस्थापिका में जो दल सत्तारूढ़ होता है, उसी से कार्यपालिका का भी निर्माण होता है। इसीलिए जो राजनीतिक दल, जितना साफ चरित्र का होगा, जिसके पास जितना अच्छा सिद्धान्त होगा, जितनी अच्छी नीति होगी, जितना अच्छा कार्यक्रम होगा, जिनके प्रतिनिधि जितने अधिक सक्षम होंगे, जिसकी दृष्टि जितनी व्यापक होगी, जिसका दृष्टिकोण जितना व्यापक होगा, वह दल उतनी ही अच्छी सरकार दे पाएगा।

यह सही है कि राज्यों और देश को राजनीतिक दल, समस्याओं के समाधान में अपना योगदान देते हैं मगर आजकल राजनीतिक दल बैंड-पार्टी के समान बन गए हैं। उनका नीति और सिद्धान्त से कोई वास्ता नहीं रह गया है। राजनीतिक दल मतदाताओं के सामने अपनी वैकल्पिक योजनाओं तथा प्रतिभाओं को पेश करने में असमर्थ हैं। वे जनता को झूठे नारों तथा झूठे सपनों में भुलाकर वोट ले लेते हैं।

यदि हमें अपने संसदीय लोकतन्त्र की रक्षा करनी है तो हमारे राजनीतिक दलों को अपनी कुर्सी परस्त नीतियों का परित्याग करना होगा और सबल, स्वच्छ, सक्षम और स्थायी सरकार के गठन में अपनी अहम् भूमिका निभानी होगी। हमारे देश में सुदृढ़ द्विदलीय व्यवस्था नहीं है। सफल तथा समर्थ लोकतन्त्र के लिए यह आवश्यक है। भारत के संविधान में संशोधन कर **'द्विदलीय व्यवस्था की स्वीकृति दी जाए'**। एक दल जिसे बहुमत मिलेगा वह सुदृढ़ सरकार निर्धारित समय तक चलाए और दूसरा दल जनहित में वैकल्पिक व्यवस्था को जनता में प्रचारित करे। अब जनता के ऊपर है कि वह किस दल के हाथ में शासन की बागडोर देती है।

फ्रांस में भी बहुदलीय व्यवस्था असफल हुई है। इसीलिए यह आवश्यक है कि देश के समान विचारधारा वाले दल एक-दूसरे के साथ मिल जाएँ। जब सरकार बनाने तथा मन्त्री बनाने के लिए वे हाथ मिला सकते हैं तो कोई कारण नहीं है कि राष्ट्रहित में देश में द्विदलीय व्यवस्था लागू करने में अपनी भूमिका का निर्वहन न करें। इसीलिए लोकसभा को चाहिए कि इस दिशा में पहल करे, क्योंकि संविधान संशोधन के बगैर यह द्विदलीय व्यवस्था लागू नहीं हो सकेगी और इसके बिना लोकतन्त्र सुदृढ़ नहीं हो पाएगा। ■

निर्वाचन चक्र और सुदर्शन चक्र

● देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्', अवन्तिका-१,
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.)
दूरभाष : ०५७१-२७४२०६१

महाभारत कालीन एक प्रकरण है। सम्राट युधिष्ठिर ने अपने राज्याभिषेक के अवसर पर एक वृहद राजसूय यज्ञ आयोजित किया, जिसमें विश्व के राजे-महाराजे, सन्त-महात्मा, श्रेष्ठ सम्मानित विभूतियों तथा सम्बन्धियों, सभी को बुलाया गया। राजसूय यज्ञ की महावेदी के साथ-साथ विशाल सभा सज गई थी। वहाँ एक निर्वाचन की बेला आ गई। इन सभी उपस्थितजनों में कौन सर्वश्रेष्ठ व महामात्य है, जिसको सर्वप्रथम अर्घ्य देकर सम्मानित किया जाए और उच्चासन पर सुशोभित किया जाए। सभी आमन्त्रित-उपस्थित सुसज्जित पुरुष एक-दूसरे की ओर निहारने लगे। सभी लोग टकटकी लगाकर जिस एक व्यक्ति की ओर निहार रहे थे, वे थे देवव्रत भीष्म पितामह। स्थिति को भाँपकर उन्होंने खड़े होकर इस निर्वाचन क्रम को पूर्ण कर दिया। पितामह ने इस समय आयु-विद्या-यश-बल व व्यक्तित्व में सर्व वरिष्ठ होते हुए योगीराज कृष्ण के नाम की घोषणा कर दी। वृहत् सदन तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। कृष्ण के कृतित्व, वक्तृत्व व व्यक्तित्व से भला वहाँ कौन अपरिचित था?

इस घोषणा को सुनकर एक ही पुरुष था, जो व्यथित हो उठा, वह कोई और नहीं, उन्हीं की बुआ का पुत्र शिशुपाल था। बुआ बाल्यकाल से ही उसकी उद्दण्डता से चिन्तित थी। श्रीकृष्ण ने बुआ को आश्वस्त करते हुए कहा था कि आप चिन्ता न करें, इसके ९९ अपशब्द व गालियाँ क्षमा होती रहेंगी, और इतने पर भी इसका सुधार नहीं होता है, फिर तो इसका जीवित रहना सम्भव नहीं। इस वृहत् राजसभा में ऐसा ही हुआ। उसने श्रीकृष्ण को हीन से हीन गालियों से लाद दिया। भीष्म पितामह व अन्य राजपुरुष शिशुपाल के इस व्यवहार को रोकने व दण्डित करने को उद्यत हुए, तो श्रीकृष्ण ने उन्हें रोक दिया और वह गालियाँ देता रहा। ९९ गालियाँ पूर्ण होते ही चल गया श्रीकृष्ण का सुदर्शन चक्र और उसका वध हो गया।

अब आते हैं हम भारत की सत्रहवीं लोकसभा के महा निर्वाचन पर। ऐसा कभी नहीं हुआ था, जैसा इस बार हुआ। चार-पाँच स्त्री-पुरुष ऐसे राजनेता थे, जो एक ही राजनेता को चुन-चुनकर ऐसी गालियाँ देते थे, जो देहात के गलियारों में भी कठिनाई से दी जाती होंगी। इन नेताओं को सचल भाष पर माता की गोद में ख़ेलने वाले शिशुओं के रूप में दिखाया गया- व्यंग्यकार ने इस प्रकार शिशुपाल की याद दिला दी। **सभी ने मिलकर ९९ गालियों की सीमा को अवश्य छू लिया होगा, तभी तो जनता-जनार्दन का सुदर्शन चक्र चल गया, वे सभी धराशायी हो गए।** आइये जानें सुदर्शन चक्र क्या है? शब्दकोश में 'दर्शन' शब्द के अर्थ हैं- नयन, दर्पण, भेंट, साक्षात्कार, ज्ञान, **वह शास्त्र जिसके द्वारा यथार्थ तत्व का ज्ञान होता है।** दर्शन में उपसर्ग 'सु' लगाने से इन सभी में श्रेष्ठता की गुणवत्ता बढ़ जाती है। ऐसे ही सुदर्शन चक्र के संचालन से मान्य मोदी ने सभी चुनावी वक्रोक्ति करने वालों को धूल-धूसरित कर दिया।

एक चौराहे पर दो सजे-धजे व्यक्ति बहुत देर से लड़ रहे थे। हजारों राहगीर उनकी इस लड़ाई को देख रहे थे। एक कहता था- मैं बड़ा हूँ, दूसरा भी कहता था- मैं बड़ा हूँ। कोई निर्णय ही नहीं हो पा रहा था। वहाँ से निकले एक सन्त, उन्होंने भी यह दृश्य देखा। उनमें से एक मजबूत लड़ाके को अपने पास बुलाया और उसके कान में एक मन्त्र फूँक दिया- जो अपने को बड़ा कहता है वह बड़ा नहीं होता, जो दूसरे को बड़ा कहता है वही बड़ा होता है। वह व्यक्ति मैदान में पहुँचा और जोर से बोला- हाँ भाई! आप ही बड़े हैं, दूसरे ने भी यही दोहरा दिया और लड़ाई बन्द हो गई। महर्षि दयानन्दजी ने आर्यों की नित्य प्रति की प्रार्थना व पुरुषार्थ के निमित्त **'आर्याभिविनय'** ग्रन्थ में एक मन्त्राभ्यास का विधान किया है। देखिये-

न तं विदाथ यऽइमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृपऽउक्थशासश्चरन्ति।।

-यजु.१७.३१

हे मनुष्यो! तुम उसे नहीं जानते जिसने इन लोक-लोकान्तरों को बनाया है। वह तुमसे भिन्न, स्वतन्त्र सत्ता वाला होता हुआ भी तुम्हारे भीतर विद्यमान है, फिर भी आश्चर्य है तुम उसे अनुभव नहीं कर पाते। क्योंकि तुम अज्ञानरूपी कोहरे में घिरे हुए, व्यर्थ बकवाद में कसे हुए, रात-दिन अपनी वासनाओं में उलझे हुए, शास्त्रों का पाठ करते, पर उनका पालन नहीं करते हो। ऐसे लोगों के पास होते हुए भी प्रभु दूर ही रहता है। मोदी के प्रति अपशब्दों का प्रभाव दिल्ली से न्यूयॉर्क तक पहुँचा। विश्व प्रसिद्ध टाइम मैगजीन ने अपने एक अंक में मोदी को **'डिवाइडर-एन-चीफ'** की पदवी दे डाली, किन्तु भारत में उनकी प्रचण्ड जीत ग्राह्यता को देखकर अगले ही अंक में मोदी की महानता को स्वीकार कर घोषणा कर दी- **'मोदी इज यूनाइटेड इंडिया लाइक नो प्राइम मिनिस्टर इन डिकेड्स'** अर्थात् पहले महान तोड़क कहा, फिर सुधार करके उन्हीं मोदी को भारत का महान योजक बता दिया। भूल करना मनुष्य के स्वभाव की पराधीनता है किन्तु उसका सुधार कर लेना उसकी महानता है। पर भारत में ऐसा नहीं हुआ। मोदी पर गालियों की बौछार करने वालों ने पश्चाताप तो नहीं किया, किन्तु वे सन्ताप में आ गए। दक्षिण भारत के एक राजनेता मतगणना व परिणाम मन्त्रणा से पूर्व ही ई.वी.एम. अर्थात् विद्युत मतांकन मंजूषा पर दोषारोपण कर चुनाव को ही अस्वीकार करने की भूमिका बना रहे थे, क्योंकि उन्हें अपनी पराजय का पता था। उनकी इस घनघोर दौड़-धूप को अन्य विपक्षी दलों ने ठुकरा दिया और कह दिया कि परिणाम आने के बाद ही कार्यवाही करेंगे। परिणाम आया, वह स्वयं व

मुस्लिम युवती का शुद्धि-संस्कार

आर्य समाज शृंगार नगर, लखनऊ द्वारा २० मई २०१९ को १८ वर्षीया मुस्लिम युवती सुश्री चाँदनी, सुपुत्री श्री निसार अली, जनपद : उन्नाव का शुद्धि-संस्कार किया गया। युवती ने अपना नाम **'चाँदनी'** बनाए रखा।

● **राकेश माहना,** *मन्त्री : आर्य समाज शृंगार नगर, लखनऊ*

उनका दल सत्ता से बाहर हो गया और वे श्रीमान मन मसोसकर रह गए।

अमेरिका व अन्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों व राजनेताओं ने भारत के महा निर्वाचन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। विदेशों के भारतवंशी राजनेताओं ने ऐतिहासिक संख्या में मतदान के प्रति गौरव की अनुभूति की। एक और जिज्ञासा का स्पष्टीकरण हो गया। रामायण में वर्णन है कि श्रीराम के वक्ष में भी यज्ञायोजन होते थे, और राक्षस रावण के पक्ष में भी यज्ञाहुतियाँ दी जाती थीं। इनका अन्तर भी पता चल गया। एक सुनामधन्य राजनेता ने अपनी दिग्विजय के लिए प्रभूत संख्या में सन्तों को बुलाया, उन्होंने तान्त्रिक यज्ञ किये। एक किन्हीं पायलट बाबा ने पाँच क्विंटल लाल मिर्च का यज्ञ किया और अपने प्रत्याशी के हारने पर उसी हवन कुण्ड में समाधिस्थ होने की घोषणा की थी। अपने प्रत्याशी की पराजय के बाद वे अपनी घोषणा से पलट गए हैं तथा समाधिस्थ होने के स्थान पर मध्यप्रदेश सरकार के मन्त्री होने के नाते दौरे करने के लिए हैलिकॉप्टर माँग रहे हैं। पुरातन भारत के एक और सन्देश से साकार होता हुआ देखा गया है, वह यह कि देश का कोई भी नागरिक अपनी त्याग-तपस्या-सेवा-समर्पण के आधार पर बिना भेदभाव के कितनी ही ऊँचाई प्राप्त कर सकता है। न केवल राष्ट्रपति-प्रधानमन्त्री के पद पर प्रतिष्ठित हो सकता है, वह अपने आचरण से अराजनीतिक क्षेत्र में भी श्रद्धा का पात्र बन सकता है। इसी परिप्रेक्ष्य में श्री काशी विद्वत् परिषद ने प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी को **'राष्ट्र ऋषि'** की उपाधि से अलंकृत करने का निर्णय किया है।

भगवान केदारनाथ की कन्दराओं में ध्यान लगाने वाले मोदी की यही धुनि है, जो धर्म सम्प्रदाय की सीमाओं को तोड़कर मानवता के सरतिज खिला देते हैं। जिस दिन मोदी प्रचण्ड बहुमत के साथ पदासीन हो रहे थे, उसी दिन मुस्लिम महिला मैनाज बेगम (वजीरगंज, गोण्डा) ने पुत्र रत्न को जन्म दिया। जन्मदायिनी माँ के प्रस्ताव पर परिवार ने सामूहिक निर्णय करते हुए, जिला अधिकारी को शपथ-पत्र प्रेषित कर दिया, जिसमें शिशु के नामकरण की घोषणा कर दी- नाम नरेन्द्र दामोदरदास मोदी। ससुर इदरीस ने कहा- इससे अच्छा नाम आज की तारीख में और नहीं हो सकता है। भारत भूमि की भव्य भावनाओं का मान और अभिमान-सम्मान बढ़ाते रहना, यही बोध-प्रमोद और सम्बोध विस्तारित करना ही मोदी का पर्याय होना चाहिए। ■

सौभाग्यप्रदे श्रीमती शर्मा वैदिक **दिनांक २४.५.२०१९**
सद्गुण प्रापक, प्रजारंजन
सम्प्रभुत्व सम्पन्न श्री शर्माजी 'वैदिक'
स्नेहाभिवादन- सप्रेम नमस्ते।

अत्र कुशलम् तत्रास्तु। अग्र वृत्तान्त हेतु तो सर्वप्रथम सौ.कां. प्रीतिका संग चि. रोहित कुमार व सौ.कां. स्तुति संग चि. अक्षय कुमार के वैदिक परिणयोत्सव विवाह संस्कार के शुभ अवसर पर आपको बहुत-बहुत बधाई। इस अवसर पर आपके श्रीमुख से आमन्त्रण देने व 'वैदिक संसार' के द्वारा सादर आमन्त्रण दे सम्मिलित होने हेतु निमन्त्रण देने पर आपका आभारी हूँ।

आपके अतिशय स्नेह एवं अवसर की महत्ता के परिप्रेक्ष्य में हार्दिक इच्छा १७-१८ मई को ब्यावर पहुँचकर इस सुअवसर पर आयोजित विवाह संस्कार में जहाँ एक विद्यार्थी के रूप में मेरी उपस्थिति होती, परिणामतः विवाह संस्कार सन्दर्भित कुछ नया सीखकर आता तथा विवाह समारोह का साक्षी बन अपने परिचितों व नए गणमान्य महानुभावों से मुखातिब होता। किन्तु समयाभाव, कार्याधिक्यतावश प्रतिकूल परिस्थितियों ने ब्यावर आने से रोका। श्री मोहनलालजी शर्मा (धमरपुरी वाले) से मेरी बरखेड़ी में चर्चा भी हुई थी। उन्होंने भी ब्यावर चलने का निवेदन किया था पर...। इसका मुझे खेद है और अनुपस्थिति के लिए आपसे क्षमाप्रार्थी हूँ। मेरी अनुपस्थिति को अन्यथा न लें।

परम पिता परमात्मा की महती अनुकम्पा से आशा है विवाह समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ होगा। इस महत्वपूर्ण अवसर पर आपको सभी परिजनों को बहुत-बहुत बधाई। परमात्मा से प्रार्थना है कि दोनों नवयुगल दम्पत्ति आपके द्वारा दिये गये संस्कारों से पल्लवित व पोषित हो जीवन में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर होते रहेंगे। मंगल कामना है कि उनका भविष्य सफल, सार्थक व उज्ज्वल हो। पुनः युगल नव दम्पत्ति को ढेर सारी बधाई। गृह मन्दिर के सभी जनों को योग्याभिवादन। शेष चर्चा भेंट होने पर होगी।

● डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण 'सत्यार्थी'
नागदा जंक्शन, जनपद : उज्जैन (म.प्र.)

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

दिनांक : ११ से १४ जुलाई २०१९ तक
स्थान : निज निवास, हरदा रोड, चिचोली, जिला बैतूल (म.प्र.)

आमंत्रित विद्वान

आशीर्वचन : **स्वामी ऋतस्पतिजी सरस्वती, होशंगाबाद (म.प्र.)**
यज्ञ ब्रह्मा : **आचार्य योगेन्द्रजी याज्ञिक, होशंगाबाद (म.प्र.)**
भजनोपदेश : **पं. कुलदीपजी आर्य, बिजनौर (उ.प्र.)**
वेदपाठ : **गुरुकुल शिवगंज की ब्रह्मचारिणियाँ**

परम पूज्य जन्मदायिनी माता **श्रीमती इन्द्रादेवी आर्या** की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर माता के उपकारों एवं संस्कारों को नमन करते हुए उनकी स्मृति तथा परम श्रद्धेय पूज्य पिता श्री शिवकिशोरजी आर्य के शुभाशीर्वाद तथा मार्गदर्शन में परिवार द्वारा चतुर्दिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वैदिक सत्संग का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर समस्त धर्मनिष्ठ जन सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक एवं सम्पर्क
विजय (लड्डू) आर्य (सुपुत्र), चलभाष : ९९९३१४५०१८

आर्य समाज में वीर सावरकर जयन्ती

आर्य समाज शृंगार नगर, लखनऊ में (प्रधान डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक' की अध्यक्षता में) दिनांक २८.५.२०१९ को स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर की जयन्ती पर एक गोष्ठी आयोजित की गई। गोष्ठी में कहा गया कि वीर सावरकर का भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में विशिष्ट स्थान है। उन्होंने अप्रतिम यातनाएँ सही हैं और एक सुदृढ़ राष्ट्र की साधना में अपना जीवन होम किया है। श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव ने प्रतिवर्ष जयन्ती मनाने का संकल्प ग्रहण करवाया।

अन्धकार युग-सुधार युग-जागरण युग-स्वतन्त्रता युग के पश्चात्

आज के युग को हम क्या नाम दें?

• पं. उम्मेदसिंह विशारद
वैदिक प्रचारक, गढ़ निवास मोहकमपुर
देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष : ९४११५१२०१९, ९५५७६४१८००

ईश्वर की इस विशाल सृष्टि में मानव अपने ज्ञान के अनुसार विचार व्यक्त करने में स्वतन्त्र है और यह स्वाभाविक वैज्ञानिक व्यवस्था है कि मानव समाज के विचारों का व कार्यकलापों के शब्द आकाश में स्थिर हो जाते हैं। चाहे वह विचार, ईश्वर के प्रति हों, चाहे सत्य, असत्य, धम-अधर्म, ज्ञान, अज्ञान के प्रति हों। और मानव समाज अपने संस्कारों द्वारा जिन शुभ व अशुभ विचारों पर चलता है, उनमें आकाशीय शब्द अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं। और यह शृंखला प्रत्येक युग को प्रभावित करती हैं। विचारों की सार्थकता अपना प्रभाव समाज के चलन पर डालकर युग का निर्माण कर देते हैं। महाभारत काल के बाद आज तक जिन-जिन विचारों के युग से गुजरना पड़ा उस पर संक्षिप्त व्यक्तिगत प्रकाश डालते हैं।

भारत का अन्धकार युग

अंग्रेजों तथा मुसलमानों के भारत में आकर शासन करने से पहले और महाभारत काल के बाद भारत की बड़ी दयनीय स्थिति थी। भारत वर्ष में मत-मतान्तरों की बाढ़ आ गई थी, नारी और शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं था, सामन्तशाहियों द्वारा गरीब असहाय जनता का शोषण चरम पर था। ईश्वर की जगह काल्पनिक देवी-देवताओं की पूजा होने लगी थी, पत्थरों की मूर्तियाँ बनाकर धर्म का व्यापार चल पड़ा था, जाति-पाति, छुआछूत का प्रबल समर्थन था, वेदों के मन्त्रों के रूढ़ अर्थ करके जनता को बहकाया जा रहा था। चारों ओर अनीति व असत्य का बोलबाला था। अखण्ड राष्ट्र भक्ति के बजाय छोटे-छोटे राज्यों का चलन होकर अपनी-अपनी चला रहे थे तथा अन्य अनेक कारण थे।

इस अन्धकार का लाभ मुसलमानों ने उठाया, क्योंकि देश रूढ़ियों का शिकार हो चला था। जो कुछ रहा-सहा था उसे इस्लामी शिक्षा ने उखाड़ दिया था। मुसलमानों का शासन इस देश में ८०० साल तक रहा। यद्यपि राणा प्रताप तथा शिवाजी आदि ने भारत की प्राचीन परम्परा की रक्षा करने का प्रयत्न किया, तथापि मुस्लिम शासन हावी रहा। मुस्लिम शासन का युग भारत में अन्धकार युग रहा। इस युग में हम अपना सब कुछ भुलाने लगे और परवस्ता के कारण रूढ़ियों के दास हो गए। तलवार के बल पर धर्म परिवर्तन होने लगा, मुसलमानों ने हिन्दुओं की बहू-बेटियों पर भी अत्याचार किये। हिन्दुओं के मन्दिरों को तोड़ा जाने लगा, मन्दिरों को मस्जिदों का रूप दिया जाने लगा। सारे हिन्दू समाज का वैदिक संस्कार व सभ्यता के संस्कार टूट गए थे, चारों ओर हिन्दुओं का कत्लेआम होने लगा, जनेऊ तोड़े जाने लगे, चोटियाँ काटो अन्यथा गर्दनें कट जाती थी। इस प्रकार भारत की जनता पर अपनों व मुसलमानों द्वारा भीषण अत्याचार होने लगे। इसलिए हम उस युग को महान् अन्धकार युग कह सकते हैं।

भारत का सुधार युग व जागरण युग महर्षि दयानन्द व अन्य सुधारक

मुस्लिम शासन के बाद अंग्रेजों का शासन आया। अंग्रेजों का शासन लगभग २०० वर्षों तक रहा। अंग्रेजों को हम कितना ही बुरा कहें किन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि भारत में प्रचलित कुरीतियों को दूर करने का सूत्रपात इस काल में हुआ। वे लोग व्यापारी बनकर आए थे। यहाँ की अन्ध परिस्थितियों से शासन-सूत्र उनके हाथों में आ गया। और व्यापारी राजा बन गए। लॉर्ड मैकाले ने भारत की शिक्षा पद्धति को बदलकर अंग्रेजी शासन को और भी पक्का कर दिया। व्यक्ति की स्वतन्त्रता के विचार पढ़े-लिखे लोगों में भ्रम फैलाने लगे थे, अंग्रेजी ग्रन्थों को पढ़कर भारतीयों को उनका परिचय होने लगा। अंग्रेज ऐसे व्यक्ति उत्पन्न करना चाहते थे जो शक्ल-सूरत से भारतीय हों परन्तु विचारों से अंग्रेज हों। और पढ़े-लिखे लोग यूरोप की सुधार क्रान्ति से परिचित हो गए और उनके हृदय में भारतीय रूढ़ियों को उखाड़ने की लालसा जाग गई। इस सुधार युग की जन्मदायी यद्यपि अंग्रेजी शिक्षा थी तो भी इस सुधार युग को लाने में महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी, राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागरजी, केशवचंद सेनजी आदि ने अनथक कार्य किया।

१. राजा राममोहन राय (१७७२-१८३३) : ये ६१ वर्ष तक जीवित रहे। इन्होंने सामाजिक चेतना जागृत की। सतीप्रथा उन्मूलन में आपका विशेष योगदान रहा।

२. ईश्वरचंद्र विद्यासागर (१८२०-१८९३) : ये ७१ वर्ष तक जीवित रहे। इनका सुधार क्षेत्र विधवाओं की दुर्गति को दूर करने हेतु कार्य का रहा।

३. केशवचंद सेन (१८३६-१८८४) : ये ४८ वर्ष तक जीवित रहे। ये सामाजिक जागृति के प्रतिनिधि थे। ये समाज के सब प्रकार के प्रतिबन्धों को तोड़ डालना चाहते थे।

४. महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी (१८२४-१८८३) : ये ५९ वर्ष की आयु तक जीवित रहे। इन्होंने समाज में व्याप्त सम्पूर्ण अन्धविश्वासों व सामाजिक कुरीतियों को एक सिरे से चैलेंज के रूप में स्वीकार करके रण क्षेत्र में कूद पड़े थे। इन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम का सूत्रपात किया था। सर्वप्रथम वेदों के रूढ़ अर्थों पर प्रहार किया। उनका कहना था कि पंडित लोग वेदों के मन्त्रों का ऐतिहासिक रूढ़ अर्थ करते

हैं। रूढ़ीवाद के वे प्रबल विरोधी थे। उन्होंने तत्कालीन विद्वान् सायणाचार्य, मेक्समूलर, महीधर, जेकोवी के वेदों के अर्थों को पलटकर ईश्वर परक अर्थ किये। उन्होंने सिद्ध किया कि वेदों में नारी और शूद्रों को पढ़ने का अधिकार है। उन्होंने कहा- वेदों में जाति जन्म से नहीं, वर्ण से निर्धारित है। छुआछूत आडम्बर है, मृतक भोज, देवी-देवताओं के नाम पर निरीह पशुओं की हत्या भयंकर पाप है। यज्ञ करने का सबको अधिकार है तथा जनेऊ भी सभी पहन सकते हैं। जो उसका पालन कर सकता है। वेदों में मूर्ति पूजा नहीं है। वह ईश्वर निराकार है, सर्वव्यापक है। इस प्रकार उनके काल में जितने भी समाज सुधारक हुए, उन्होंने एक विषय में क्रान्ति की, किन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने तमाम सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक अन्धविश्वासों व रूढ़ी परम्पराओं के विरोध में आवाज उठाई और सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ लिखकर तथा आर्य समाज की स्थापना कर सदैव के लिए एक प्रकाश पुंज बनाकर चल दिये।

भारत का स्वतन्त्रता युग

महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी स्वतन्त्रता आन्दोलन के सूत्रधार थे। जब १८५७ का गदर हुआ तब महर्षि की आयु मात्र ३३ वर्ष थी। १८५७ के गदर व आन्दोलन को महर्षि दयानन्दजी ने १८६० में महसूस किया। इसका उल्लेख उन्होंने पूना प्रवचन में किया था। अर्थात् तीन वर्ष तक महर्षि स्वतन्त्रता आन्दोलन की नींव गुप्त रूप से रख रहे थे। उन्होंने सामाजिक चेतना जगाने के साथ-साथ राष्ट्रीय चेतना भी जगाना शुरू किया था। इसीलिए अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने स्वराज्य सर्वोत्तम होता है, निर्भीकता से उल्लेख किया था। १८५७ से लेकर १९४७ तक स्वतन्त्रता आन्दोलन में लाखों देशभक्त शहीद हुए थे, उन सब पर महर्षि दयानन्दजी एवं आर्य समाज का अत्यधिक प्रभाव पड़ा था। व्यक्ति की दासता से मुक्ति की जो प्रक्रिया भारत से प्रारम्भ हुई थी, उसका अन्त १९४७ में हुआ जब भारत स्वतन्त्र घोषित किया गया। इसमें सन्देह नहीं है कि महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन के फलस्वरूप आज भारत न मुस्लिम शासन के अधीन है और न अंग्रेजी शासन के अधीन है। भारतवासी १२०० वर्षों की राजनीतिक दासता से तो मुक्त हो गये किन्तु अन्धकार युग, सुधार युग, जागरण युग की दासता के अवशेष अभी तक बने हुए हैं, जिन्हें मिटाने का संघर्ष जारी है। अभी तक भारतवासी अनेक धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वासों से बन्धे हुए हैं अर्थात् आज भी हम भारतवासी सत्य, आध्यात्मिक, शुद्ध राजनीतिक, स्वस्थ समाज से दूर असत्य चलन की गुलामी में कहीं न कहीं जकड़े हुए हैं।

हम आज के इस युग को क्या नाम दें?

मैं आज के इस भौतिक युग को **'अन्ध भेड़चाल युग'** की संज्ञा देता हूँ क्योंकि पूर्वकाल में हमारा भारत देश सम्पूर्ण विश्व में आध्यात्मिक सन्देश देने का वाहक रहा है। भारत ने अपनी छाती पर अनेक विदेशी अपसंस्कृतियों को झेला है, किन्तु अपनी मूल वैदिक संस्कृति अभी भी जिन्दा है। वर्तमान में हिन्दू रूढ़ीवादी संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति, क्रिश्चियन संस्कृति, बौद्ध संस्कृति, सिख संस्कृति आदि मूल ईश्वरीय वैदिक संस्कृति को प्रभावित कर रही है। इसी कारण सत्य ज्ञान के अभाव में भारतीय राष्ट्रपति तक भी जड़ की पूजा कर रहे हैं। पत्थरों की मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा में उपस्थित होते हैं, साधारण जनता की तो बात ही क्या है। पाश्चात्य संस्कृति भारतीयों के चूल्हे तक पहुँच गई है। परिवारों का आदर्श सत्य व्यवहार दिनोंदिन बिगड़ रहा है। विवाह-शादियों में शराब जमकर पी जाती है। विवाह संस्कार की केवल खानापूर्ति हो रही है। विद्यालयों में केवल व्यावसायिक शिक्षा दी जा रही है, जीवन के आदर्श संस्कार नहीं दिये जा रहे हैं। धर्म के सत्संगों के नाम पर अनार्ष ज्ञान परोसा जा रहा है। जनता जहाँ ज्यादा भीड़ देखती है वहीं अपना रुख करके सत्य की अनदेखी करती हुई भेड़चाल चल रही है।

मैं मानता हूँ कि आर्य समाज सत्य का प्रतिपादन तो कर रहा है किन्तु व्यक्ति विशेष की ओर सिमटता जा रहा है। आर्य परिवारों पर उपरोक्त विचारों का गहन प्रभाव पड़ रहा है, क्योंकि आर्य परिवारों की अधिकांश पुत्र-पुत्रियों की शादी गैर आर्य समाज परिवारों में हो रही है। इसलिए वैदिक वातावरण अवैदिकता में दिनोंदिन घुलता जा रहा है। और भी अनेक कारण हैं। कलेवर बढ़ने के कारण नहीं दे रहे हैं। आप स्वयं सत्य के ग्राही हैं, हमने इस युग को **'अन्ध भेड़चाल युग'** का नाम दिया है, आप इस युग का नामकरण किस प्रकार करना चाहेंगे? ■

काशी शास्त्रार्थ पर ऐतिहासिक पुस्तक

काशी शास्त्रार्थ को इस नवम्बर में एक सौ पचास वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। भारत वर्ष ही नहीं, अपितु विश्व की आध्यात्मिक सोच को दिशा देने वाला यह शास्त्रार्थ दिनांक १६ नवम्बर सन् १८६९ के दिन स्वामी दयानन्द और काशी के पौराणिक पण्डितों के बीच हुआ था। इस महत्वपूर्ण शास्त्रार्थ एवं वर्ष को ध्यान में रखते हुए डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे लिखित ''काशी शास्त्रार्थ विजय, नाटक'' यह ऐतिहासिक रचना प्रकाशित होने जा रही है। इस नाट्य विधा की रचना में काशी शास्त्रार्थ की पूर्वापर घटनाओं एवं संभाव्य संवादों को विशेष रूप से उद्धृत किया गया है। पुस्तक में काशी नरेश और पौराणिक पण्डितों का स्वामीजी के साथ का आचरण एवं बर्ताव का विशेष रूप से वर्णन किया गया है। जो अब तक की पुस्तकों में नहीं मिलता। तथ्यात्मकता एवं वास्तविकता का ध्यान रखते हुए तथा शास्त्रार्थ की ऐतिहासिक महत्ता और गरिमा का ध्यान रखा गया है। इस नाटक में कल्पना विलास को कोई जगह नहीं दी गई है। हाँ, इतना जरूर है कि स्वामीजी के काशी वास्तव्य में जो घटनाएँ घटित हुईं, उन घटनाओं का साभिनय संवाद रूप में वर्णन किया गया है। सम्पूर्ण नाट्य विधा में प्रस्तुत किया गया यह **''काशी शास्त्रार्थ विजय, नाटक''** प्रकाशन हेतु प्रस्तुत है।

इस सम्बन्ध में आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं आर्य सज्जनों से निवेदन है कि इस ऐतिहासिक पुस्तक के प्रकाशन हेतु अपना सहभाग एवं परामर्श देकर सहयोग करें।

लेखक : डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे (विद्याभास्कर)
चलभाष : ९९२२२५५५९७, ७०२८६८५४४२

जागो! देश को समृद्ध बनाएँ, जनसंख्या त्रासदी से बचाएँ

सालाना जन्मते ३ करोड़ जबकि होना चाहिए ०.५ करोड़

यह जनसंख्या विस्फोट, नंगे-भूखे, भिखमंगों और अपराधियों को बढ़ा रहा है।
बेकारी का पहाड़ खड़ा कर रहा है।
विकास को बढ़ने ही नहीं दे रहा है।
गौरवमयी संस्कृति को चट कर रहा है।
धर्म को पाखण्ड में रूपान्तरण कर रहा है।
सीमाओं पर खतरा पैदा कर रहा है।

धर्माचार्यों से निवेदन है कि आबादी विस्फोट नियन्त्रण के लिए सरकार पर दबाव बनाएँ। राम मन्दिर तो १०-५० साल में तैयार होगा, पर कानून तो ५-१० दिनों में बन जाएगा और ५-१० साल में भारत को स्वर्ग बना देगा। ऐसा कानून सालाना जन्मों को ५० लाख ले आए। सरकार से कहें अगर कुछ न हो तो संविधान संशोधन करें। हर घर राममय बनें।

● **मोहनलाल कोचर**
चलभाष : ९६७४८८८२६

POPULATION EXPLOSIVE

समस्त समस्याओं का एक प्रमुख कारण जनसंख्या विस्फोट

वर्तमान समय की माँग : हम दो हमारे दो और सबके दो

● **विनोद बी. वामजा**
उपलेटा, जनपद : राजकोट (गुजरात)
ईमेल : vbvamja@gmail.com
fb.com/vinod.vamja

दुनिया में भारत का विस्तार २.४ प्रश है और सातवें क्रम पर है। आबादी में १८ प्रश के साथ दूसरे क्रम पर है। आबादी में चीन प्रथम है किन्तु चीन का जमीन विस्तार भारत से तीन गुना है। अमेरिका, ब्राजील, फ्रान्स, नॉर्वे, स्वीडन जैसे समृद्ध देशों से भारत की आबादी १० से १५ गुना ज्यादा है। ऑस्ट्रेलिया, रशिया, केनेडा जैसे बड़े देशों से भारत की जनघनत्व ५० से १०० गुना ज्यादा है। अमेरिका की आबादी ३२ करोड़ होने के बावजूद भी वो देश सुपर पॉवर है। विज्ञान के जमाने में आबादी से ज्यादा टेक्नालॉजी का महत्व है। ऑस्ट्रेलिया देश में जितनी जनसंख्या है, उतनी हमारे देश में हर साल आबादी बढ़ती है। वो देश भारत से तीन गुना बड़ा है। चीन के सन्दर्भ में ४० करोड़ और अमेरिका के सन्दर्भ में हमारी जनसंख्या १० करोड़ होनी चाहिए, किन्तु है १३२ करोड़।

विशेष टिप्पणी : यह जानकारी आप इन्टरनेट या जनरल नॉलेज की पुस्तक में देख सकते हैं।

नोट : पृथ्वी का कुल जमीनी क्षेत्रफल १३३० लाख वर्ग किलोमीटर

विश्व के सबसे बड़े प्रथम दस देश, विस्तार और आबादी के अनुसार (वर्ष २०१६ के आँकड़े)

क्रम	देश	क्षेत्रफल	विस्तार प्रश	घनत्व
१.	रूस	१७० लाख	१२.८%	८.६
२.	केनेडा	१०० लाख	७.५%	३.१
३.	चीन	९६ लाख	७.२%	१४३
४.	अमेरिका	९४ लाख	७.०%	३४
५.	ब्राजील	८५ लाख	६.४%	२४
६.	ऑस्ट्रेलिया	७७ लाख	५.८%	२.७
७.	भारत	३३ लाख	२.४%	३९२
८.	अर्जेन्टीना	२८ लाख	२.१%	१३.३
९.	कजाकिस्तान	२७ लाख	२.०%	५.९
१०.	अल्जीरिया	२४ लाख	१.९%	१२.६

क्रम	देश	आबादी	घनत्व	जनसंख्या
१.	चीन	१३७ करोड़	१४३	१८.५%
२.	भारत	१२९ करोड़	३९२	१७.५%
३.	अमेरिका	३२ करोड़	३४	४.०%
४.	इंडोनेशिया	२६ करोड़	१३५	३.६%
५.	ब्राजील	२० करोड़	२४	२.८%
६.	पाकिस्तान	१९ करोड़	२४४	२.५%
७.	नाइजीरिया	१८ करोड़	२०२	२.४%
८.	रूस	१५ करोड़	८.६	२.०%
९.	बांग्लादेश	१६ करोड़	१०८०	२.२%
१०.	जापान	१२ करोड़	३१७	१.७%

है। (निर्जन उत्तर-दक्षिणी ध्रुव को छोड़कर) और बस्ती ७४० करोड़ (७.४ अरब) है। दुनिया का कुल जनघनत्व ५५ मनुष्य प्रति वर्ग कि.मी. है।

मानव सूचक अंक (जीवनधारा) में भारत बहुत पीछे है। व्यक्तिगत आय, प्राथमिक जरूरतें (रोटी, कपड़ा, मकान, पानी इत्यादि), आरोग्य, स्वच्छता, शिक्षा, विश्व व्यापार, जीडीपी इत्यादि में भारत २०० देशों में से १३०वें स्थान पर है जो कि सैन्य, सैटेलाइट, मिसाइल, मोबाइल, टेक्नालॉजी, अन्न, चाय उत्पादन इत्यादि में तो टॉप-टेन में है किन्तु जनघनत्व के कारण विकास रुक जाता है।

अब जरा सोचें कि अपने गाँव या शहर में बस्ती आधी हो जाए तो कोई गरीब रहेगा? किन्तु बस्ती १०वाँ हिस्सा ही हो तो गरीबी कैसी? उल्टा हर एक परिवार के पास बंगला, मोटर गाड़ी, सौ-सौ एकड़ जमीन सब कुछ होता। हाँ, आज भी १० प्रश लोगों के पास तो यह सब है किन्तु हमने पहले से ही समृद्ध देशों की तरह वास्तविक अभिगम अपनाया होता और ९० प्रश आबादी ही न होती और उसके पीछे कल्याण योजनाएँ, सबसिडी, रास्ते, मकान, गटर, पानी, बिजली इत्यादि का वर्षों से होता अरबों-खरबों का खर्च न होता। तो हम कहाँ होते? ९० प्रश बस्ती के पीछे हम समय, शक्ति न बिगाड़ते और वो शक्ति, विज्ञान में लगाई होती तो आज भारत दुनिया का सबसे ज्यादा समृद्ध और शक्तिशाली देश होता। समृद्धि नारे लगाने या पूजा भक्ति भावना से नहीं आती, ठोस कदम उठाना पड़ता है।

हमारे देश का सबसे ज्यादा खर्च पेट्रोलियम में होता है। हमारी जरूरत का ७० प्रश से ७५ प्रश क्रूड, पेट्रोल, डीजल, विदेश से आता है। भारत में २४ प्रश से ३० प्रश पेट्रोलियम का उत्पादन होता है। जरा सोचिये, हमारी आबादी भी १० प्रश ही होती तो बाहर से एक रुपये का भी पेट्रोलियम मंगाना नहीं पड़ता। इतना ही नहीं, किन्तु व्यक्तिगत उपयोग भी दो गुना ज्यादा मिलता। महँगाई बढ़ने का एक बड़ा कारण पेट्रोलियम पदार्थों के भाव बढ़ने का है जो जनसंख्या विस्फोट के कारण है। जिसमें हर साल अरबों डॉलर खर्च होता है। कहा जाता है कि अंग्रेजों और मुगलों ने जितना धन नहीं लूटा, उससे ज्यादा धन पेट्रोलियम की आयात में खर्च हुआ है। आबादी के कारण वर्षो से सोना–चाँदी, इमारती लकड़ी, खाद्य तेल (पामोलीन), दवाई, शस्त्र और अनेक प्रकार के साधन, मशीनरी आयात करने पड़ते हैं किन्तु जनसंख्या जो १० प्रश में ही सीमित होती तो यह सब खर्च बच जाता। इतना ही नहीं, निर्यात में उससे ज्यादा कमाते। तो हम कितने समृद्ध हो जाते?

यूरोप, अरब, अमेरिका जैसे समृद्ध देशों में २४ घंटे शुद्ध पानी मिलता है। अच्छे से अच्छे रास्ते, अस्पताल, स्कूल–कॉलेज तथा सार्वजनिक स्थल हैं। शिक्षा दर १०० प्रश है। घर जैसी स्वच्छता बाहर भी है। बिना मिलावट के शुद्ध सब्जी, दूध, अनाज मिलते हैं। वो अच्छे स्वास्थ्य, उच्च जीवन स्तर और अधिक आयु पाते हैं। वहाँ दुर्घटना और अपराध दर भी शून्य है। इस बात पर विश्वास न हो तो उन समृद्ध देशों की यात्रा कीजिये या विदेश में रहने वाले अपने संबंधियों मित्रों से पूछिये अथवा स्वामी सच्चिदानन्द जैसे तटस्थ लेखक की विदेश प्रवास की पुस्तकें पढ़ें। अब यहाँ हमारे नल में एक घंटा भी पानी नहीं आता, वो भी गन्दा। गर्मी में तो ८ से १० दिन बाद पानी मिलता है। **प्राथमिक सुविधा के बदले हम करोड़ों रुपयों से सैकड़ों मन्दिर बनवाते हैं।** यह विदेशी को पता चले तो वो हमारे बारे में क्या सोचेंगे? जबकि सबको पता है हर साल वैश्विक आँकड़े जारी होते हैं।

हमारे देश में ३० प्रश लोगों को पक्के आवास नहीं है, झोपड़े हैं। ४५ प्रश लोगों को शौचालय नहीं है। देश के ४० प्रश गाँवों में बिजली नहीं है। ३० प्रश लोगों को शिक्षा नहीं है। पाठशाला, सरकारी कार्यालय, अस्पतालों में पूरी सुविधाएँ नहीं हैं। गन्दगी की भरमार है। अपराध, दुर्घटना, यातायात, प्रदूषण, मिलावट, भ्रष्टाचार, कुपोषण, भुखमरी में हम आगे हैं। फिर भी हम कहते हैं 'हम महान हैं, हमारी संस्कृति महान है। हम २१वीं सदी में विश्व का नेतृत्व करेंगे।' कहने वाला अज्ञानी है या हमको भटका रहा है?

अनेक विकट समस्याओं का कारण जनसंख्या विस्फोट होने के बावजूद उसका बचाव करने वाले देशद्रोहियों की इस देश में कमी नहीं है। वो कहते हैं कि वो तो गरीबों का मनोरंजन है। वो मूर्ख के सरदारों का क्या कहना? नसबंदी या लेप्रोस्कोपी ऑपरेशन से सेक्स में कोई कमी नहीं आती। वो नसबंदी अपनाएँ या किसी डॉक्टर को पूछे तो पता चलेगा। कम बच्चे से खर्च, संताप, चिन्ताएँ कम होने से वो ज्यादा मनोरंजन पा सकते हैं। एक बच्चे की परवरिश का दैनिक खर्च मात्र ५० रुपया माने और बैंक में जमा करवाएँ तो २० साल बाद दस लाख रुपया मिलेगा। अर्थात् परिवार पर एक बालक का बोझ १० लाख रु. है। वो खर्च महँगाई बढ़ने से बढ़ता जाता है। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी हो तो स्वाभाविक ही उसका सुख, समृद्धि और विकास ज्यादा होता है।

हमारा देश लोकतन्त्र, व्यक्ति स्वतन्त्रता वाला देश है। हम अनिवार्य जनसंख्या नियंत्रण कानून लागू नहीं कर सकते। ऐसी बातें पूर्णतः गलत हैं। हमारे यहाँ शराबबंदी, जूआबंदी, गौहत्या प्रतिबंध, कन्या भ्रूण हत्या प्रतिबन्ध जैसे अनेक कानून हैं। तो क्या ऐसे कानून से हमारी लोकतन्त्र की स्वतन्त्रता खतरे में नहीं पड़ सकती? इन कानूनों से तो मात्र कुछ प्रतिशत लोगों का ही भला होता है। जबकि देश के समग्र लोगों का जीवन, जरूरतें, समस्याएँ और यातनाएँ जुड़ी हुई हों। ऐसे जनसंख्या विस्फोट को रोकने के लिए कोई कानून क्यों नहीं है? इस कानून का सबसे ज्यादा फायदा तो सब लोगों का ही है। **लोग अज्ञानी हैं, धर्मभिरू हैं, संकुचित हैं, नाराज होंगे, वोट नहीं देंगे, ऐसे कारणों से भयभीत हो कानून न बनाना वो महान अनर्थ व अन्याय होगा।**

लोकशाही तरीके से भी जनसंख्या नियंत्रण हो सकता है। जैसे कि एक या दो बच्चे के बाद परिवार नियोजन कराने वाले दम्पत्ति को ६० साल के बाद पेन्शन (५ या १० हजार रु.) दे सकते हैं। तीन से ज्यादा सन्तान वाले दम्पत्ति का राशन, गैस-सबसिडी, अन्य सरकारी सुविधाएँ बन्द कर देनी चाहिये। ४ से ज्यादा बच्चों वाले दम्पत्ति का मताधिकार या नागरिकता रद्द कर देनी चाहिये। सहायता अटकाएँगे तो ही जनसंख्या नियन्त्रण में होगी, किन्तु प्रति व्यक्ति मुफ्त अनाज, चीनी, केरोसीन, देना तो आबादी बढ़ाने को सीधा प्रोत्साहन ही है। ६५ साल से ऐसा ही हुआ है। वो प्रति परिवार होना चाहिये था। सरकारी कर्मचारियों को परिवार नियोजन केस लाने का दबाव डालने के बजाय सरकार खुद ही गरीबों की सहायता करे तो ही यह कार्यक्रम सफल होगा। मैंने बहुत से मुस्लिम और पिछड़े वर्ग के गरीब लोगों को ऐसा कहते सुना है कि सरकार हमारे लिए कुछ नहीं करती। अनाज, कपड़ा, मकान नहीं देती। परन्तु वो लोग

पाँच-पाँच या दस-दस बच्चे पैदा करते रहेंगे तो सरकार की कोई मदद काम नहीं आएगी। सरकार गरीब परिवारों के लिए एक लाख मकान बनाएगी तो दूसरे साल पाँच लाख परिवार तैयार हो जाएँगे। इस दुष्चक्र का कोई अन्त नहीं है। ऊपर से अल्लाह या ईश्वर आएँगे तो भी उसकी समस्या दूर नहीं होगी। आज परिणाम भी यही है कि सरकार बहुत मदद करती रहती है। फिर भी वह गरीबी का रोना रोते रहते हैं। धार्मिक नेता जनसंख्या बढ़ाने का प्रोत्साहन तो देते हैं लेकिन वो उसको अनाज, कपड़ा और मकान नहीं देते। वो बच्चों की पढ़ाई, रोजगार की जिम्मेदारी क्यों नहीं उठाते? उसके लिए गरीब को खुद बोझ उठाना पड़ता है।

सरकार देश में हर साल बढ़ती आबादी के लिए जमीन, मकान, पाठशालाएँ, अस्पताल, रास्ते, नहर, नालियाँ, गैस, बिजली में करोड़ों रुपये खर्च करती है। बाद में नए वैज्ञानिक शोध, नए शस्त्र, यन्त्र, बड़े निर्माण कार्य, रेल, एरोड्रम के लिए जरूरी आर्थिक शक्ति नहीं रहती। विदेशी लोन लेना पड़ता है। यह बोझ अब ज्यादा बढ़ गया है। जो कोई प्रगति की जाती है वो लोगों की प्राथमिक सुविधाएँ ठुकराकर की जाती है। इसलिए आज देश में ३० से ४० करोड़ लोग गरीबी रेखा से नीचे जीते हैं। दुनिया में सबसे बड़ी और ज्यादा झोपड़पट्टी भारत में ही है। देश में आज भी देहाती गाँव की दशा बहुत खराब है। **'दाँत दिया है तो खाना भी देंगे', 'भगवान किसी को भूखा नहीं सुलाता।' यह सब बातें लोगों को मूर्ख बनाने के लिए है। अकाल होता है तब लोग हड़बड़ी क्यों मचाते हो? प्राकृतिक मुसीबत में सरकार से क्यों मदद माँगते हो, भगवान से क्यों नहीं? दान के रूप में प्रीमियम तो उसको ही देते हो और वो भी टैक्स चोरी करके।** हर साल लाखों बूढ़े बच्चे लोग कुपोषण और भुखमरी के शिकार होते हैं। वास्तविकता यही है कि कुछ लोकनायक देश के प्राणों की उपेक्षा करके मात्र अपना निजी स्वार्थ साधते हैं या अनजाने में प्रजा का भविष्य बिगाड़ते हैं।

दि. ११.७.२०१९ विश्व जनसंख्या दिवस

इस दिन विश्व के सभी २०५ देशों में जनसंख्या दिवस मनाया जाता है।

- विश्व की जनसंख्या लगभग ७०० करोड़ है।
- १३.८.१९४७ को भारत की जनसंख्या ३६ करोड़ थी और वह आबादी के हिसाब से विश्व का सबसे बड़ा देश था।
- १४.८.१९४७ को देश विभाजन के बाद आबादी ३० करोड़ रह गई। तबसे अब तक यह दूसरा सबसे बड़ा देश है।
- पहला स्थान चीन का है जिसकी जनसंख्या १४० करोड़ से ज्यादा है।
- खण्डित भारत की जनसंख्या अब १३६ करोड़ हो गई है।
- चीन की आबादी १८० करोड़ हो जाती यदि उसने परिवार नियोजन बहुत सख्ती से लागू नहीं किया होता तो।
- भारत में १९५२ से स्वैच्छिक परिवार नियोजन चल रहा है। इस ढुलमुल नीति का चतुर मुस्लिम संगठनों ने भरपूर लाभ उठाया है।
- सभी गाँधीवादी दलों से यह कहलवा लिया गया है कि यदि मुस्लिम परिवार नियोजन नहीं अपनाना चाहते हैं तो नहीं अपनाएँ क्योंकि यह स्वैच्छिक है।
- इस तुष्टीकरण नीति का परिणाम यह निकला कि देश में मुस्लिमों का प्रतिशत १० से बढ़कर १७ हो गया है।
- मई में सम्पन्न हुए चुनावों के लिए ३-४ महीनों तक विभिन्न तरीकों से रोड प्रचार, जनसभा, नुक्कड़ सभाएँ, स्थानीय नेताओं से वार्तालाप, दूरदर्शन के अधिकांश चैनलों ने जनता से प्रश्न पूछे किन्तु खेद है कि किसी ने भी मुस्लिमों के बढ़ते प्रतिशत को चर्चा का विषय ही नहीं बनाया और बेरोजगारी, महँगाई, अपराध, गरीबी, पानी की कमी, मिलावट, आत्महत्याओं आदि को रोकने के लिए चीन जैसा कठोर परिवार नियोजन लागू करने की माँग ही नहीं की।
- यदि मुर्दा हिन्दू नेता गाँधीवादी नीतियों पर ही देश को चलाते रहे तो २१वीं शताब्दी में ही खण्डित भारत का शासन मुस्लिम-ईसाई गठजोड़ के हाथों में जा सकता है।
- अतः जनता से अनुरोध है कि वह इस अव्यवस्था को समाप्त करने के लिए देश की सत्ता सावरकरवादियों को सौंपे।

● इन्द्रदेव गुलाटी
संस्थापक : सावरकरवाद प्रचार सभा
१८/१८६, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
चलभाष : ८९५८७७८४४३

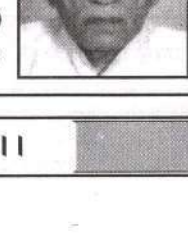

कई लोग कहते हैं कि परिवार नियोजन (ऑपरेशन) हमारे धर्म में नहीं है। कहाँ से होगा? धर्म के उद्भव के समय ऑपरेशन या दवाई की शोध ही नहीं हुई थी। अरे, २०० साल पहले भी यह कुछ नहीं था, इसलिए धर्म में तो होगा ही नहीं। धर्म में वाहन, यन्त्र, कम्प्यूटर, मोबाइल भी नहीं थे? तो उनको इन्कार क्यों नहीं करते? जो लोग ऐसा कहते हैं कि जनसंख्या नियन्त्रण हमारे धर्म में नहीं है, उन्हें कोई भी रोग में दवाइयाँ भी नहीं लेनी चाहिये। बिजली, वाहन का उपयोग भी नहीं करना चाहिये। सीमेन्ट-कांक्रीट के पक्के मकान में रहना भी नहीं चाहिये, अकाल में भूख में मरना चाहिये। हृदय रोग, कैंसर जैसे कोई भी बीमारी में ऑपरेशन नहीं कराना चाहिये। क्योंकि वो सब भी धर्म में नहीं है। इसलिए जनसंख्या नियन्त्रण भी कुदरती तरीके से होने दो।

हमारे देश में वर्षों से विदेशियों की घुसपैठ हो रही है। लाखों की संख्या में बांग्लादेशी, रोहिंग्या और पाकिस्तानी भारत में गैर कानूनी तरीके से घुसपैठ कर रहे हैं। हमारे पेट का पानी भी नहीं हिलता। सब सोचते हैं कि हमें क्या करना? हम तो सिर्फ ईश्वर-धर्म की चिन्ता करते हैं। किन्तु जब लोग जानेंगे कि जनसंख्या बढ़ने से मात्र देश को ही नहीं, हमें खुद को भी भयंकर नुकसान हो रहा है। प्रत्येक नागरिक पर उसका दुष्प्रभाव हो रहा है। तब सिर्फ पेट का पानी ही नहीं वो पूरा खुद हिल जाएगा। लेकिन हमारे यहाँ सरकार तो क्या, प्रचार माध्यम, सामाजिक संस्थाएँ (एनजीओ) भी यह विषय को हल्के से लेती हैं। पता नहीं सुप्रीम कोर्ट, हाईकोर्ट क्यों चुप है? कोई चर्चा ही नहीं होती। जाने किसी को कोई खबर ही नहीं है। वास्तव में तो यह राष्ट्र का प्राण प्रश्न होना चाहिये और उसकी चर्चा हमेशा होनी चाहिये। सरकार नीन्द में हो तो उसे भी जगाना चाहिये क्योंकि दूसरे की आबादी हमें भी नुकसान कर रही है। जैसे कि महँगाई, बेरोजगारी, गन्दगी, बीमारियाँ, मिलावट, यातायात समस्या, प्रदूषण इत्यादि।

भारत में जनसंख्या बढ़ने का दर इस प्रकार है- मुस्लिम,

क्रिश्चियन, हिन्दू, जैन, पारसी। इसमें सबसे ज्यादा आबादी मुस्लिम में बढ़ती है और सबसे कम ईसाई में। किन्तु पारसी लोग घट रहे हैं। हमारा देश गरम प्रदेश होने से जनसंख्या तो बढ़ेगी ही, यह बयान गलत है। धार्मिक प्रोत्साहन, मान्यताएँ ज्यादा जिम्मेदार हैं। ईसाई, हिन्दू बिना कानून और अपने धार्मिक नेताओं के प्रोत्साहन के बावजूद वो जनसंख्या नियोजन अपनाते हैं। यह समझदारी मुस्लिम नहीं निभा सकते। कानून न बने तो जनसंख्या संतुलन तो बिगड़ेगा ही। किन्तु मुस्लिम और पिछड़े वर्ग की गरीबी और अन्य समस्याओं के लिए जिम्मेदार कौन? कुछ स्वार्थी धर्मनेता, राजनेता और पीछे की सरकारें भी। जानते हुए भी उन्होंने जनसंख्या नियन्त्रण कानून नहीं बनाया, सिर्फ सत्ता और वोट के लिए।

मुस्लिम आबादी बहुत बढ़ती नहीं है। ऐसे गलत दावे कभी–कभी होते हैं। किन्तु एक बार हमारे ग्रुप ने १००–१०० घर के राशन कार्डों की जाँच की तो मुस्लिम जनसंख्या हिन्दुओं से दो गुना ज्यादा मालूम हुई। आज तो आरटीआई से भी जान सकते हैं। आज के जमाने में यदि किसी को १० या १२ बच्चे हों तो उसकी गरीबी और समस्याएँ कौन मिटाएगा? वो अपनी गरीबी के लिए सरकार या हिन्दुओं को दोष नहीं दे सकते। भारत में अल्पसंख्यक को ४० प्रकार के लाभ मिलते हैं, फिर भी असन्तोष रहता है कि भारत में हमारे साथ अन्याय हो रहा है। दुनिया के ६० मुस्लिम देशों में ईसाई, यहूदी, बौद्ध या हिन्दुओं को कोई सामान्य नागरिक अधिकार भी नहीं मिलता। भारत में मौलाना जनसंख्या बढ़ाने का प्रोत्साहन देते हैं किन्तु इस्लामिक देशों में मुस्लिम धर्मगुरु परिवार नियोजन कराने का फतवा जारी करते हैं। जनरल नॉलेज की पुस्तकों में देखेंगे तो पता चलेगा कि दुनिया के मुस्लिम देशों का जनसंख्या घनत्व भारत से बहुत कम है। (अपवाद बांग्लादेश १०८०)

दुनिया पर नजर डालें तो इतना तो पता चलता है कि धार्मिक देशों में जनसंख्या घनत्व ज्यादा है और उसके कारण गरीबी, बेकारी, महँगाई, गन्दगी, यातायात जैसी अनेक जटिल समस्याएँ हैं। यह देश ईश्वर की बहुत पूजा–अर्चना करता है फिर भी उस पर ईश्वर की कृपा नहीं होती। बल्कि अवहेलना होती है। अर्थात् कुदरत को जनसंख्या विस्फोट पसन्द नहीं है। प्रकृति में जो जीव ज्यादा बढ़ जाते हैं उसको प्रकृति ही धीरे–धीरे समाप्त कर देती है। हम अपनी सभी समस्याओं का हल धर्म से सुलझाने की कोशिश करते हैं और वास्तविकता इसके विपरीत है। जिसकी हम उपेक्षा करते हैं। इसलिए समस्या तो बढ़ेगी ही। आज भी हम नेता, धर्मगुरु, टीवी चैनल, दैनिक समाचार पत्र–पत्रिकाएँ कोई भी जनसंख्या नियन्त्रण की बात नहीं करता। जनसंख्या विस्फोट महा भयंकर समस्या होने के बावजूद नजरअंदाज किया जा रहा है। जनसंख्या काफी बढ़ चुकी है और बढ़ती ही रहेगी। अकाल के वक्त यह समस्या भयंकर रूप ले लेगी।

लास्ट स्ट्रोक : किसी भी समस्या को दूर करने के लिए सत्य और वास्तविकता का कोई विकल्प नहीं है। उसकी उपेक्षा करना हमेशा भारी पड़ा है और आगे भी पड़ेगा।

आप बीती : पाठ ईमानदारी का

बात ६० वर्ष से अधिक पुरानी है। देश विभाजन की विभीषिका को झेलकर पढ़ाई अधूरी छोड़कर परिवार हेतु दो जून की रोटी जुटाने मैंने कुछ ही दिन पूर्व कानपुर में एक बीमा कम्पनी में ८० रुपये मासिक वेतन पर नौकरी शुरू की थी। उन दिनों बैंकों, बीमा कम्पनियों आदि में काम के घण्टे नियत नहीं होते थे। प्रात: आठ, साढ़े आठ बजे दफ्तर पहुँच जाते थे। छुट्टी रात को दस–ग्यारह बजे, कभी–कभी उससे भी देर से हुआ करती थी। दफ्तर और घर में चार मील की दूरी होने तथा पैदल आने–जाने के कारण घर से काफी जल्दी निकलना पड़ता था तथा काफी देर रात गए लौट पाता था। बहरहाल, सिलसिला चल रहा था।

३१ दिसम्बर का दिन था। वार्षिक लेखाबन्दी हो रही थी। दिन भर काम की भीड़भाड़ रही। कार्य करते–करते रात का सवा एक बज गया। थककर चूर हो गया था। खैर, छुट्टी हुई। बाहर आया तो देखा बारिश हो रही है। दिसम्बर का अन्त, कानपुर की सर्दी, ऊपर से वर्षा, बदन पर सूती कमीज–पायजामा, घर तक चार मील पैदल जाना रात के उस पहर में। मन बहुत खराब हुआ। खैर जाना तो था ही, बड़े बाबू से दफ्तर की साइकल ले जाने की अनुमति ले ली और बारिश में भीगते तथा सर्दी से ठिठुरते हुए घर की ओर रवाना हुआ।

थोड़ा सा ही आगे गया था कि साइकल का पिछला पहिया बैठ गया। पता चला कि पंचर हो गया। उस जमाने में रात के उस वक्त पंचर कहाँ से जुड़ता? साइकल घसीटते हुए चला। भीषण सर्दी, वर्षा की बौछारें, तन पर भीगा हुआ कमीज–पायजामा, ऐसे में साइकल को घसीटते हुए लगभग साढ़े तीन मील का बाकी सफर तय करना था। मन बेहद खिन्न हुआ। सोचा, हे भगवान! मैंने कौनसा ऐसा पाप किया है जिसकी तू यह सजा दे रहा है। अचानक ध्यान में आया कि मैंने चोरी की है। प्रात: दफ्तर की डाक खोलते समय एक लिफाफे पर एक आने का एक डाक टिकट बिना कैंसल हुआ दिखाई दिया था। यह सोचकर कि यह कम्पनी के हिसाब में तो लाया नहीं जा सकता। रद्दी की टोकरी में फेंकने का मन नहीं हुआ। १८–१९ साल की कच्ची उम्र ही तो थी। लिफाफे से टिकट वाला उतना टुकड़ा फाड़कर जेब में रख लिया था। अब भी पड़ा था। भीग रहा था।

शरीर किसी भी हालत में हो, दिमाग तो अपना काम करता ही रहता है। दिमाग में यही आया कि मैंने यह एक आने की चोरी की है क्योंकि यह टिकट मेरा नहीं था। पंचर बनवाने का खर्च तो होगा ही। यह जो कष्ट उठाना पड़ रहा है यह गलत काम करने की सजा है। फौरन जेब से भीगा हुआ वह टिकट निकालकर बारिश के बहते हुए पानी में डाल दिया। गोया पाप से मुक्ति पा ली।

जीवन के आरम्भ में घटित इस घटना ने मन मस्तिष्क पर एक अमिट निशान छोड़ दिया। साठ वर्षों के इस अन्तराल में बहुत से अवसर आए जब मन दो राहे पर आ खड़ा हुआ। विचलित होने को हुआ। मगर वर्षों पूर्व की इस घटना की याद ने फौरन मन को दृढ़ करके, सम्भालकर सही और सीधी ईमानदारी की राह पर डाल दिया।

● **ओमप्रकाश बजाज**
१६६– कालिन्दी कुंज, पिपल्याहाना,
रिंग रोड, इन्दौर (मप्र)
चलभाष : ९८२६४९६९७५

इस नन्हीं सी आप–बीती से सीखें जीवन की बड़ी बातें

- ईमानदारी से जीवन निर्माण होता है और बेईमानी से जीवन नष्ट होता है।
- विभाजन की पीड़ा ७२ वर्षों बाद आज भी पीड़ितों के हृदय में विद्यमान है।
- कितना संघर्षमयी, अभावग्रस्त किन्तु आदर्शों से युक्त तपस्वी जीवन था हमारे अपनों का! लगता है कहीं खो गया।
- पहले आवास कच्चे थे किन्तु निवास करने वाले सिद्धान्तों के पक्के थे, अब भवन पक्के हो गए किन्तु निवास करने वाले कहीं के नहीं रह गए।

गतांक पृष्ठ २६ से आगे

सुख का आधार... गृहस्थ आश्रम

● डॉ. अशोककुमार आर्य
फन्दपुरी, जनपद : सहारनपुर (उ.प्र.)
चलभाष : ७०१७९८९०२०

अभिवादन

ऋषि दयानन्द लिखते हैं- **''जब–जब दिन में प्रथम बार मिलें या वियुक्त हो तब–तब दोनों परस्पर प्रीतिपूर्वक नमस्ते द्वारा एक-दूसरे का अभिवादन करें।''** जहाँ पति पत्नी में ऐसा आचरण रहता है वहाँ मनोमालिन्य नहीं रहता। दिनभर काम से थककर पति बड़ी उमंगों से घर लौटता है। **अपने घर के 'घोंसले' में जब यह पतिरूपी पक्षी लौटता है। तब उसे प्यार, सत्कार तथा प्रसन्नता न मिले तो यह पक्षी दूर होता चला जाता है।** पत्नी को चाहिए कि दिन में चाहे कितनी ही अप्रिय बातें क्यों न हो गई हो तो भी सायं मिलन के समय मुख से मुस्कान बिखेरती हुई मधुर वचनों और व्यवहार से पति का अभिवादन करे। पत्नी के ऐसे व्यवहार से पति की सारी थकावट दूर हो जाती है। उसमें नवजीवन और नवशक्ति का संचार होने लगता है। इसी प्रकार पति को भी घर पहुँचकर प्रेमपूर्ण व्यवहार से सबका मन जीतना चाहिए।

शकुन्तला की विदा के अवसर पर महर्षि कण्व के उद्गार **''आज शकुन्तला चली जाएगी, यह सोचते ही जी बैठा जा रहा है। आँसुओं को रोकने से गला इतना रून्ध गया है कि मुँह से शब्द नहीं निकल रहे हैं और इसी चिन्ता में मेरी आँखें भी धुँधली पड़ गई हैं। जब मुझ जैसे वनवासी को इतनी व्यथा हो रही है तब उन बेचारे गृहस्थियों को कितना कष्ट होता होगा जो पहले-पहल अपनी कन्या को विदा करते होंगे।''**

'पराया धन' तो सौंपना था ही वह अपने पास कैसे रह सकता था। पर अपने घर से विदा करते समय पिता ऋषि कण्व का हृदय अपनी पुत्री के भावी सुखद जीवन के लिए चिन्तातुर अवश्य हो उठा। उनके हृदय से प्रत्येक पिता की भाँति स्वस्ति वचनों की पावन गंगा प्रवाहित होने लगी।

बाबूल की दुआएँ लेती जा, तेरा सुखी सदा संसार रहे, मेरी नन्ही कली नखरों में पली घर को जाए, ये दुआ है मेरी, गम की छाया कभी तेरे दर पर न आए।

ओं सौभाग्यमस्तु। ओं शुभं भवतु। (तेरा अविचल सौभाग्य बना रहे। सर्वत्र शुभ हो।)

सप्तपदी

ACHIEVEMENTS NEVER BE EXEED OVER CLAIMS.

अर्थात् जीवन यात्रा में पुरुषार्थ से अधिक फल-प्राप्ति की इच्छा न करें-

१. पहला पग अन्न प्राप्ति के लिए उठाया जाता है। २. दूसरा पग बल की वृद्धि और रक्षा के लिए उठाया जाता है। ३. तीसरा पग धन-धान्य की समृद्धि व आय-व्यय को सन्तुलित रखने के लिए। ४. सुख प्राप्ति के लिए। अर्थात् शोषण से प्राप्त किया धन सुख नहीं दे सकता। पोषक धन से हम सुख प्राप्त कर सकते हैं। ५. सन्तान के लिए। ६. ऋतुओं की अनुकूलता व दृढ़ता के लिए। ७. सखा भाव प्रगाढ़ प्रेम व मित्रता के लिए।

प्रतिज्ञा **हे प्रियवर स्वामिन्!** मैं आपके हृदय, आत्मा और अन्त:करण को अपने प्रियाचरण कर्म में धारण करती हूँ। मेरे चित्त के अनुकूल आपका चित्त सदा रहे। आप एकाग्र हो के मेरी वाणी का जो कुछ मैं आपसे कहूँ उसका- सेवन सदा किया कीजिए, क्योंकि आज से प्रजापति परमात्मा ने आपको मेरे अधीन किया है, वैसे मुझको आपके अधीन किया है। अर्थात् इस प्रतिज्ञा के अनुकूल दोनों वार्ता करें जिससे सर्वदा आनन्दित और कीर्तिमान पतिव्रता और स्त्रीव्रत हो के सब प्रकार के व्यभिचार अप्रिय भाषणादि को छोड़ के परस्पर प्रीतियुक्त रहें।

(शेष भाग आगामी अंक में)

स्वामी दयानन्दजी का जन्मदिन ५१ कुण्डीय महायज्ञ के साथ सम्पन्न

यज्ञ से वायुमण्डल शुद्ध होता है : आ. चन्द्रशेखर शास्त्री

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर (राज.) के तत्वावधान में वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान् एवं अध्यात्म पथ के सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखरजी शास्त्री के ब्रह्मत्व में ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों और वेद प्रचार, पर्यावरण शुद्धि, विश्व शान्ति एवं सुख समृद्धि हेतु ५१ कुण्डीय महायज्ञ हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्रीजी ने विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि अग्नि में डाले गए पदार्थ, पदार्थ विज्ञान के अनुसार नष्ट नहीं होते अपितु रूपान्तरित होकर सूक्ष्म रूप में कई गुना शक्तिशाली बनकर अन्तरिक्ष में वायु एवं सूर्य रश्मियों के माध्यम से फैलकर व्यापक हो जाते हैं। यज्ञ से समस्त वायुमण्डल शुद्ध होता है। यज्ञ औषधि रूप है। अत: यज्ञ करने से ऋतु सन्धियों में उत्पन्न रोगों का नाश होता है। यज्ञ के मुख्य यजमान आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश गुप्ताजी थे। समारोह के मुख्य अतिथि श्रम एवं राज्यमन्त्री श्री टीकाराम जूली थे। विद्यालय समिति के मन्त्री श्री प्रदीप कुमार आर्य ने सभी विद्वानों, नेताओं एवं समाजसेवी महानुभावों को पीत वस्त्र पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर सर्वश्री कै. रघुनाथ सिंह, अशोक कुमार आर्य, प्रदीप कुमार आर्य, सुरेश कुमार दरगन, प्रद्युम्न कुमार गर्ग एवं सम्पूर्ण जिले से आए संस्थाओं के पदाधिकारी, आर्य समाजों के सदस्य, विद्यालय के विद्यार्थी व स्टाफ के सदस्य वृहद संख्या में उपस्थित रहे। अन्त में विद्यालय समिति के निदेशक श्रीमती कमला शर्मा ने सभी का आभार प्रकट किया। शान्ति पाठ के पश्चात् ५ हजार लोगों ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

यात्रा वृत्तान्त

परम पिता परमात्मा की असीम तथा महती कृपा है...

दिनांक १ मई को प्रात:कालीन दिनचर्या से निवृत्त हो प्रात: ६ बजे इन्दौर से जोधपुर को प्रस्थान करने वाली रणथम्बोर अति द्रुतगति लौहपथ गामिनी से नागदा जंक्शन के लिए प्रस्थान किया।

दिनांक १ मई से ५ मई तक आर्य समाज नागदा के तत्वावधान में आर्य गार्डन, सेवारामजी की बावड़ी पर श्रीराम-श्रीकृष्ण ज्ञान कथा का आयोजन आर्य जगत् की सुविख्यात भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से आयोजित था। आयोजन स्थल पर पहुँचने पर वहाँ विशाल कलश यात्रा की तैयारियाँ हो रही थी। महिलाओं में अत्यन्त उत्साह था। सजी-धजी महिलाओं के समूह के समूह आ रहे थे। चहुँ ओर चिल्लपों मची हुई थी। स्टील के कलश (घड़े नुमा छोटे पात्र) आयोजकों की ओर से नि:शुल्क प्रदाय किये जा रहे थे। बैण्ड-बाजे बज रहे थे। कुछ नवयौवनाएँ सर पर साफा बाँधे आर्य वीरांगनाओं की वेशभूषा धारण किये समर रण में जाने को आतुर थी। कलश यात्रा के सबसे आगे दो नवयुवतियाँ हाथों में ओ३म् ध्वजा थामे दो घोड़ों पर क्षत्राणी वेशभूषा में कमर पर कटार लटकाए झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की अभिनय मुद्रा में चल रही थी। कलश यात्रा के अन्त में बग्घी पर सुश्री अंजलि आर्या विराजमान थीं।

कलश यात्रा के प्रस्थान कर जाने के पश्चात् ग्राम बमनापाती के युवक श्री राहुल आंजना प्रोफेसर वैष्णव महाविद्यालय, इन्दौर के साथ मैंने देवयज्ञ किया। युवक के दायें हाथ में चोट लगी होने के उपरान्त भी वह सहर्ष तैयार हुआ और उसने बायें हाथ से निष्ठापूर्वक आहूतियाँ प्रदान की।

विगत अंक में उल्लेखित किया जा चुका है कि धामनोद (रतलाम) से लौटते समय वैदिक साहित्य नागदा जंक्शन के आयोजन हेतु श्री कमलजी आर्य के द्वारा भेजे गए दो युवकों को रेल स्थानक पर दे दिया था। वैदिक साहित्य तथा महापुरुषों के चित्रों की प्रदर्शनी विक्रयार्थ लगाई। दिनांक २ मई को दिनचर्या से निवृत्त हो प्रात:काल देवयज्ञ आयोजन स्थल पर पं. अग्निवेशजी पाण्डे तथा श्री लक्ष्मीनारायणजी सत्यार्थी के संयुक्त ब्रह्मत्व में आयोजित था। स्थान सुलभ हो जाने से देवयज्ञ में दिनांक २ व ३ को तथा दिनांक ५ को सपत्नीक आहूतियाँ प्रदान की। पुरोहितद्वय तथा श्री भँवरलालजी पांचाल के उपदेशों को श्रवण किया। सत्यार्थीजी के अनुरोध पर मैंने भी उद्‌बोधन प्रदान किया तथा साहित्यिक सेवा का कार्य किया।

दिनांक ३ मई को प्रात: २ मई की तरह ही देवयज्ञ सम्पन्न हुआ। इन्दौर-नागदा सवारी गाड़ी से धर्मपत्नी के साथ बड़ी सुपुत्री श्रीमती जयश्री शर्मा दोपहर दो बजे सत्संग लाभ लेने की भावना से आ पहुँची। धर्मपत्नी के आने से वैदिक साहित्य प्रदर्शनी सम्भालने की चिन्ता से मुक्त हुआ।

दिनांक ३ से ५ मई तक आर्य समाज रावतभाटा (राज.) में उच्च स्तरीय शंका-समाधान शिविर का आयोजन था। विशेष रूप से श्री मोहनलालजी आर्य (भाट) जो रावतभाटा के परमाणु संयन्त्र से सेवानिवृत्ति के पश्चात् अपने गृहग्राम लस्सानी दोयम, जनपद : अजमेर चले गये हैं किन्तु आपका जीवन्त तथा अटूट सम्बन्ध आर्य समाज रावतभाटा से है। आपकी ऋग्वेद के लगभग २५०० मन्त्र जो अन्य वेदों में भी कुछ आंशिक भिन्नता के साथ आए हैं, को लेकर कुछ जिज्ञासाएँ थी जिसके लिए आर्य जगत् के धारा प्रवाह प्रखर वक्ता वेदप्रकाशजी श्रोत्रिय को दिल्ली से आमन्त्रित किया गया था। नागदा जंक्शन में मात्र दोपहर के सत्र में ही प्रवचन थे तथा साहित्यिक सेवा सम्बन्धी विशेष कार्य नहीं था। अत: ३ मई को सायंकाल मैंने रावतभाटा के लिए प्रस्थान किया। रात्रि १० बजे रेल स्थानक कोटा पहुँचा। रेल स्थानक के बाहर से परमाणु संयंत्र में सेवारत महानुभावों तथा उनके परिजनों व अतिथियों के सुविधार्थ कोटा से रावतभाटा बस का संचालन परमाणु संयंत्र संस्थान द्वारा किया जाता है। आर्य समाज रावतभाटा में अधिकांश परमाणु संयंत्र में सेवारत वैज्ञानिक, अधिकारी व कर्मचारी सक्रिय हैं। श्री ओमप्रकाशजी आर्य जिनके श्वास-प्रश्वास में आर्य समाज वास करता है, ने मुझे अपना कोड क्रमांक दे दिया था जिसका लाभ लेकर मैं बस से रात्रि १२ बजे आर्य समाज रावतभाटा के सामने उतरा। आर्य समाज का द्वार भिड़ा हुआ था। ठेलते ही खुल गया। कमरों में कुछ आर्यजन गहरी निद्रा में थे। रिक्त बिछौना देखकर शयन किया।

दिनांक ४ मई को प्रात: दिनचर्या से निवृत्त होकर श्री रमेशचन्द्रजी भाट द्वारा अपने घर से लाई हुई रोटी और दही का प्रात:राश किया। यज्ञशाला में स्थान सुलभ न हो पाने से वाचिक यज्ञ किया। पश्चात् जिज्ञासा समाधान सत्र का श्रवण किया। कोई विशेष उपलब्धियों से भरा हुआ सत्र न होकर एक प्रकार से परस्पर वार्ता की भेंट चढ़ गया जिसमें अनेक बार मुख्य विषय कहीं पीछे छूट गये। मुख्य जिज्ञासु श्री मोहनलालजी भाट ही संतुष्ट नहीं हुए। फलस्वरूप वे सायंकाल प्रस्थान कर अपने गृहग्राम को लौट गए।

अतिथियों की भोजन व्यवस्था श्री पंकज कुमारजी इंजीनियर के आवास पर की गई। सायंकाल युवा शिविर का सत्र आयोजित किया गया जिसमें महाविद्यालयीन युवक-युवतियों ने भाग लिया। वेदानुकूल ईश्वर स्वरूप, धर्म आदि विषयों को लेकर सैद्धान्तिक परिचय उपस्थितों को दिया जाकर उनका ध्यानाकर्षण किया गया। सायंकाल मैंने नागदा के लिए बस द्वारा कोटा तथा कोटा से जनता द्रुतगति रेलगाड़ी से नागदा के लिए प्रस्थान किया। प्रात: ४ बजे नागदा पहुँचा।

दिनांक ५ मई को आयोजन का समापन हो गया। दिनांक ४ व ५ को मौसम ने करवट बदली। फैनी तूफान के प्रभाव से धूल भरी आँधियाँ चली तथा साधारण वर्षा भी हुई। फिर भी कार्यक्रम निर्विघ्न सम्पन्न हो गया। साहित्य एकत्र किया। अतिथियों के भोजन की सुन्दर व्यवस्था कमल आर्यजी के निवास पर तथा विश्राम की उत्कृष्ट व्यवस्था आयोजन स्थल आर्य गार्डन पर नवनिर्मित आवासों में की गई। कार्यक्रम समापन के पश्चात् भण्डारा (सामूहिक भोज) सभी के लिए किया गया जिसमें जो उपदेश श्रवण करने नहीं पधारे थे वे भी सपरिवार भोजन ग्रहण करते देखे गए। रात्रि शयन वहीं पर किया।

दिनांक ६ मई को प्रात: ७ बजे मुम्बई-इन्दौर अवन्तिका अतिद्रुतगति लौहपथ गामिनी से इन्दौर के लिए प्रस्थान कर १० बजे इन्दौर पहुँचे।

दिनांक ६ से ११ मई तक **'आदर्श वैदिक परिवार'** पुस्तक तथा वैदिक संसार के मई माह के अंक का त्रुटि शोधन कार्य किया। साथ ही कार्यालयीन कार्यों व भानजी स्तुति के विवाह से सम्बन्धित कार्यों को सम्पादित किया। दिनांक १३ से १५ मई को आगरा के समीप फतेहाबाद से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित बसई ग्राम में वैदिक संसार के संरक्षक महानुभाव श्री ओमप्रकाशजी शर्मा सेवानिवृत्त सूबेदार मेजर की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पादेवी शर्मा की छठी पुण्यतिथि पर वैदिक सत्संग का आयोजन था। मेरा तथा मेरी धर्मपत्नी के यात्रा टिकिट इस आयोजन में जाने हेतु आरक्षित थे। बड़ी बेटी जयश्री विद्यालयीन छुट्टियाँ होने से आई हुई थी। उसका भी साथ चलने का मानस था किन्तु लोकसभा चुनाव के कार्यभार के कारण हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी। मैंने उत्साह वर्धन किया, चलो परम पिता परमात्मा की कृपा से कोई विघ्न नहीं आएगा। वह भी तैयार हो गई,

तत्काल में उसका भी यात्रा टिकिट आरक्षित करवाया।

दिनांक १२ मई को प्रात: लगभग १२.३० पर मैं, मेरी धर्मपत्नी तथा बिटिया श्रीमती जयश्री शर्मा ने मालवा अति द्रुतगति लौहपथ गामिनी से आगरा के लिए इन्दौर से वैदिक साहित्य के साथ प्रस्थान किया। रात्रि १.३० पर आगरा छावनी रेल स्थानक क्रमांक ३ पर उतरे। ३-४ चक्र में सामान रेल स्थानक से बाहर किया। तीन पहिया वाहन से बिजलीघर बस स्थानक पहुँचे। इटावा जाने वाली बस तैयार खड़ी थी। उसमें बैठकर फतेहाबाद लगभग ४ बजे प्रात:काल पहुँचे। श्री ओमप्रकाशजी शर्मा ने आपके सुपुत्र श्री मनोज शर्मा के श्याल: श्री पूरनजी शर्मा का चलभाष क्रमांक दे दिया था तथा फतेहाबाद पहुँचने पर इनसे सम्पर्क करने का कह रखा था। पूरनजी को हमारे पहुँचने की सूचना देने पर आप आ गए। हम तीन और हमारे साथ १० दाग एक मोटरसाइकल पर जाना सम्भव नहीं था। अत: बिटिया जयश्री को कुछ सामान के साथ भेजा। दूसरी बार में पूरनजी के साथ मनोजजी भी दो मोटर साइकलों से आए। इस प्रकार हम सब शर्माजी के पैतृक गाँव बसई पहुँचे।

दिनांक १३ मई को प्रात:काल आचार्य विश्वेन्द्रार्यजी अपने वेद प्रचार रथ के साथ वैदिक भजनों को ध्वनि विस्तारक यन्त्र से गुंजायमान करते हुए आ पहुँचे। आयोजन स्थल पर यज्ञ वेदी का अभाव देखकर मथुरा वाले राममुनिजी, आगरा वाले हीरामुनिजी तथा स्वामी सम्पूर्णानन्दजी (सम्भवत:) ने यज्ञ वेदी बनाने की आवश्यकता जताई। मैंने भी समर्थन किया। हम सभी ने मिलकर शीघ्रता से सुन्दर यज्ञ वेदी का निर्माण कर दिया। **आचार्य विश्वेन्द्रार्यजी के ब्रह्मत्व में यज्ञ प्रारम्भ हुआ।** मैंने वैदिक साहित्य तथा महापुरुषों के चित्रों की प्रदर्शनी विक्रयार्थ लगाई। यज्ञ के पश्चात् **स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती, पलवल के प्रवचन तथा सुश्री अंजलि आर्या व पं. सत्येन्द्रजी आर्य, जबलपुर के भजन-उपदेश हुए।** मंच का संचालन शर्माजी के ज्येष्ठ सुपुत्र डॉ. प्रमोद कुमारजी शर्मा ने तथा आपके सहयोगार्थ अन्य सत्रों में शर्माजी की सुपुत्री श्रीमती मधु शर्मा रायबरेली ने भी किया। प्रात:कालीन सत्र ७ बजे से १२ बजे तक चला। पश्चात् भोजन विश्राम हेतु सत्र का अवसान हुआ। दोपहर ३ बजे से सायं ७.३० बजे तक सायंकालीन सत्र हुआ।

इसी प्रकार दिनांक १४ को वेद ज्ञान अमृत वर्षा हुई। साथ ही तेज अन्धड़ के साथ हल्की बूँदा-बाँदी भी हुई।

दिनांक १५ को शर्माजी के तीसरे क्रम के सुपुत्र श्री प्रवीणजी का जन्मदिवस होने से आपने सपत्नीक यजमान बनकर आहूतियाँ प्रदान की। सुखद, प्रेरणादायक स्मृतियों को संजोए हुए आयोजन का समापन हुआ। वर्तमान समय में अन्धविश्वास-पाखण्ड विकराल रूप में अपने पैर पसार रहा है। सुशिक्षित, गणमान्य राजनेता, अधिकारी वर्ग भी अन्धविश्वास-पाखण्ड में आकण्ठ डूबे हैं, सामान्य जन की तो क्या कहें। **अज्ञानता का नाश और ज्ञान का प्रकाश अगर कोई कर सकता है तो वह है वैदिक धर्म ध्वज वाहक महर्षि दयानन्दजी सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज,** किन्तु वर्तमान समय में वह भी आपसी झगड़ों में उलझा, अपनी चार दिवारी में सिमटा दिखाई देता है। ऐसे घोर अन्धकार वातावरण में शर्मा परिवार ने प्रेरणादायी, अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। सरल, सहज, उदार स्वभाव के धनी श्री ओमप्रकाशजी शर्मा ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के पश्चात् भी अन्धविश्वास, रूढ़ियों आदि से मुक्त होकर निर्मल, स्वाध्यायशील, वैदिक धर्म, आर्य समाज के प्रति गहन निष्ठावान हैं। ८४ वर्ष की आयु अवस्था, हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप आदि व्याधियों से ग्रसित होने के उपरान्त भी वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार पैतृक गृह ग्राम, क्षेत्र में किये जाने का उत्साह एवं अधिरता देखते ही बनती है। आपका तथा आपके ज्येष्ठ सुपुत्र डॉ. प्रमोद कुमारजी का प्रयास है कि आपका ग्राम एक आदर्श ग्राम बने, इसी लक्ष्य को लेकर उपरोक्त आयोजन किया गया। आर्य समाज एवं वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार में मुक्त हस्त से तथा उदार भाव से तन-मन-धन से सहयोग हेतु सदैव तत्पर रहने वाले शर्माजी की यह भी भावना है कि ऐसी व्यवस्था निर्मित की जाए कि मेरे बाद भी उपरोक्त कार्य सुचारू रूप से संचालित होते रहें। आपकी भावनाओं को साकार कर मूर्त रूप दिया आपके सुपुत्रों तथा आपके सम्पूर्ण परिवार ने। माध्यम बना आपकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पादेवी जी की छठी पुण्यतिथि का अवसर। आपके समस्त सुपुत्र, सुपुत्री, सुपौत्र, सुपौत्री, सगे-सम्बन्धी, स्नेहीजन सम्मिलित हुए। परिवार के प्रत्येक सदस्य उत्साहपूर्वक व्यवस्थाओं में लगे हुए थे। विशाल पाण्डाल में प्रचण्ड गर्मी पर नियन्त्रण हेतु बड़े-बड़े शीत उत्सर्जक लगे हुए पाण्डाल को भव्यता प्रदान करने हेतु आपके सुपौत्र चि. विकास शर्मा जो आगरा में इसी कार्य व्यवसाय को करते हैं, लगे हुए थे।

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे शर्मा परिवार में कोई विवाह उत्सव हो। संन्यासियों, विद्वानों, अतिथियों के विश्राम, जलपान, भोजन आदि का समुचित प्रबन्ध किया गया। सभी का यथेष्ट सम्मान भी किया गया।

विभिन्न स्थानों से पधारे लगभग १५-२० संन्यासी-वानप्रस्थी मंच को सुशोभित कर रहे थे। आर्य जिला, प्रतिनिधि सभा आगरा, आर्य समाज फतेहाबाद, ज्ञान विज्ञान संस्थान आगरा, आर्य समाज कमला नगर, आर्य समाज ककुवा, आर्य समाज फ्रीगंज, आर्य समाज ताजगंज, आर्य समाज बल्केश्वर, आर्य समाज वैभवनगर, आर्य समाज महुआखेड़ा तथा विभिन्न स्थानों से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के गणमान्य पदाधिकारी व गणमान्य राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। **आर्य समाज की विचारधारा से अपरिचित महानुभावों को वृहद आकार के सत्यार्थ प्रकाश उपहार स्वरूप भेंट किये गये।** विशेष उल्लेखनीय यह है कि शर्माजी के चारों सुपुत्रों ने आगरा में स्थायी निवास कर लिया है तथा सपरिवार वहीं रहते हैं। गाँव में अब आपके परिवार का कोई सदस्य नहीं रहता। ना पारिवारिक उपयोग का गाँव में कोई सामान है। गाँव से आगरा की दूरी भी लगभग ४० किलोमीटर है। आयोजन से दो दिवस पूर्व तक शर्माजी चिकित्सालय में भर्ती थे। गाँव अत्यन्त छोटा है। कोई भी आवश्यकता होने पर भागकर फतेहाबाद आना पड़ता है। इतनी **विषम परिस्थितियों के उपरान्त भी मात्र और मात्र वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार को लक्ष्य बनाकर, सम्पूर्ण व्यय वहन कर आयोजन किया गया जिसके लिए ओमप्रकाशजी शर्मा के साथ समस्त शर्मा परिवार की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। वैदिक संसार परिवार शर्मा परिवार द्वारा एक उत्कृष्ट, अनुकरणीय, प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए तथा मेरा, मेरी धर्मपत्नी, मेरी सुपुत्री को जो मान-सम्मान दिया गया उसके लिए ओमप्रकाशजी शर्मा तथा समस्त परिजनों का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता है तथा आप सभी के लिए स्वस्थ, दीर्घायु, यशस्वी जीवन की कामना करता है।**

दिनांक १५ को सायंकाल हमने भारवाहक तीन पहिया वाहन से बसई से प्रस्थान किया। प्रचण्ड गर्मी के पश्चात् सुहावनी बयार बह रही थी। वातावरण आनन्दित कर रहा था। फतेहाबाद बस स्थानक से आगरा की बस के द्वारा आगरा के लिये प्रस्थान किया। डॉ. प्रमोद कुमारजी अपने उच्च शिक्षित मुम्बई में कार्यरत सुपुत्र के साथ मोटर साइकिल पर फतेहाबाद तक साथ आए। आप लोगों ने सामान उतारने-रखने में सहयोग किया। आपके सुपौत्र ने बगैर किसी संकोच के साहित्य की दोनों बोरियाँ दोनों हाथों में उठा ली, जो कि आजकल के युवाओं में विशेषकर उच्च शिक्षितों में इतनी सरलता, सहजता देखने को प्राप्त नहीं होती। **शर्मा परिवार के व्यवहार में शत-प्रतिशत आर्यत्व था। यह परम पिता**

परमात्मा की असीम तथा महती कृपा है कि शर्मा परिवार से सम्बन्ध स्थापित हुआ।

बस ने आगरा के लाल किले के सामने स्थित बिजलीघर बस स्थानक पर उतारा। वहाँ से तीन पहिया वाहन से आगरा छावनी रेल स्थानक पहुँचे। आगरा से ब्यावर के यात्रा टिकट ग्वालियर-अहमदाबाद लौहपथ गामिनी में आरक्षित थे। रेल स्थानक क्र. ५ पर ३-४ चक्र में सामान पहुँचाया। पश्चात् संध्या के मन्त्रों का पाठ कर शर्मा परिवार द्वारा दिया हुआ भोजन ग्रहण किया। रात्रि १०.३० पर गाड़ी में बैठे, प्रात: ६ बजे ब्यावर रेल स्थानक पर उतरे। भानजी के श्वसुर श्री राकेशजी शर्मा अपने चार पहिया वाहन से लेने आ गये थे। आपने भी सामान उठाने में सहयोग किया। दिनांक १६ को प्रात: आठ बजे लग्न झिलवाने का कार्यक्रम निर्धारित था। **आर्य समाज ब्यावर के धर्माचार्य पं. अमरसिंहजी ठीक समय पर आ पहुँचे। बृहद देव यज्ञ तथा पुरुष सूक्त की विशेष आहूतियों से आपने संसार के श्रेष्ठतम् कार्य को सम्पन्न करवाया।** बहन प्रमिला ने सेन्धवा से लग्न लिखवाकर वस्त्र आदि के साथ दिनांक ११ को इन्दौर पहुँचवा दी थी जिसे हम साथ में आगरा होते हुए ले आए थे। लग्न का वाचन पं. अमरसिंह के द्वारा किया गया। सगे-सम्बन्धियों का वस्त्र आदि से यथेष्ट सम्मान किया गया। भोजनोपरान्त विश्वकर्मा भवन विवाह स्थल पहुँचे। विवाह की व्यवस्थाओं को मूर्त रूप दिया। वैदिक साहित्य तथा महापुरुषों के चित्रों की प्रदर्शनी विक्रयार्थ लगाई। परिजनों, स्नेहीजनों, अतिथियों का आगमन प्रारम्भ हो गया जिनके विश्राम की व्यवस्था शिवबाड़ी पैलेस तथा आदेश (वातानुकूलित) विश्राम गृह की व्यवस्था मेरे द्वारा की गई थी।

दिनांक १७ मई को प्रात:काल वाग्दान संस्कार पं. अमरसिंहजी विद्यावाचस्पति के ब्रह्मत्व में सम्पन्न किया गया। सर्वप्रथम वर-वधू को पृथक-पृथक मुख्य मार्ग से भवन के प्रवेश द्वार तक ढोल के साथ लाया गया। मुख्य द्वार से यज्ञ वेदी तक पण्डितजी द्वारा मन्त्रोच्चार करते हुए तथा कन्यापक्ष की बालाओं द्वारा वर-वधू के दोनों ओर साथ-साथ चलते हुए गुलाब पुष्प की पंखुड़ियों की वर्षा के द्वारा अभिनन्दन करते हुए लाया गया। वर पक्ष की महिलाओं द्वारा माल्यार्पण कर वधू का स्वागत किया गया। इसी प्रकार वधू पक्ष के पुरुषों द्वारा वर महोदय का पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया गया। वाग्दान संस्कार पश्चात् वर-वधू द्वारा परस्पर अंगूठी पहनाकर क्रिश्चियनों की देखादेखी फिल्मों से घुसपैठ कर चुकी रिंग सेरेमनी परम्परा का निर्वाह किया गया। वर-वधू को परस्पर वस्त्र -आभूषण तथा वरपक्ष के निकट सम्बन्धियों को वस्त्र आदि भेंट कर लोक व्यवहार (शिष्टाचार) का निर्वहन किया गया।

भोजनोपरान्त दोपहर प्रवचन सत्र का प्रारम्भ १ बजे किया गया। मंच संचालन का दायित्व पं. सत्येन्द्रजी आर्य ने निर्वहन किया। प्रारम्भ में पं. अमरसिंहजी तथा पं. बंशीलालजी ने भजन प्रस्तुति के माध्यम से उपस्थितों की मन:स्थिति को धीर–गम्भीर करने का प्रयास किया। **'आदर्श गृहस्थी कैसे बने?' विषय पर सारगर्भित उत्कृष्ट मार्गदर्शन आचार्य सर्वमित्रजी प्रस्तोता आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा (रोहतक) तथा आचार्य सोमदेवजी आर्य आर्ष गुरुकुल मलारना चौड़, जनपद : सवाई माधोपुर (राज.) का रहा।** गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने जा रहे दोनों नवयुगल मंच के ठीक सामने बैठे थे। आपके साथ उपस्थितों ने भी वेद-सिद्धान्तों पर आधारित प्रवचन का लाभ लेकर गृहस्थ आश्रम की श्रेष्ठता तथा महत्ता को जाना। प्रवचन के पश्चात् **'आदर्श वैदिक परिवार' नामक पुस्तक जो कि विशेष रूप से इस अवसर पर प्रकाशित की गई थी, का विमोचन वरिष्ठ समाजसेवी श्री नेमीचन्दजी शर्मा भामाशाह राजस्थान सरकार की विशेष उपस्थिति में उपस्थित विद्वानों के करकमलों द्वारा किया जाकर उपस्थित समस्त महानुभावों को भेंट स्वरूप प्रदान की गई।**

सायंकालीन संध्या मन्त्रपाठ सामूहिक रूप से मेरे द्वारा (सुखदेव शर्मा) करवाया जाकर वैदिक ईश्वरोपासना की महत्ता तथा मानव जीवन की आवश्यकता पर संक्षिप्त प्रेरणा दी गई। **वैदिक भजन संध्या रात्रि ८ बजे प्रारम्भ हुई पं. बंशीलालजी आर्य बरखेड़ापंथ, श्री संजय आर्य कानड़, पं. अमरसिंहजी ब्यावर, श्रीमती कल्पना जांगिड, पं. केशवदेवजी शर्मा, सुमेरपुर ने प्रेरणादायक सुमधुर भजन प्रस्तुति दी। मंच संचालन पं. सत्येन्द्रजी आर्य पिपलिया मण्डी (म.प्र.) ने किया।** विश्वकर्मा मन्दिर जांगिड ब्राह्मण समाज समिति, ब्यावर के पूर्व अध्यक्ष जसराजजी जांगिड, नवनिर्वाचित अध्यक्ष हनुमानजी बरड़वा तथा सहयोगी पदाधिकारियों के साथ विद्वानों का सम्मान किया।

दिनांक १८ मई को पं. सत्येन्द्रजी आर्य के पौरोहित्य में पाणिग्रहण संस्कार महर्षि दयानन्दजी सरस्वती द्वारा रचयित 'संस्कार विधि' अनुकूल पूर्ण वेदोक्त विधि से दहेज रहित सम्पन्न किया गया। पं. सत्येन्द्रजी द्वारा पाणिग्रहण संस्कार में सम्पन्न क्रियाओं, मधुपर्क विधि, जया होम, शिला रोहण, सप्त पदी आदि को विस्तृत रूप से बताया-समझाया गया। वैदिक संसार की ओर से बारातियों की विदा स्वरूप तथा वर के दादाजी श्री किशनलालजी जांगिड (आर्य) की ओर से **अतिथियों को उपहार स्वरूप सत्यार्थ प्रकाश भेंट किये गये।**

भोजनोपरान्त वर पक्ष के निकटस्थ सम्बन्धियों का माला, साफा पहनाकर स्वागत, वैदिक साहित्य व सम्मान राशि भेंट कर विदाई लोक व्यवहार का परिपालन कर सायंकाल ब्यावर से प्रस्थान किया। समस्त परिजनों, स्नेहीजनों जो कि रेल तथा वेद प्रचार वाहन से आए थे, का अजमेर से भोपाल-जयपुर-इन्दौर रेल में यात्रा टिकिट आरक्षित थे। आप सभी ब्यावर से रेल द्वारा अजमेर और अजमेर से अपने गंतव्य को प्रस्थान कर गए। बहन प्रमिला के समस्त परिवारजन दो बड़े क्रूजर वाहन (१३ सदस्यीय क्षमता) से लगभग २० सदस्यों के साथ आई थी। आप भी अपने वाहनों से सेन्धवा के लिए प्रस्थान कर गए। मैंने वेद प्रचार वाहन से ब्यावर से सायं ७.०० बजे प्रस्थान कर विजयनगर के समीप ग्राम : बाड़ी निवासी श्री रामेश्वर प्रसादजी शर्मा के निवास पर रात्रि ९ बजे पहुँचे। भोजन ग्रहण कर शयन किया।

अनेक महानुभावों को विस्मय के साथ भ्रान्ति होती है कि सुखदेवजी की आय का कोई व्यवस्थित स्रोत नहीं है, आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ नहीं है। उसके उपरान्त भी विशाल भव्य आयोजन क्यों करते रहते हैं। कुछ माह पहले जनवरी माह में अपनी सुपुत्री का विशाल तथा भव्य विवाह आयोजन लगभग १० राज्यों से स्नेहीजन सम्मिलित हुए और अब भानजी स्तुति का विवाह पूर्ण भव्यता के साथ। स्नेहीजनों को आमन्त्रित करने में कृपणता नहीं, सार्वजनिक रूप से वैदिक संसार में ही निमन्त्रण प्रकाशित कर देते हैं तथा दूरभाष-चलभाष आदि पर समारोह में पधारने का आग्रह भी बारम्बार करते हैं। ऐसा क्यों? **कहीं चन्दे का धन्धा तो नहीं?**

हाँ। मेरे मनोभावों को न समझ पाने की दशा में उपरोक्त प्रश्न उठना तथा भ्रान्ति होना स्वाभाविक है। स्थिति स्पष्ट करना चाहूँगा कि मैंने वर्ष १९९९ में समाजसेवा के क्षेत्र में प्रवेश किया, वह भी अपने कार्य व्यवसाय को त्यागकर जबकि मेरे ज्येष्ठ सुपुत्र निलेश शर्मा की ही शिक्षा वर्ष २००७ में पूर्ण होकर वर्ष २००९ में संविदा कर्मी के रूप में म.प्र. शासन के स्वास्थ्य विभाग में नियुक्त हुआ तथा वर्ष २०११ में उसका विवाह हुआ। शेष सुपुत्र-सुपुत्री तो उससे छोटे थे। २० वर्ष का दीर्घकाल समाज सेवा के क्षेत्र में पूर्ण होने जा रहा है। इस

दीर्घकाल की अवधि में कोई भी नहीं कह सकता कि मैंने सामाजिक कार्यों अथवा निजी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किसी के सामने हाथ फैलाए हो।

लोग जीवन में धन-सम्पदा के पीछे भागते रहते हैं। शूद्र स्वार्थों के लिए सम्बन्धों को तिलांजलि दे देते हैं। **मैंने तुच्छ धन-सम्पदा से नाता तोड़कर सम्बन्ध बनाए हैं। प्रेम तथा सम्मान पाया है।** लगभग १५ एकड़ कृषि भूमि तथा ५० कमरों का विशाल भवन समाज सेवा की बलिवेदी पर आहूत किया है। परम पिता परमात्मा की असीम तथा महती कृपा से मानस में ऐसा परिवर्तन हुआ है कि मुझे तथा मेरे किसी भी परिवार जन को कोई आवश्यकता तथा कमी अनुभूत होती ही नहीं। समय पर जो जैसा मिल गया खा लिया, पहन लिया। हम तो परम पिता का कोटिश: धन्यवाद करते हैं कि लोग बाग आपाधापी में ही जीवन खो देते हैं। नो तो ठीक से जीवन जी पाते हैं, न सम्बन्धों को निभा पाते हैं। सम्बन्ध धन-सम्पदा से नहीं, व्यवहार से निभाए जाते हैं। **हैं तो अल्पज्ञ-अल्प शक्तिमान किन्तु संतुष्ट हैं कि अन्यों को देखते हुए परम पिता परमात्मा की मुझ पर व मेरे परिवार पर महती कृपा है।** बात समारोहों को करने की है, **समारोह करने को तो मन ऐसा मचलता है कि बस नहीं चलता अन्यथा प्रतिदिन ही समारोह करूँ। अन्त:स्थल में हरदम एक हूक सी उठती है कि अधिक से अधिक जन सामान्य तक वेद ज्ञान का प्रकाश पहुँचे, विद्वानों के प्रवचनों-उपदेशों का लाभ अधिक से अधिक वे चाहे मुझसे अपरिचित ही क्यों न हों, उन तक पहुँचे। समारोह करने में मेरी कोई व्यक्तिगत लोकेषणा नहीं, विवाह समारोह हो या अन्य कोई आयोजन, मेरा पूर्ण प्रयास रहता है कि पाश्चात्य, दूषित, फूहड़ कुदर्शनों से परे हटकर हम कैसे मानव मात्र की सर्वोत्कृष्ट वैदिक संस्कृति को जी पाएँ, उसे अपने जीवन का अंग बना पाएँ, भावी पीढ़ी को उससे जोड़ पाएँ। इसी सन्देश को अधिक से अधिक जन तक पहुँचाकर समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों-रूढ़ियों, अज्ञानता का नाश कर वास्तविक समाज सुधार की दिशा में एक कदम बढ़ाने का प्रयास ही मेरे द्वारा आयोजित समारोह है।**

यह सच है कि मेरी आर्थिक स्थिति अनुकूल नहीं है किन्तु सुपुत्री के विवाह का विषय है। बार-बार तो होगा नहीं और उसे माध्यम बनाकर समाज को एक दिशा केवल उपदेशात्मक न होकर क्रियात्मक रूप में भी दे पाऊँ, यही प्रयास था और इसे लेकर भी विपरीत परिस्थितियों में भी एक उदाहरण प्रस्तुत किया गया। रही भानजी की बात, मेरी तीन बहनों में से मात्र एक जीवित है। हम दोनों भाई-बहन के अतिरिक्त परिवार में मेरी तथा मेरी तीन बहनों की सन्तानें हैं। बहन प्रमिला के पतिदेव का भी निधन हो चुका है। उसकी तीन सुपुत्रियों का विवाह पहले हो चुका है। सुपुत्र कोई नहीं है। पहले भी सुपुत्रियों का विवाह मेरे बच्चों के विवाह के साथ करने का प्रस्ताव मेरे द्वारा दिया गया किन्तु पारिवारिक परिस्थितियों के कारण दो भानजियों के विवाह में उपस्थिति भी नहीं दे पाया। अन्तिम छोटी भानजी स्तुति का विवाह भी बिटिया भाग्यश्री के साथ करने का मानस बन गया। वर पक्ष भी शामगढ़ बारात लाने पर सहमत था किन्तु यह सम्भव नहीं हो सका।

सम्भवत: परम पिता परमात्मा मुझे वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार निमित्त बार-बार अवसर प्रदान करता है, यह परम पिता परमात्मा की महती कृपा है।

भानजी स्तुति के विवाह तिथि सम्बन्धी निर्धारण वर पक्ष तथा बहन प्रमिला के परिवारजनों ने कर दिनांक १८ मई को ब्यावर में निश्चित कर लिया। **स्तुति के दादा श्वसुर श्री किशनलालजी जांगिड तथा दादी सास श्रीमती कल्पनाजी जांगिड दैनिक अग्निहोत्री होकर आर्य समाज ब्यावर से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।** श्री किशनलालजी अपने सुपुत्र श्री राकेशजी शर्मा उनकी धर्मपत्नी तथा ज्येष्ठ सुपौत्र रोहित के श्वसुर श्री भँवरलालजी देपड़ा शामगढ़ सुपुत्री के विवाह में पधारे थे। श्री किशनलालजी ने चलभाष पर अनुरोध किया कि पं. विष्णुमित्रजी तथा सुश्री अंजलि आर्या को विवाह संस्कार हेतु बुलवाया जाए और शामगढ़ में किया वैसा ही आयोजन किया जाए। उपरोक्त विद्वानों के पास समय अभाव से अन्य विद्वानों को आमन्त्रित किया गया तथा वेदोक्त आयोजन होने से मार्च माह की पत्रिका में प्रकाशित किया गया।

बहन प्रमिला के ससुराल पक्ष में व्याप्त पौराणिकता तथा श्री किशनलालजी के सुपुत्र-पुत्रवधू और सुपौत्रों की वैदिक सिद्धान्तों के प्रति अनभिज्ञता को दृष्टिगत रखकर हम छ: सदस्य जब ब्यावर कार्यक्रम निर्धारण तथा व्यवस्था आदि के लिए गए थे तथा दोनों पक्षों के सदस्यों की उपस्थिति में मेरे द्वारा स्पष्ट कर दिया गया था कि मैं अपनी ओर से आयोजन आप पर थोपना नहीं चाहता। आप स्वतन्त्र हैं जैसा चाहें वैसा करें। भानजी के विवाह के नाते जो मेरा दायित्व है उसका निर्वहन मैं प्रत्येक स्थिति में करूँगा। तब वर के दादा-दादी, माता-पिता, फूफा आदि ने सहर्ष कहा कि जैसा आपने कार्यक्रम निर्धारण किया है, आयोजन वैसा ही होगा।

किन्तु इस आयोजन ने मुझे यह ज्ञान करवाया कि वैदिक विचारधारा के अनुरूप अपने को कोई आयोजन करना हो तो स्वतन्त्र रूप से अपने स्थान पर ही करना चाहिये, अन्यत्र स्थान पर अन्यों के नियन्त्रण में नहीं। इस प्रकार के प्रथम आयोजन का अनुभव इस प्रकार रहा जैसे मैंने मच्छी बाजार में जाकर वहाँ मेंढकों को तराजू में तोलने का प्रयास किया हो।

विश्वगुरु के सिरमौर पद से पददलित इस तथाकथित हिन्दू जाति की दुर्दशा इतनी बुरी हो चुकी है कि कोई इसे सुधारने का प्रयास करे तो यह उसकी ही दुर्दशा कर दे। हमारा-तुम्हारा सम्मान तो दूर की बात, जब पुत्र-पुत्रवधू, सुपौत्र अपने घर के बड़े बुजुर्गों की भावनाओं, सिद्धान्तों, मान-सम्मान का ही ध्यान नहीं रखे, आर्य समाज के सिद्धान्तों पर जीवन जीने वालों के निवास में पौराणिक प्रचलित पाखण्ड अनुसार गणेश स्थापना की जाए, इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है?

जब सब बैठकर वार्ता कर रहे थे तो वर की माता की महिला संगीत, जिसे संस्कृति विहीन, मर्यादा विरुद्ध नंगा नाच कहा जाए तो अधिक उपयुक्त होगा, की भावना देखकर मैंने उन्हें व्यवस्था दे दी कि आप विवाह स्थल के ऊपर छत पर प्रवचन सत्र और सायंकालीन भोजन के मध्य ४ से ६ बजे तक कर लेना। मेरी इस सदाशयता का लाभ वर तथा वर के माता-पिता और उनके चेले-चपाटियों ने यह उठाया कि अपने द्वारा प्रकाशित निमन्त्रण पत्रिका में जान-बूझकर वैदिक भजन-संध्या के समय पर आशीर्वाद समारोह का कार्यक्रम रख दिया। परिणाम यह हुआ कि संसार भर की भीड़ इस निर्लज्ज फैशन प्रतियोगिता के लिए आ गई। अतिथियों को भोजन ठीक से किसी को मिला किसी को नहीं मिला, भजन-उपदेश की आवश्यकता नगण्य लोगों को थी। वर पक्ष के दादा-दादी को छोड़कर कोई इक्का-दुक्का सदस्य ही उपस्थित था। दादाजी के मना करने के उपरान्त भी भजन संध्या के साथ-साथ ऊपर छत पर नंगा नाच चलता रहा। वाग्दान संस्कार हो अथवा विवाह संस्कार, समयबद्धता के प्रति वर-वधू दोनों गम्भीर नहीं थे जबकि इस विषय में मेरे द्वारा प्रारम्भ में स्पष्ट कर दिया गया था। जो विवाह संस्कार प्रात: ८ बजे प्रारम्भ होना था वह १० बजे के पश्चात् प्रारम्भ हुआ। परिणाम स्वरूप १ बजे सम्पन्न हुआ। इस कारण जो भोजन ग्यारह बजे प्रारम्भ होना था वह १ बजे प्रारम्भ हुआ जिस कारण भीड़, ऊपर से लोगों को विश्वास नहीं कि हमें बाद में भी भोजन मिल जाएगा, जैसा कि इस तथाकथित

हिन्दू जाति का स्वभाव बन चुका है।

ऐसा ही कुछ हाल प्रवचन सत्र का भी रहा। ज्ञान के शत्रु की मानसिकता वाले लोग विशेषकर महिलाओं ने पूर्ण रूप से शर्मोहया त्याग दी थी। उन्हें तनिक भी विचार नहीं कि ये विद्वान कौन हैं? कहाँ से आए हैं? क्या कहना चाह रहे हैं? उन्हें तो अपनी कचर-बचर से ही फुरसत नहीं। **जिन वर-वधू तथा भावी पीढ़ी के जीवन निर्माण की भावना को लेकर यह सम्पूर्ण आयोजन किया गया था, वे ही धीर-गम्भीर नहीं थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उनकी दृष्टि में हम मूर्ख थे और जो विद्वान पधारे थे वे उनकी दृष्टि में सड़क पर घूमते-फिरते फालतू लोग थे जिन्हें हमने पकड़कर लाकर मंच पर बैठा दिया हो।** इस विलक्षण आयोजन का लाभ लेने और गरिमा प्रदान करने दूर-दूर से पधारे गणमान्य महानुभावों के विषय में भी सम्भवत: वर तथा वर पक्ष के अधिकांश लोगों की भी हो सकता है यही मानसिकता हो। ऋषि दयानन्दजी सरस्वती ने ठीक ही कहा है- **जो मनुष्य अपनी मनुष्यता का उपयोग नहीं करता वह पशुओं का बड़ा भाई है। पशुओं का बड़ा भाई अर्थात् 'गधा'। यह भी कहा है- भारवाहक पशु (गधा) के ऊपर चन्दन ढोओ अथवा मिट्टी, उससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे तो भार ही ढोना है। वह चन्दन के महत्व को क्या जाने?** सज्जनों को उचित है विपरीत परिस्थितियों में भी तीन शब्दों **'कोई बात नहीं'** से विमुख न हो। अत: हम भी इसी का आश्रय लेकर कहते हैं कोई बात नहीं, **हमने तो अपने धर्म का पालन किया, जो कर सकते थे किया, अधिक नहीं तो कुछ महानुभावों ने तो लाभ प्राप्त किया ही जिन्होंने नहीं किया वे अपने कर्मों का फल भोगेंगे निश्चित रूप से आज नहीं तो कल।**

दिनांक १९ मई को ब्रह्म मुहूर्त में उठकर शौचादि से निवृत्त हो बाड़ी से प्रस्थान किया। स्नान, संध्या, देवयज्ञ हेतु रास्ते में धर्मपत्नी के साथ चिन्तन चलता रहा कि सागरमलजी जावदा वालों के यहाँ रुकें, श्री रतनलालजी राजौरा, निम्बाहेड़ा के यहाँ रुकें, आर्य समाज निम्बाहेड़ा में रुकें, श्री कन्हैयालालजी शर्मा, नीमच के यहाँ रुकें, आर्य समाज नीमच रुकें, आर्य समाज पिपलिया मण्डी रुकें। अन्तत: निर्णय हुआ कि श्री बंशीलालजी विश्वकर्मा, पिपलिया मण्डी के यहाँ रुकें। चित्तौड़ से आपको सम्पर्क कर सूचित कर दिया कि हम आ रहे हैं। आपने प्रसन्नता व्यक्त की। प्रात: ९ बजे आपके आवास पर पहुँचे। अवकाश दिवस होने से आपके सुपुत्र श्री देवेन्द्रजी, पुत्रवधू श्रीमती कविताजी दोहिते चि. वैभव तथा दोहिती कु. अंकिता सभी घर पर मिल गए। स्नानादि से निवृत्त हो सभी के साथ संध्या तथा वृहद देवयज्ञ किया तथा पंच महायज्ञों के विषय में विस्तारपूर्वक लगभग ढाई घण्टा प्रकाश डाला। आप सभी ने निष्ठापूर्वक गम्भीरता के साथ हृदयंगम् किया। भोजन ग्रहण करने के पश्चात् दोपहर १.३० पर इन्दौर के लिए प्रस्थान किया।

५.२५ मिनिट पर सरस्वती शिशु मन्दिर, तिलक नगर, इन्दौर निर्धारित मतदान केन्द्र पर सीधे पहुँचकर धर्मपत्नी और मैंने दोनों ने लोकतन्त्र के महायज्ञ में अपने मत (वोट) रूपी आहूति प्रदान कर घर आए। विवाह आदि प्रसंगों को लेकर सुपुत्र नितिन से वार्ता हुई। वह कुछ अप्रसन्न था। स्वाभाविक है युवा है, उपेक्षा-अवहेलना अव्यवस्था से सभी उत्तेजित हो जाते हैं। आयोजन बातों से थोड़े ही होते हैं। धन के साथ-साथ अत्यधिक परिश्रम भी व्यय होता है। उसे समझाया हम उतना ही कर सकते हैं जितना हमारे हाथ में है। अन्य को अपनी इच्छा में चलाना सम्भव नहीं होता है। **जब परमात्मा ने सभी को कर्म के लिए स्वतन्त्र रखा है तो हम कौन होते हैं अन्यों का अपने नियन्त्रण में रखने वाले?**

दिनांक २० मई को डाक से भेजे जाने वाले साहित्य की प्रेषण व्यवस्था की तथा आज से पुन: शाम ६ बजे से सुबह ८ बजे तक अनुकूल परिस्थितियों में मौन व्रत का प्रारम्भ किया।

दिनांक २१ से २५ मई तक लेखन आदि कार्यों के साथ मई माह के अंक को सामान्य डाक से प्रेषित किये जाने सम्बन्धी कार्य किया। दिनांक २५ को डाक से पत्रिका प्रेषण के पश्चात् आर्य समाज मल्हारगंज, इन्दौर पर आयोजित दो दिवसीय सम्भागीय कार्यशाला में भाग लिया। डॉ. सोमदेवजी शास्त्री, श्री वेद प्रकाशजी शर्मा, सेवानिवृत्त आईजी, भोपाल, श्री प्रकाशजी आर्य, महामन्त्री : मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, आचार्य चन्द्रमणिजी याज्ञिक, श्री यादवेन्द्रजी शास्त्री, मथुरा, श्री हरिशजी शर्मा, इन्दौर के भजन-प्रवचन का लाभ प्राप्त किया। इन्दौर सम्भाग के विभिन्न स्थानों से पधारे आर्य समाजों के पदाधिकारियों, सदस्यों से भेंटवार्ता हुई।

दिनांक २६ मई को प्रात:कालीन यज्ञ आर्य समाज मल्हारगंज के साप्ताहिक सत्संग में सपत्नीक यजमान बनकर आहूतियाँ प्रदान की। आयोजन के समापन पश्चात् सायंकाल ६ बजे भानजी स्तुति, जिसे सुपुत्र नितिन उसकी ससुराल से प्रथम बार ले आया था, को उसकी माँ के पास छोड़ने हेतु सेन्धवा प्रस्थान किया। भानजी को बहन के पास छोंड़ने के बाद मित्र विश्वेश्वर शर्मा के यहाँ शयन किया। दिनांक २७ मई को प्रात: ४ बजे उठकर नित्य कर्म से निवृत्त हो संध्योपासना पश्चात् चार्टर्ड बस से प्रात: ६ बजे इन्दौर के लिए प्रस्थान किया।

दिनांक २७ से २९ तक रजिस्ट्री पार्सल पैकेट से भेजी जाने वाली पत्रिकाओं के पैकेट बनाए तथा प्रतिदिन प्रेषण कार्य किया।

दिनांक २९ को सायंकाल वेद प्रचार वाहन से मौलाना (विक्रम नगर) जनपद उज्जैन के लिए प्रस्थान किया जहाँ पर सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से दिनांक २८ से ३० मई तक वैदिक सत्संग का आयोजन आयोजित था।

दिनांक ३० मई को रात्रि १०.३० बजे आयोजन का समापन हुआ। साहित्य आदि एकत्रित करते हुए रात्रि के दो बज गए, शयन किया। दिनांक ३० को प्रभात आयुर्वेदिक फार्मेसी के स्वामी श्री प्रेमनारायण जी पाटीदार भी पधार गए थे। आप भी साथ ही थे। प्रात:काल ४ बजे जागकर नित्यकर्म से निवृत्त हो इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। पाटीदारजी को उज्जैन बस स्थानक पर छोड़ा तथा इन्दौर पहुँचकर सम्पूर्ण दिवस विश्राम किया। ■

श्री दुबेजी को मातृशोक

वैदिक संसार परिवार के अभिन्न सदस्य

श्री रामचन्द्रजी दुबे, सेवानिवृत्त कर्मचारी, जिला न्यायालय इन्दौर एवं सहसचिव : कान्यकुब्ज ब्राह्मण सभा, इन्दौर की जन्मदायिनी माता **श्रीमती कमलाबाई दुबे** धर्मपत्नी स्व. श्री रामलालजी दुबे, निवासी : सुखलिया, इन्दौर (म.प्र.) का देहावसान दिनांक २१.०५.२०१९ को ९० वर्ष की आयु में हो गया। आप सादगी, सरलता, मिलनसारिता की प्रतिमूर्ति होकर आध्यात्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। आप अपने पीछे दो सुपुत्र श्री रामचन्द्रजी दुबे तथा श्री कैलाशचन्द्रजी दुबे का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। परिवारजनों की ओर से वैदिक संसार के प्रकाशन कार्य में २५१ रुपये का सात्विक दान प्रदान किया गया। **वैदिक संसार परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।**

माता पुष्पादेवी शर्मा की छठी पुण्यतिथि पर ग्राम बसई में भव्य वैदिक सत्संग समारोह सम्पन्न

स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती प्रवचन करते हुए

सुश्री अंजलि आर्या भजनोपदेश करते हुए।

शर्मा परिवार के सदस्य देवयज्ञ में आहुति देते हुए।

श्री ओमप्रकाशजी शर्मा के साथ आपके सुपुत्र-पुत्रवधुएँ एवं सुपुत्री श्रीमती मधु शर्मा।

शर्मा परिवार के सदस्यगण उपस्थित महानुभावों के साथ।

ब्यावर (राज.) में वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार को समर्पित पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न

'आदर्श वैदिक परिवार' पुस्तक का विमोचन.आचार्य सोमदेवजी आर्य के करकमलों द्वारा भामाशाह श्री नेमीचन्दजी शर्मा तथा गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में।

नवदम्पति को शुभाशीष प्रदान करते गीता स्वाध्याय पत्रिका के सम्पादक डॉ.श्रीलालजी, वरिष्ठ समाजसेवी श्री आसारामजी शर्मा एवं श्री नन्दलालजी जांगिड

श्री विश्वकर्मा जांगिड ब्राह्मण समाज समिति, ब्यावर के पदाधिकारियों द्वारा वैदिक विद्वानों का सम्मान किया गया। सम्मान पश्चात विद्वानों के साथ सामूहिक चित्र।

मामा श्री सुखदेव शर्मा एवं धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा द्वारा भानजी सौ.कां. स्तुति एवं वर चि. अक्षय कुमार को शुभाशीष प्रदान करते हुए।

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ • सम्पादक : गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१८-२०

जलगाँव, महाराष्ट्र निवासी रड़े दम्पति द्वारा गुरुकुल केहलारी के ब्रह्मचारी सन्तोष ब्यावरे, लातूर को दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार किया गया।

आर्य परिवार डायरेक्ट्री, कोटा (राज.) का विमोचन करते श्रीमती रेखा गुप्ता, साथ में श्री शिवनारायण उपाध्याय, राजेन्द्र मुनि तथा अन्य।

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

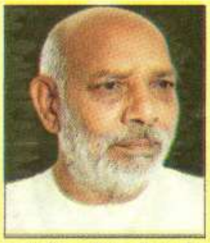

ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

श्री नेमीचन्द जी शर्मा
भामाशाह-राज सरकार
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला
बरनेला चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

श्री रामफलसिंह जी आर्य
प्रा. वरिष्ठ उपप्रधान
सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश)

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री-आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

श्री नरेश जी जांगिड
वरिष्ठ समाजसेवी
जोधपुर (राजस्थान)

आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

श्री विनोद जी जायसवाल
वरिष्ठ समाजसेवी
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री सुनील जी शर्मा
जा.ब्रा. प्रदेशाध्यक्ष
पौण्डा (गोवा)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धुलिया (महाराष्ट्र)

श्री गजानन्द जी जांगिड
जा. ब्रा. जिलाध्यक्ष
जालना (महाराष्ट्र)

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
योग प्रशिक्षिका
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
प्रधान सार्वदेशिक सभा
अहमदाबाद (गुजरात)

आचार्य सोमदेवजी आर्य
वैदिक धर्मोपदेशक
गुरुकुल, मलारना चौड़

सुश्री अंजलि जी आर्या
वैदिक भजनोपदेशिका
घरोंडा (हरियाणा)

श्री अर्जुन जी झलोया
वरिष्ठ समाजसेवी
मन्दसौर (म.प्र.)

श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
आगरा (उ.प्र.)

श्री महेन्द्र जी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

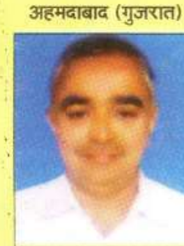

श्री चैतन्य जी रड़े
वरिष्ठ समाजसेवी
भुसावल (महाराष्ट्र)

श्री सांवरमल जी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
वास्को डीगामा, गोवा

श्री अनिल जी शर्मा
युवा समाज चिन्तक
इन्दौर (म.प्र.)

आ.सर्वेशजी सिद्धान्ताचार्य
वैदिक शिक्षाविद्
गुरुकुल केहलारी (म.प्र.)

श्री गोविन्दराम जी आर्य
वैदिक धर्म प्रचारक
देपालपुर (इन्दौर)

श्री मोहनलाल जी दशोरा
चिन्तनशील साहित्यकार
नारायणगढ़ (म.प्र.)

श्री बंशीलाल जी आर्य
आर्य नेता
बरखेड़ापन्थ (म.प्र.)

श्री ज्ञानकुमार जी आर्य
वैदिक मनीषी
लातूर (महाराष्ट्र)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित